कल्पभाष्य

अर्थात्

भाषा कल्पसूत्र

———ooo———

श्रील श्रीयुत राजाडालचन्दजी की आज्ञानुसार
कवि रायचन्द ने बनाया उनके प्रपौत्र
राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द

की आज्ञानुसार छापा गया॥

———ooo———

"धर्म्मंकुरु धर्म्मंकुरु धर्म्मंकुरु प्रपूरय धर्म्म शंखम् प्रसारय धर्म्म ध्वजाम् प्रताडय धर्म्म दुन्दुभिम्"॥

"घड़ी न लब्भै अगली। इंदह अरकै बीर॥ इम जाणी जिउ धर्म्म करि। जां लग वहइ सरीर,,॥

———

KALPASÚTRA
Translated into Bháshá by Kavi Raychand under the patronage
OF RÁJÁ DÁLCHAND.
Printed and published for his great grandson
RÁJÁ SIVAPRASÁD. C. S I.

——:o:——

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने में छपा
दिसम्बरसन् १८८८ ईस्वी

जिसको चाहिये लखनऊ लिखकर मुंशीनवलकिशोर से मंगाले॥

कुछ बयान अपने ख़ानदान का और

कारण इस ग्रंथ के छपने का ॥



पुराने कागज़ों से मालूम होता है कि जयपुर की अमलदारी में रणथंभीर के बीच जो एक बड़ा मशहूर क़िला है संवत् १०४५ के दर्मियान परमार वंशी शाखेश्वरी श्रेष्ठि धांधल हुआ। उसके कोई लड़का न था जैन धर्म पालक पूज्य श्रीजय प्रभु सूरिगुरु के प्रतिबोध से अछुप्ता देवी की आराधना की देवी ने स्वप्न में वरदिया देवीके हस्तपुट में पत्र पुष्प और गोखरू था इसी से जब लड़का हुआ उसका नाम गोखरू रक्खा और उसी से गोखरूगोत्र चला। सम्वत् १०९१ में देहरा बनाया जयप्रभु सूरिने प्रतिष्ठा कराई श्रीशेत्रुञ्जय का संघ निकाला। उस का लड़का धर्मंग उसका कर्मंग उसका पुहपा उसका भग्गा उसका अक्का उसका तोला उसका मेहका उसकाहीरा उसका मेघा उसका भाणा। जबसंवत् १३३५ में सुलतानअलाउद्दीन ख़िलजी ने रणथंभौर का क़िला तोड़ा भाणा अपने लड़के नायक समेत बादशाह के साथ चंपानेरचला आया। नायकका बेटा खीमा उसका जयवन्त उसका वीरा उसका गोरा संवत् १४८५में अहमदाबाद में आ बसा उसका बेटा अभयड़ उसका बासा उसका वस्ता उसका बहला उसका शिवसी उसका कर्मसी उसका रांका उसका श्रीवन्त उसका पद्मसी। सम्वत् १४८४ में पद्मसी साह खंभात मे आबसा। वहां उसने श्री कल्याणसागर सूरि से श्रीपार्श्व-नाथ स्वामी का स्फटिकमयबिम्ब प्रतिष्ठित कराया पांच सोने की कल्प सूत्र और चार मोतीके पूटे भेट किये श्रीशेत्रुञ्जय का संघ निकालापुस्तक भंडारभरा। उसके दो बेटे थे श्रीपति और अमरदत्त। अमरदत्त ने शाह जहांबादशाह को एक ऐसा हीरा नज़र दिया कि बाद शाह ने प्रसन्न होकर राइ की पदवी बख्शी और दिल्ली ले गया। उसके दो लड़के हुएराइउदयचन्द औरकेसरी सिंह। राइउदय चन्दके चार लड़के राइजगत् मित्रसेन सभाचन्द फ़तहचन्द औरराय सिंह। फ़तहचन्दने क़हतसाली मे ग़ल्लासस्ता करनेकेकारण मुहम्मदशाह से जगतसेठ की पदवी पाई लेकिन अपनीबहूबेटेसमेत मुर्शिदाबाद में अपने मामू सेठमाणिकचन्द नागौर वाले हीरानन्दसाहके बेटे की गोदजाबैठे। हीरानन्द साहकी बेटी धनबाई राइ उदय चन्दको व्याही थी। राइसभाचन्दके राइअमरचंद औरराइअमर चंदकेराइमुहकम सिंह और राजा डालचन्द। नादिरशाही में घरके दो आदमी क़तल होनेके कारण राइ मुहकमसिंह और राजा डालचन्द दिल्लीछोड़कर मुर्शिदाबाद आबसे। निदान

वरन् हेस्टिंग्ज़ की रिफ़ाक़त के बाइस नाहक़ मारे जाते थे इसी डर उनको ढूंढ़ के भेजकर चुपचाप बुलवा लिया और अपने मकान में छुपा रक्खा देखें शहर में कौन किस के साथ दोस्ती निभाता है और साहस करके अपनी जान जोखों में डालता है। उनके बेटे राजा उत्तमचन्द ने जिन्होंने लखनऊ वाले राजा बछराज की बेटी व्याही थी पुत्र ही न होने के कारण अपनी बहिन बीबी रत्न कुंअर के बेटे बाबू गोपी चन्द को गोद लिया और उन्हीं के बेटे राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने अपने दोनों पुत्र कुंवर सच्चितप्रसाद और कुंवर आनन्द प्रसाद की बहुएं और अपनी बहिन बीबी गोविन्द कुंवर के ख़ातिर जो जैनधर्म की निरन्तर अवलम्बी हैं इस ग्रन्थ को कि जबसे राजा डालचन्द ने भाषा में बनवाया था एकही प्रति घर में रहा था उद्धार करके अर्थात् छपवाके अमर किया जो पढ़ें सुनें दया करके असीस दें कि धर्म में रति रहे परलोक सुधरे और कुबुद्धि कभी पास न फटकने पावे शुभंभूयात् ॥

इति

—0⊂0—

श्रीवीतरागायनमः॥

अथ कल्पभाष्य लिख्यते॥



चौपाई॥

जै जै जैन धर्म्म हितकारी। संघचतुर्विधिजिहिअधिकारी॥
साध्वी साधु श्राविका श्रावक। यहीचतुर्विधि संघ प्रभावक॥
नराकार सो धर्म बखाना। जाके बारह अंग प्रधाना॥
वदन पंच प्रानल है हाथा। बुधिचित आतमह्वैपदसाथा॥

दो० रत्नत्रय जासौं कहैं। ज्ञान दरस चारित्र॥
धर्म भूप नररूप कौं। कहिये वदन पवित्र॥
हिंसा मिथ्यावाद अरु। चोरी मैथुन बाध॥
औरपरिग्रह कौ तजन। पंच महाव्रत साध॥
ये कहिये ता पुरुषके। पांचौ प्राण प्रमान॥
दान सील तप भावना। दोनौं हाथ बखान॥
दान दया तीजौदमन। ये जे तीन दकार॥
बुद्धि चित्त आतम लहौ। ता नर कौ आधार॥
विनयविवेकविचारजुत। अरु निश्चयविवहार॥
येई ता नर धरम के। दरनदरन सुखसार॥
धर्मसिरोमनिशुभसमय। पर्व पजूसन जान॥
ताकीनिति विस्तारसौं। भाखौं सुनौं सुजान॥
चारिमास चौमास के। दिवस एकसौ बीस॥
उत्तम मध्यम सत्तरह। अधमपचास दुबीस॥
अधिक मासजो होयतौ। ताकी गिनती नाहिं॥
आसाढ़ी पून्यो हितें। दिनगिनगिनतीमाहिं॥

[illegible] रहित । सड़ मी विनुहोय ॥
[illegible] जीव न उपजै । निर्जन थंडिल सोय ॥
[illegible] भिक्षजहं । भिक्षा सुलभा होय ॥
[illegible] औखद सुलभ । जहां पाइये सोय ॥
गृहपतिसघनसनन्नजहं । सुजन समागमजान ॥
स्वाध्यायगोरस सुलभ । और रहित अपमान ॥
ऐसे तेरह गुन सहित । औगुन रहितसुदेस ॥
भूमि पाय सुख वासहवै । वसै साध धर्मेस ॥
भादोंअसित तिरोदसी । आदि आठदिनजोय ॥
सुदी पंचमी अंत दिन । पर्व पजूसन सोय ॥
इनआठों दिन में जती । जिनजनसनमुखहोय ॥
कल्पसूत्र को अर्थ सव । वरनि वखानै सोय ॥
आठदिवसविस्तारकरि । येई अरथ निदान ॥
सभदानिहाससमेतअरु । सह दृष्टांत वखान ॥
आठ दिना में पंच कृत । करें करावें संत ॥
[illegible] चतुर्विधि संघ के । परंपरा को तंत ॥
[illegible] नामकरि । दानसील तप भाव ॥
[illegible] तपआचरनकरि । यथाशक्ति चितचाव ॥
[illegible] दिनके अंत में । कल्प सूत्र सिद्धांत ॥
[illegible] सहित । हितकरिसुनैनितांत ॥
[illegible] पडिकमनकरि । आपुसमें सव लोक ॥
[illegible] खिमावें परसपर । वरसदोप तजिसोक ॥
[illegible] काल में । नाग केत इतिहास ॥
[illegible] जिनलह्यो । अचलपरम पदवास ॥

अथ नागकेत कथा ॥

चौपाई ॥

[illegible]कांति नगरी इक राजै । विजयसेनजहंनृपति विराजै ॥

शांत दांत श्रीकांत सेठ जहं । धर्मसील गुनवंत वसे तहं ॥
जाकी सुभश्री सखी सिठानी । गुन वय रूप सीलमनमानी ॥
ताके गर्भ अर्भ इक भयो । पूरव पुन्य आय फल दयो ॥
आनद मुदमय सेठ सिठानी । पर्व पजूसन नियरौ जानी ॥
आपुस मैं मिलि भाखन लागे । पूरब पुन्य जगत के जागे ॥
हमहूं अब अष्टम तप धारैं । जनममरन कौ दुखनिरवारैं ॥
यहधुनिसुनिशिशुहूंचितधारयो ।जातिस्मरितपकरनविचारयो ॥
पर्व पजूसन दिन आयो जब । सेठ सिठानी व्रत कीनो तब ॥
तज्यो मायकौ पय वालकहूं । लखिदुखपायोपितुपालकहूं ॥
सिसुमृदुतनतपताप न सहिकैं । मुरछिपरयोधरनीपर गिरिकैं ॥
सेठ विकल ह्वै वैद बुलायो । चेत्यो नहिं उपचार करायो ॥
तब निरास ह्वै वालहिछाड्यो । पितादुखित ह्वै मरनौमाड्यो ॥
सोनिपुत्र घर भयो जानिनृप । अर्थ लैनकौ छांडि दई कृप ॥
क्रूर दूत धन लैन पठाये । ते सब सेठ द्वार पर आये ॥
सिसु तपवल इन्द्रासनचाल्यो । अवधिज्ञान तबइन्द्रसभाल्यो ॥
सिसु पूरवभव की सब जानी । सभा प्रमुखसों सबै वखानी ॥
वनिक पुत्र हो यह पूरव भव । अपर मात के दुःख दह्योदव ॥
सोदुखतिन निजमित्रसुहृदसौं । कह्योसह्योनहिंतिन भाखो यौं ॥
पूरव सुकृत न संचित तातैं । यह दुख लहत अपर मातातैं ॥
यहसुनितिनतपकरनविचारयो । अतिसुभ ध्यानहियेसैं धारयो ॥
पर्व पजूसन नियरैं आयो । ताकौंव्रत करिहौं मनभायो ॥
धारिध्यान नृप ग्रह में सोयो । द्वेप दृष्टि तिहि माता जोयो ॥
दीपक वारन के मिस आई । तादृन ग्रह में आगि लगाई ॥
सो जरि मरि श्रीकांत सेठ घर । पुत्र होय जनम्यौ सो नरवर ॥
यह कहिसुरपति निजजन प्रेरे । राजदूत तिन किये अनेरे ॥
सुरपति हूं नरपति ढिग आये । आय कही क्यों दूत पठाये ॥
राजनीति की नृप दै साखी । सुरपतिसौं यह भाखा भाखी ॥

[illegible] निर्धन बालक । ताकेबन को राजा मालक ॥
[illegible] कथा सुनाई । पूरब भवकी सब बतलाई ॥
[illegible] बालकहिं जिवायो । नागकेत तिहिनाम बतायो ॥
[illegible] निज धामसिधारे । नृप हूं अपने जन निरवारे ॥
[illegible] पितुकी सुतकीनो । धरमभरनविधिसिरधरिलीनो ॥
[illegible] चौदस व्रत प्रति मासा । पट व्रत चातुर मास निवासा ॥
पंच महा व्रत पालन लाग्यो । धर्म प्रभाव तासु जसजाग्यो ॥
इक दिन राजा इक जनमारचो । सिर कलंक चोरीको धारचो ॥
सो दुर्गति लहि व्यंतर भयो । अपनो वैर नृपति सौं लयो ॥
[illegible] अगोचर तिन निस चारी । लात एक राजा कौं मारी ॥
[illegible] वमन करिनृप भू गिरचो । सभासदनलखिअचरजकरचो ॥
[illegible] व्यंतर शिला संवारी । नगरमान लांबी विस्तारी ॥
[illegible] नभदिसि भाग्यो । नगर लोगपर पटकनलाग्यो ॥
[illegible] पर लीनी । तपवलतृरिफेंकितिहि दीनी ॥
[illegible] नृपहूं को कीनो । व्यंतरभाजि भयो बल हीनो ॥
[illegible] को लहिये । निश्चयकरितपकोपथगहिये ॥

दो० [illegible] पंचमी । अन्य मती हूं लोक ॥
[illegible] । जगमें होय असोक ॥
[illegible] । दिन पचासवां जोय ॥
[illegible] दिन । घटे नु घटनी होय ॥

[illegible] पंचमी कथा ॥

दो० [illegible] । पुन्यवती थल पाय ॥
[illegible] । पाय तात अरु माय ॥
[illegible] में । एक सुनी एक वेल ॥
[illegible] । गही आवकी गैल ॥
[illegible] । स्वच्छ बनाई खीर ॥
[illegible] । करिसरक्योधरिधीर ॥

सोनिहारि तिहिकूकरी। विपुलअनर्थविचारि ॥
दौरिजुठाई खीर सो। लखिद्विजदीनीमारि ॥
मारि तोरिताकी कमर। गोसाला मैं बांधि ॥
विप्रजिवाये प्रीतिकरि। खीर दूसरी रांधि ॥
ताही दिन तावैल कौं। तिहि द्विज तेली ऐन ॥
वहन हेत भाड़ै दयो। सबदिनतिहिदुखदैन ॥
मुख मैं छींका वांधिकै। फेरयो कोल्हू साथ ॥
सांझ भये आयोसदन। वदन मलीन अनाथ ॥
आपुसमैंमिलिवृषशुनो। निजनिजविथासुनाय ॥
कथासकलदुखकीकही। वेदन विपुल बलाय ॥
कटिटूटन की उनकही। सहन भूखइनप्यास ॥
लहि निरासता अन्नतें। दोऊ भये उदास ॥
सुन्योसकलसंवाद यह। ताद्विजने धरि कान ॥
जान आपने मातपितु। अतिपछताय निदान ॥
भोजनदै तिनदुहुंनकौं। ऋषिनपासद्विजजाय ॥
कह्योसकलवृत्तान्तजो। सुन्योसुअनसमुझाय ॥
अरुपूछीकरजोरिप्रभु। जेहिविधिकुगतिनसाय ॥
मातपितासदगतिलहैं। सो भाषिये उपाय ॥
सुनिवेदनरिषिगनसकल। अनुकंपे लखिदीन ॥
दयादीठ दृगभरि कहे। वचनसुधा रसलीन ॥
पूरवभवइनदुहुंनमिलि। कीनो केलि अकाल ॥
तातेपायो जनम इन। वृषभ शुनीकौ हाल ॥
अवभादौं सुदि पंचमी। ऋषिपंचमिजिहिनाम ॥
तादिनसयम सनेम ह्वै। व्रतकरि आठौ जाम ॥
अनखेड़ी हलकी धरा। तामैं अन्न जु होय ॥
आपहिं तें उपजै विपन। तादिन खैये सोय ॥
तातें इनकीकुगतिमिटि। संगतिलहिहैं जान ॥

मुनिद्विजत्योंहींकरिपितर । पठयेसुरगनिदान ॥
ऐसें या सुभ दिवस में । गौरोमति के लोक ॥
तपकरिजगत्रयतापहरि । मुक्तलहततजिसोक ॥
यातेंजे जिन धरमरत । साधु साधवी जोय ॥
हितकरिश्रावकश्राविका।व्रतकरिनिरमलहोय ॥
कल्पसूत्रको पाठअरु । अर्थसमझिसुनिकान ॥
मरम धरमकोपायपद । परम लहे निरवान ॥

दृष्टांत कथा ॥

दो० तृतियरसायनगुनसकल । कलपसूत्र त्योंजान ॥
ताहूको विस्तार सों । कहोंकथासुनिकान ॥
भयोलाखअभिलाखकरि । इकनृपकें सुतआय ॥
चही तासु आरोगता । नृप त्रय वैदबुलाय ॥
तिनमें तें इकवेद ने । निजऔषधगुनभाखि ॥
कह्यो मातरा एक में । हरों रोगयह साखि ॥
पैजरोग नर जो भखे । यहभेषजतिहिकाल ॥
नव्यसिव्यनेमोनरमकल । होय रोग में हाल ॥
सुनिराजा ना वेद कों । तुरत कियो बिदाय ॥
ऐसो सिद्ध जगावनो । भलो न यहहै राय ॥
वैद दूसरो पुनिकह्यो । निजऔषधगुनआय ॥
रोग हरे रोगीनु को । बिनरुजकछुनवसाय ॥
ताहूको कीनो बिदा । वृथासमझिनरराय ॥
भस्ममांहिहविहोमिवयो। करनोभसमसुभाय ॥
तबपूछ्योनृपनिज निकट । तीजोवैद बुलाय ॥
तिननिज औषधकोसुगुन । ऐसें दियो बताय ॥
रोग हरे आरोग कों । अधिकपुष्टकरिदेय ॥
रीझिनृपतिबहुधन दियो । वैदहिऔषध लेय ॥
जैसो औषधि तीसरी । कल्पसूत्रत्योंमानि ॥

पाप हरै दुखछय करै। पुन्य बढ़ावै जानि॥
तीरथ शत्रुञ्जय सकल। तीरथ मैं ज्यों सार॥
अभय दान ज्यों दान मैं। मंत्रन मैं नवकार॥
ब्रह्मचर्य ज्यों व्रतनमैं। विनयगुननके माहिं॥
नियमन मैं संतोष तप। छमा सरीखो नाहिं॥
तत्वन मैं सम्यक्त त्यों। पर्व्व पजूसन जान॥
चिन्तामणिसुरधेनुज्यों। धेनु रत्न मैं मान॥
सीतासतियनमाहिंअरु। गीताग्यानन माहिं॥
छायाधर तरुमांहि ज्यों। कल्पवृक्ष की छाहिं॥
त्योंहीं सब सिद्धांत मैं। कल्प सूत्र सिद्धांत॥
सब आगमके सारकौं। सार निहारि नितांत॥
महा वीर निरवानतें। छठैं पाठ सुख सार॥
भए बाहु स्वामी सुखद। चौदह पूरब धार॥
नवमैं पूरब माहिं तैं। कीनौं यह उद्धार॥
वरअठयों अध्यैन सुभ। दस श्रुतकंध मझार॥

अथ दस कल्प वर्णन॥

दो० कल्प अर्थ आचारहै। सो दसविधिकोजान॥
प्रथम अचैलउदेस द्व। सय्या तर त्रय मान॥
राजपिण्डकृतिकर्म्मव्रत। जेष्ट प्रति क्रम आठ॥
मास कल्प पर्जूशना। यहै कल्प दस पाठ॥
आदि अंत जिनसाधकों। दसों नियत ये कल्प॥
चारिनियतजिनमध्यकौं। छह अनियत वैकल्प॥
ते छह कहेअचेलअरु। प्रति क्रमन उद्देश॥
राज पिंड पर्जूसना। मासकल्प तजि शेश॥
शय्यातरव्रत आचरन। ज्येष्टत्व कृति कर्म्म॥
बाइस जिनके साधको। चारिनियत यह धर्म्म॥

अचेल ॥

दो० देव दूष्य पटइन्द्रजो । जिन कांधेधरि देय ॥
सो गिरि परे अचेलतव । वस्त्र रहितकहि तेय ॥
यातें जीरन चैल लहि । आदिअंतजिनसाध ॥
सेत वस्त्र लैं तनधरें । सोऊ साध अवाध ॥

अथ उद्देश का ॥

दो० साधु हेतु उद्देश करि । करै गृही आहार ॥
आदि अंत जिनसाधकों । उचितनसोनिरधार ॥
एकै साध विशेष हित । जो उद्देश अहार ॥
सो न लेय सव साधुलें । बाइस जिनविवहार ॥

अथ शय्या तर ॥

दो० जो श्रावक चौमासमैं । साधु रहनहितवास ॥
देय ताहि आगम कहै । शय्यातर परकाश ॥
ताशय्या तर सदनको । लेय न साधु अहार ॥
त्रिनियकल्पआचारयह । चौविसजिन विवहार ॥

अथ राज पिण्ड ॥

दो० नृप देशाधिप सदन कौं । लेय न साध अहार ॥
आदिअंतजिन साधकों । अतिअनुचितनिरधार ॥

अथ कृति कर्म ॥

दो० गुरु वंदनअरुपडिक्कमन । नित्य कर्म यहहोय ॥
गुरु लघुतासबसाधुकी । दिक्षा क्रमतें जोय ॥
करें परस्पर वंदना । गुरुकोंलघुसवसाध ॥
गुरुलघु साधईसाधवी । यह कृतकर्म अवाध ॥

अथ व्रत ॥

दो० पंच महाव्रत आचरन । आदि अंतजिनसाध ॥
मध्य जिने सरसाध के । चार भेद अवाध ॥
मानत मैथुनको सकल । ते परिग्रह के मांह ॥

चारें व्रतहीमें गिनत । ते मैथुन की छांह ॥

अथ ज्येष्ट ॥

दो० आदि अंत जिन नाथके । साध सदिक्षा होय ॥
मासखिमन करिपंचव्रत । पालैं जानौसोय ॥
मध्य जिनेसर साध सब । दीच्छाहीले फेर ॥
पंच महा वृत आचरैं । जैनागम विधिहेर ॥

अथ प्रतिक्रमण ॥

दो० आदिनाथ जिन वीरके । साधसांझ अरुभोर ॥
दुहूंकालपडिकमनकरि । ध्यावें आतम ओर ॥
मध्य जिने सरसाध कौं । जब कछु लागे दोष ॥
ताकौ संभव जानि कैं । करें पडिकमन पोप ॥

पर्य्यू शण ॥

दसवों पर्व पजूसना । प्रथम कह्योविस्तार ॥
कल्प सूत्र जामें पढ़ै । सुनै संकल सुख सार ॥
आदि अंत जिननाथके । साध यथा विधियाहि ॥
करैंतथाविधि आज लौं । साधआदरन ताहि ॥
आदि अंत जिननाथके । साध दोयविधिजान ॥
सरलमूढ़ अरुवक्र जड़ । होय सुभाव निदान ॥
बाकी जे बाईस जिन । तिन के साध सुछंद ॥
सरल प्रग्यतें होयसब । तिन कौं ज्ञानअमंद ॥

अथसरल मूढ़ दृष्टांत ॥

तहां प्रथम दृष्टांत सुनि । सरल मूढ़ कौं एह ॥
समझिन सरलसुभावतें । तिनकौं विनुसंदेह ॥
कौंकण देशी साध इक । काउसग्ग तपलीन ॥
गुरुपूछोतिहिविमल कौं । बोल्योसाध अधीन ॥
दया चिन्तवन करत हो । जबहौंगृहको बास ॥
सब कारज हौंकरत हो । अबतो भयोनिरास ॥

कृषिकरितवहां भरतहैं। सब कुटुम्बकोपेट ॥
[illegible] के जियत है। सोमन बड़ोखखेट ॥
गुरुतब बोले साधु सों। यहचिन्तौनअयोग ॥
ग्रही कर्म कौ चिन्तवन। साधु जनन कोरोग ॥
मिथ्या दुष्कृत दीजिये। कीजे शुभ परनाम ॥
[illegible] मानि तैसें कियो। पायो मन विश्राम ॥
सरल मूढ़ अरु वक्रजड़। दोउन कौ दृष्टान्त ॥
अब आगें विस्तारकरि। तिनकौभेदनितान्त ॥

अथ सरल मूढ़ जड़ वक्रदृष्टांत ॥

सरल मूढ़ जड़ वक्र द्वै। साधु गोचरी हेत ॥
गये विहरि फिरि राहमें। निरखिगयेनिजखेत ॥
गुरु पूछी जब विलम्ब की। कही-राह में आज ॥
नट नाटक देखत भयो। एतौ विलम्ब नाज ॥
[illegible] मर्यो साधु कों। जोगनलखि योनाथ ॥
[illegible] मुनि मन। [illegible]। हुवहु बोल्योसाथ ॥
[illegible] वक्र [illegible]। यहु सो गुरुकीचूक ॥
[illegible] नवयो। तुम नर्ज्यो करि कूक ॥
[illegible] मैं। ढका नरह्योलुभाय ॥
[illegible] जब लगी। नाचन अपनी राय ॥
सरल मूढ़ बोल्यो नहीं। सकुचि जोरि द्वै हाथ ॥
[illegible] कहत ते भई। कीजे नाथ सनाथ ॥
[illegible] बोल्यो वक्र जड़। अपनी जानत न चूक ॥
नट नाटक बरज्यो हमें। नटी कही कब कूक ॥

अथ जड़ वक्र दृष्टान्त ॥

मुनि केवल जड़ वक्रपर। चौरी इक संवाद ॥
[illegible] गुरु को सौंप द्वै। रह्यो याहिरखि याद ॥
जड़ कहे सो कीजिये। फेर न दीजे ज्वाब ॥

बोल्योसुतसुनि सनविकै । योंहीं करिहैं बोव ॥
घरतैं निकसत एक दिन । सुतसौं कह्यो सुनाय ॥
तात बंद करि राखियो । द्वार कपाट लगाय ॥
सुनि लगाय दीने तुरत । घरके द्वार किवार ॥
सोय रह्यो सुख सदन में । जब आयो पितुद्वार ॥
रह्योपुकारिपुकारि अति । गेरो फारि हियहार ॥
सुनी तदपि बोल्योन सुत । खोले नाहिं किवार ॥
तबसो पितु चढ़िभीतपर । बढ़ि कूद्यो घरमांह ॥
देख्यो लखि सुत क्रोध करि । छई दृगनमैं छांह ॥
सुत बोल्यो तुमही न तब । भाषी सन्मुख होय ॥
गुरु कौं ज्वाब न दीजिये । रिसवयोंकोजतजोय ॥
चौथे आरे मांहि जे । बाइस जिनके साथ ॥
सरल प्रज्ञते होत हैं । काल स्वभावकसाथ ॥
समझिकरैं सिगरीक्रिया । ज्ञानवंत ते होय ॥
जिनपवन्त वलव जसव । धीरज बले सोय ॥
रहैं दिगंबर विनय मैं । तन मैं नेक न नेह ॥
आतम सौं तनन्यैं रहैं । वहैं भार लौं देह ॥

ऋजु प्रज्ञ दृष्टान्त ॥

तिनहूं पै दृष्टान्त यह । नटनाटक कौ सांच ॥
गुरु मुखतैं जब उन सुनी । जोगन लखिवो नाच ॥
नटनाटकहू तिन तज्यो । नटी नाट्य हू फेर ॥
नाचसाज सब तजिदयो । गुरुपद सुमिरि सुहेर ॥
उत्तम मध्यम अधम ये । भाव काल वत एक ॥
सरल मूढ़ऋजुप्रज्ञयुत । तीजो है गड़ वक्र ॥

अथ ग्रन्थानुक्रमणी ॥

सो॰ प्रथम मंत्र नवकार । अर्थ सहित याग्रंथ मैं ॥
ता पाछै अधिकार । महावीर कल्यान कौ ॥

पुनि श्रीपारस नाथ । नेमनाथअधिकारअरु ॥
कीन्हें ग्रन्थ सनाथ । आदिनाथअधिकारकहि ॥
अन्तराल विस्तार । ता पाछें थविरावली ॥
कही जैन मत सार । साध समाचारी बहुर ॥
कल्प सूत्र सिद्धान्त । ताकी ह्यांलों पीठिका ॥
करन बखान नितान्त । अब निजग्रन्थारंभभनि ॥

इति पीठिका समाप्तः ॥

ॐ नमो रिहं ताणम् । नमो सिद्धाणम् ॥
नमो आयरियाणम् । नमो उज्झायाणम् ॥
नमोलोएसव्वसाहूणम् । एसो पंच नमुक्कारो ॥
सव्व पावप्पणा सणो । मंगला णंच सव्वेसिं ॥

पढमंहवय मंगलम् ॥

सो० मंगलीक नवकार । चौदह पूरव सार यह ॥
हरन अमंगल भार । नरनमंगला चरन अत ॥
नमों प्रथम अरि हंत । भागवंत भगवंत प्रभु ॥
[illegible] कर्म [illegible] वंत । अष्टादश दूषणरहित ॥
[illegible] नाथ । चौंसठगुण[illegible]जो ॥
[illegible] । हाथ जोरिवंदन करों ॥
[illegible] सिद्ध । ज्ञानप्रवृद्ध प्रबोध कर ॥
[illegible] सिद्ध । तिनहिं वन्दनाकीजिये ॥
[illegible] भेद । और आठ गुनही बहुरि ॥
आठ करमकों भेद । तजि दीनोंतिनकों नमों ॥
तीजे जे आचार्य्य । त्रिकालग्य त्रय तापहर ॥
छत्तिसगुणके कार्य्य । कारण तारण कों नमों ॥
चौथे रहित उपाधि । उपाध्याइ जपतप क्रिया ॥
सकलअसाधहिंसाधि । सावधान तिनकों नमों ॥
ग्यारह अंग उपंग । बारह जे सब शास्त्र के ॥

पढ़ें पढ़ावें संग । द्वादश अंग अभंग वर ॥
पुनि पंचम नोकार । नमस्कार जासौं कहें ॥
सकलसाधुसुखसार । जिन कल्पीकल्पीथविर ॥
सत्ताइस गुनवान । जेते ढाई द्वीप में ॥
चारित लै सुज्ञान । भये तिन्हें वंदन करौं ॥
परमेष्टी नव कार । वेई जिन जन शास्त्रके ॥
सकल पाप संघार । होतजाप जाकौ किये ॥

अथ पंच कल्यानक ॥

अव पांचों कल्यान । कहि वरनों चितदे सुनो ॥
परम धरमकी खान । भरम मिटत भवभवनुको ॥
पंच कल्यानक सार । च्यवनजनमचारित्र पुनि ॥
ज्ञान मुक्ति आधार । चौविस तीरथ नाथ के ॥
महावीर तिहि मांह । चरम तिथंकरकी अधिक ॥
इक कल्यानक छांह । गर्भाकर्षण इन्द्र कृत ॥

अथ काल प्रमाण ॥

चौपाई छंद ॥

काल विभाग जैन मत जानौ । छह आरे करि भेद बखानौ ॥
पहिलौ सुखम सुखमकहिनाम । ताको अवधि सद्धु विश्राम ॥
कोड़ा कोड़ चारि जे सागर । ताकी उपमा जोग उजागर ॥

अथ सागर प्रमाण ॥

दो० पल्योपम कौ मान अव । पहिलै करौं वखान ॥
लांवीचौड़ी भूमि खनि । इक इक जोजन जान ॥
तितनी हीं औंड़ी खनौ । ऐसी खात वनाय ॥
ठांसिभरौतिहिंजुगलिया। वाल वाल कतराय ॥
चक्रवर्त के कटक तैं । दावैं दवैं न सोय ॥
सरित सलिलतापरवहैं । स्रवै न जलकणजोय ॥
वालअग्र कोपरम अनु । प्रतिसौवरसनिकाल ॥

होवै रीतौखात जब । सो पल्योपम कमल ॥
पल्य जुकोड़ाकोड़दस । सागर मान बखान ॥
जैनागम परमान कहु । एतो सागर मान ॥
सागर कोड़ाकोड़ जब । बीस सुनौमिति होय ॥
काल चक्रतब होयसो । परौ जानो सोय ॥

घोपाई ॥

पहिलैं सुखमसुखम आरे के । कहौ सकल जुगलिया तारेके ॥
जनैं जुगलियातहं सब नारी । साथहिं इक बारो इकनारी ॥
यद्यपि एक कूप तें उपजें । पै ते कुलक कुलनि निपजें ॥
तीन कोसकी तिनकी काया । पल्योपम त्रय आयु बताया ॥
भूख लगै तीजें दिन तिनकों । भरै पेट इक बदर जिनकों ॥
उनंचास दिन पितु अरु माता । तिनके पालन लालन राता ॥
कल्प वृक्ष फिरि तिनकों पोषें । यथा इच्छ तिनकों संतोषें ॥
इकसत छप्पन पसुरी तनमें । पहिले आरे में थी जन में ॥
दूजों आरो सुखमा नाम । कोड़ा कोड़ तीन को धाम ॥
सागर ओपम ता गो भाखें । तिनके जुगलिन की सुनि साखें ॥
कोस दोय तन है पल्लायु । दोय दिवस पाछैं ते खायु ॥
बेर मान आहार सभालैं । मात पिता चौसठ दिन पालैं ॥
कल्प वृक्ष पुनि तिनकोंलालैं । तिनकी पसुलीकोसुनि चालैं ॥
इकसत अट्ठाइस ते राखें । अब तीजो आरो सुनि साखैं ॥
सुखमा दुखमा नाम अनूपं । कोड़ कोड़ द्वै सागर ओपं ॥
कोसमानतनजासु युगलिया । पल्योपम इक आयु संवलिया ॥
इक दिन अन्तर करैं अहारा । मान आंवले के तिहिं आरा ॥
उन्निस दिवस मातु पितु पालैं । कल्प वृक्ष फिर तिनकौं लालैं ॥
चौंसठ पसुली तन में जानों । यों तीजो आरो परमानौं ॥
दुखमा सुखमा चौथो साधो । काल मान तीजौ को आधो ॥
प तामें इतनों कम चहिये । सहस बयालिस बरसैं कहिये ॥

जुगल धर्म इहि आरे नाहीं । मिथ्य भख्यापै तिहि माहीं ॥
कल्प वृक्ष दवे ते नहिं । कर्महिं तें जीवन निरवहैं ॥
पंचम आरा दुखमा नामा । जामें नेक न सुख बिश्रामा ॥
सहस इकीस वरस जाको थिति । वरस एकसौ बीस आयुगति ॥
साढ़े तीन हाथ तन नाना । दिन द्वै वेर भूप दुख नाना ॥
अंत समय इहि आरे माहीं । जैन धर्म थोरौ रहि जाही ॥
दुख सह आचारज नकछेसा । नाम फाल्गुनी साध्वी वेसा ॥
नागिल स्रावक और स्राविका । नाम सत्यश्री वरस्रभाविका ॥
चरम काल इहि आरे लहिये । चतुर संघ याही कौं कहिये ॥
छठवां दुखम दुःखमा नामा । सहस इकीस वरस थिति तामा ॥
एक हाथ तन मित अरु जामें । सोरह वरस सरसे चय तामैं ॥
लोक कुरूप कुधर्म कुकामी । अगति अलज अचेल अदामी ॥
नव बरसी तिय गर्भ प्रकासी । घरबिन जन गिरिगुहा निवासी ॥
मत्स्याशी जन कुत्सित कर्मा । छठवें आरे को यह धर्मा ॥
छठवें पहले दूजे आरैं । जैन धर्म नहिं तिनकें वारैं ॥
इकतें छहलौं क्रम करि चहिये । उत्सर्पिनी काल तिहि कहिये ॥
फिरि छहतें इकलौं उलटो क्रम । अब सर्प्पिनी काल कौ आगम ॥
दुहूं काल मिलि बारह आरे । सागर बीस कोड़ को डारे ॥
काल चक्र इक याको कहिये । जैनागम मत ऐसे लहिये ॥
चरम काल तीजे आरे मैं । अरु चौथे पूरे बारे मैं ॥
चौबीसौं जिनवर अवतरे । ज्ञान जोग तप वपु गुण भरे ॥
कुल इक्ष्वाकु गोत कास्मपजे । इकइस जिनवर तामें निपजे ॥
अरु हरिवंश वंश के माहीं । गौतम गोत माहिं तिहि ठाहीं ॥
दोय तिर्थंकर औरो भये । मुनि श्री सुव्रत नेम छवि छये ॥
बरस पचत्तर याके जबै । अठ मास साढ़े पुनि सबै ॥
चौथे आरेके जब रहे । तेईसौं जिनवर निरवहे ॥
चरम तिर्थंकर तब अवतरे । महाबीर स्वामी गुण भरे ॥

इनहीं को कछु करि दिग्भाग । प्रथम चवन अब कहौं सुहाग ॥

अथश्रीमहावीर स्वामी चवन कल्यानक ॥

चौपाई ॥

ग्रीषम ऋतु सितमास असाढ़ै । छठतिथि निशिनिशीथनहिंबाढ़ै ॥
देवलोक तें च्यवनविचारयो । देव योनि तजिवो निरधारयो ॥
बीस सागरोपम वय मजिकै । शुभ विमाल पुष्पोत्तर तजिकै ॥
देवस्थित भव पूरण करिकैं । मनुष योनिकोंहित चित धरिकैं ॥
जम्बूद्वीप भरथ छिति माहीं । ब्राह्मणकुण्ड ग्राम तिहिं ठाहीं ॥
ऋषभदत्त द्विजवर की घरनी । देवानंदा सुवरन वरनी ॥
मतिश्रुतिअवधिज्ञानसंगलेके । ताके गर्भ चवे सुखदेके ॥
सूक्ष्मचवनसमय नहिंजान्यो । करिके चवन सवे पहिचान्यो ॥
ताही निशि तिनि देवा नंदा । चौदह सुपन लखे सुख कंदा ॥
अति उदारअति आनदकारी । अद्भुत मगलीक हित वारी ॥
सो लखि लहि अति मोदितभई । आनद युत ह्वै पति पै गई ॥
प्रथम जोरिकर विनयसुनायो । पुनि अंजुलि सों सीसछुवायो ॥
पाछैं सबै विवरथा कही । जो कछु सुपन मांह उनलही ॥
कहि ताको फल पूछन लागी । भागवत सुहि करो सभागी ॥
तवपतितिनिजमतिगतिअनुमितकरितिनसुपननकोआशेचितधरि ॥
अति हर्षित आनंदित ह्वै कैं । मोद भई ह्वै सुख सरसै कै ॥
प्राणप्रियेकहि नियमेंभाख्यो । दईदयो वितको अभिलाख्यो ॥
बड़ो अलभ्य लाभ तुहि ह्वैहै । सुद मंगल आनद हित पैहै ॥
चारयोवेद गनित गुण जेते । जोतिष केसव लहिहै तेते ॥
अरु इतिहास पुराण ज्ञानगुन । वेदककाव्यछंद सिच्छाग्न ॥
आगमअगम निगम गुणज्ञानी । तेरे गर्भ अर्भ में जानी ॥
पियजियको विय जवयों सुनी । मुदित भई इकतें सतगुनी ॥
आस पाय पतिपास न छंड्यो । हास विलासभोगरत मंड्यो ॥

अथ इन्द्र वैभव वर्णन ॥

चौपाई ॥

तेहीं समय गुरुवतितिहिकाला । इन्द्र देवतन को भूपाला ॥
वज्र जानु को आयुधकहिये । ऐरावत गज वाहन लहिये ॥
ताकी सभा सुधर्मी नामा । लाख कोस विमान सुधामा ॥
मुख्य इन्द्र चवतेत्र विमाना । तीनिस सहस्र देवगण नाना ॥
सात अनीक सैन सैनापति । अप्सरागंधर्वगणअगनित अति ॥
लोक पाल सब आगे ठाढ़े । बैठ्यो गज सिंहासन गाढ़े ॥
कुण्डलमुकुटकटक उरमाला । अंगदादि भूषण मणिजाला ॥
चामर छत्र बीजना राजे । नाटक गीत नाच धुनि छाजे ॥
जिहि तपकरियहवैभव पाई । सो मैं तो को देहुं बताई ॥

अथ कार्तिक सेठकथा ॥

मुनि सुव्रत स्वामी के वारें । पृथ्वी भूषण नगर मझारें ॥
प्रजापाल नृप ताको राजा । सभा सोम्यपरसुखद बिराजा ॥
तापस एकतहां चलि आयो । तिन तपबलसबको विरमायो ॥
राजा प्रजा सबै तापस दर । दरस हेतआवैं नित उठ कर ॥
कार्तिक सेठ एक व्रत धारी । कुटुम्बसैं तिहि नगर मझारी ॥
सो श्रावक नहिं ताके गयो । ताते तापस द्वेषित भयो ॥
पारनदिन नृपसों तिन कह्यो । कार्तिकसेठहिहम नहिंलह्यो ॥
सेठ पीठ पायस की थारी । तौ हम पारन करैं तुम्हारी ॥
सुनि नृप सेठहि वेग बुलायो । कीनों जो तापस मन भायो ॥
सेठ पीठ पायस की थारी । गरमा गरम लाय के धारी ॥
लाग्यो तापस पारन करने । लागी पीठ सेठ की जरने ॥
तापस निज कर नाकहि छैके । सेठहि सैन नैन की दैके ॥
अति अपमान ठानि गुदठायो । जानि सेठ मनअतिपछितायो ॥
जौ पहिले मैं चारित लहतो । तौ इतनो दुखकाहे सहतो ॥
ऐसे बार बार चित माहीं । सोचि सेठजग जानि वृथाहीं ॥

निज अपमान सेठलहि मनमें। चारिततुरत लियोजिनजनमें ॥
तिहिसंगसहस अठोतरश्रावक। भयेजती अतिपरम प्रभावक ॥
संथारा लेके तन तज्यो। सेठ सुधर्म इन्द्रपद भज्यो ॥
मरि तापस ऐरावत भयो। सुरपतिनिजवाहन करिलयो ॥
तब तिन गजके मस्तक कीने। इन्द्रौ दोय रूप धरि लीने ॥
ऐसे जेते सिर गज करै। सुरपतिहू तेते वपु धरै ॥
यों गज गर्व हीनकरि दीनो। विवस होयतब भयो अधीनो ॥
सुईइन्द्र यह वइभव जाको। सुर नर मुनि भयमानतताको ॥
अवधिज्ञानकरितिनजवजान्यो। जिनवरचवमगुजोनिप्रमान्यो ॥
मुदित होय आनंदअति पायो। आसनते उठितिहि दिसधायो ॥
सात पैंडचलिकियो प्रनामा। नमोर्हंत यों कहि सिर नामा ॥

अथ इन्द्रस्तुति ॥

तुमहो ज्ञान जोग के स्वामी। तप विराग करि पूरन कामी ॥
पुरुप प्रधान लोक हित कारी। दया धर्म समकित परभारी ॥
भुक्ति मुक्ति दायक भगवाना। सन्नद अभयदमगदसुजाना ॥

अथ मेघ कुमार कथा ॥

मेघकुमारहि ज्यों जिन स्वामी। सुमग दिखायो पूरन कामी ॥
ताकी कथा कहों अति प्यारी। जिनजनगन को आनदकारी ॥
श्री जिनवरस्वामी भगवन्ता। एक समय विहरत बनसन्ता ॥
विचरत स्रेनक सुत सों भेटे। बोधि ताहि भवदुःख खखेटे ॥
अंत द्वारपर थल निहिकीनो। ग्हन लग्योगुरु वचनअधीनो ॥
तहां साधु वहु आवें जावें। गमनागन संघट्ट वढ़ावें ॥
मेघकुमार राज स्रेनक सुत। भयो गमनआगम तैं दुख युत ॥
तव उनअपनो हिये विचारो। सदनसेज सुखमसि सुखनारी ॥
हाव भाव भरमुजभरि भेटनि। सब विधिकोसुखसारसमेटनि ॥
एतं सुख तव नींद न आवत। सो अब ह्यां इतनो दुखपावत ॥
यातें फिरि अपनो घर लहिये। साधुपनो दुख असहनसहिये ॥

यहमतिचित धरि गुरु पै आये। गुरु बिन भाखें मनकी पाये ॥
कह्योवत्सयहदुखनहिं सहिकैं। चहतरह्योफिरियहसुखलहिकैं॥
ऐसी मति कबहूं नहिंकीजै। यह केतौ दुख जाहि न धीजै ॥
पूरब भव जेते दुख सहे। परम मरम हित जात न कहे ॥
सब बिस्तारि कहौं सुनुसोसैं। पूरब जनम करमगुन तोसैं ॥
गिरि बैताढ्यमाहिं बनिचर तूं। भयो हजार करिन कौ बरतूं ॥
छहरदवारौ मत मद धारौ। मेरु समान अति ऊंचौ भारौ ॥
आयो ग्रीषम भीषन काला। बन में लगो दवानल ज्वाला ॥
दव डरतेंतव तूं तहं नस्यो। निर्जल सर पंकिल में फस्यो ॥
तहांएक अरि करिवर आयो। तिन तुहिकरिआघातदुखायो ॥
सहनकियो तें अति दुखताको। सातदिवसनहिंलहि साताको ॥
इक सतवीस बरस वयधरिकैं। विंध्याचल में जनम्यो मरिकैं ॥
चारि दांत कौ हाथी सरज्यो। अरु नवरनजातेंगिरिलरज्यो ॥
जाके और सात से हाथी। अनुचर हवैबिचरैंतिहिसाथी ॥
पूरव भव दव दुख जो पायो। जातस्मर तैसो सुधि आयो ॥
सोविचारिचितधरितिनवरकरि। भूमिएकराखी बिनुतृनकरि ॥
इकदिन वनघनफिरिदवलागी। पशु श्रेणि वनकोडरि भागी ॥
भागि कहूं जब ठौर न पाई। तिहि थलिन भुवजाइसनाई ॥
गजवरहूं तिहि थलभजिआयो। ज्योंत्यों करितहंनायसमायो ॥
फस्यो अनेक जीव संघट मैं। हलिचलिसकयोनतासंकटमैं ॥
ता गज कौ जबतन खुजलायो। खुजलावन कौं चरनउठायो ॥
सोपग थल सूनो नहिं पायो। ससाएकभजितिहि थलआयो ॥
ताहि देखि गजपति अनुकंप्यो। चरन धरन मैं जैहै चंप्यो ॥
जीव दया हत चितअतिपार्‌यो। फेरि नचरनधरनिपै धार्‌यो ॥
ढाई दिन लौं त्योंहीं रह्यो। जब लगि सोदावानल दह्यो ॥
दव के शांत जबै सस सरक्यो। पदपैंडातें गज हिय दरक्यो ॥
भूख प्यास दुख तापर बाढ्यो। गिरयोभूमिगजबहुदुखगाढ्यो ॥

पूरन करि सौ बरसी आयू । त्यागि दयो तन अतिसतभायू ॥
तिहितप स्रेनिकराजसदन में । मेघकुमार आय तुम जनमें ॥
तेही पुन्य साध पद पायो । अब क्यों कातर ह्वै अकुलायो ॥
एकै जीव हेतु तब तैसे । भूख प्यास दुख सहे अनैसे ॥
सो अब जगत पूज्य साधनतें । दुखीगमन आगम बाधन तें ॥
ऐसौ तोहि वत्स नहिं चहिये । जो तु इच्छत परमपद लहिये ॥
यों गुरु बच सुनि मेघकुमारा । निहचलज्ञान लह्योनिरधारा ॥
हाथ जोरि गुरु पद सिरनायो । प्रभु बूड़त तुम मोहिं बचायो ॥
अब जिहि माहिंचित्त हतमेरो । रहै साधु सेवा में घेरो ॥
दरस परस नित उनकौ पाऊं । निसिदिन चरन साधुकै ध्याऊं ॥
साधु चरन रज सिर पर राखौं । उनके बचन सुधारस चाखौं ॥
ऐसी मति मोहिं देहु दयाला । सुनितोषे गुरु परम कृपाला ॥
एवमस्तु तासों गुरु भाख्यो । तबतें निज तपव्रत दृढ़राख्यो ॥
तप प्रभाव तन तजितिहिथाना । भयोनैवकहि विजयविमाना ॥
पुनिविदेह थलचढ़ि छविछायो । तप प्रतापतें मुक्ति सिधायो ॥
यों गुरु कुंवरहि पन्थ दिखायो । कुपथ कूपमें गिरन न पायो ॥
यातें जीव दया दृढ़ नीको । पाऊं सुफल जनमता जीको ॥
ऐसे गुरु जन के हितकारी । तारनतरन मरन भयहारी ॥
काम क्रोध लोभादिक जितने । राग द्वेष ममतादिक तितने ॥
जिन जीते [illegible] गुन सोई । गुन सोई चाहै सोइ होई ॥
ऐसे कहि [illegible] । अपने मन संकल्प बढ़ायो ॥
[illegible] अब नाहीं । ऐसो अचरज भयो न कबहीं ॥
[illegible] और बलदेवा । चक्रवर्त आदिक वसुदेवा ॥
[illegible] नहिंउपजैंकबहीं । राजादिक कुल मिलैंनजबहीं ॥
[illegible] नामी । सोद्विजकुलजनमें जिनस्वामी ॥
काल [illegible] बितीतें । उत सर्पनि अब सर्पनि बीतें ॥
हुंडक नाम काल इक आवै । जो ऐसे अचरज उपजावै ॥

ताही काल माहिं हन हेरे । उपजत ऐसे दसों अछेरे ॥
सो यहि काल आय दरशाने । अति अद्भुत रसकरि सरसाने ॥
आदिनाथ जिन आदि सुटेके । महावीर स्वामी लौं लेके ॥
जिन जिन जिन वारे मे जो जो । भयो अछेरौ वरनौं सोसो ॥

अथ प्रथम अछेरा ॥

एक काल इक छिनमें सोई । वहु जीवन की मुक्ति न होई ॥
होय कपापि तु अचरज जानों । ऋषभ देव के वारें मानों ॥
एक ऊन सत जिनके साधू । आठ भरत सुत रहित उपाधू ॥
आपसहित इकसत अरुआठा । इकछिन मुक्ति गयेसुनिपाठा ॥
प्रथम अछेरौ यह जिय जानों । अब दूजे को सुनों वखानों ॥

अथ दूजो अछेरा ॥

जैन धर्म चौथे आरे में । जब विच्छेदे ता वारेमें ॥
असंजती पूजें तब जन सब । पूछें धर्म विवस्था ते तब ॥
कहैं कि सब जिन जनकोंदीजे । अन धन कन्यापूजा कीजे ॥
साध वुद्धि तब उनकी पूजा । होन लगीकोउ और नदूजा ॥
दूजौ यह अति अचरज नयो । सुवुधि नाथ के वारें भयो ॥

अथ तीजो अछेरा ॥

नरक न जाइ जुगलिया कवहूं । जाय तु अचरज अवहूं तवहूं ॥
कौसंवी नगरी को राजा । सुमुखनामअतिसुभगवि राजा ॥
वीरा कोली इक वहं वसे । वनमाला ताकी तिय लसे ॥
इक दिन नृप ताकौं लखि लई। रूप देखि सव सुधिवुधिगई ॥
काम अन्ध ह्वै कछू न जानी । छलकरिताहि महल मेंआनी॥
भोग विषय तासों नृप रच्यो । वीरा कोली धीरज छंड्यो ॥
ढूंढत जहं तहं दुखित विसाला। हा वनमाला हा वनमाला ॥
विरहदुखिततिहिंनृपलखिलीनो । वड़ो खेद पछितावो कीनो ॥
दैवजोग नृप अरु तिय ऊपर । गाज परी ताही छिन दूपर ॥
दूजै भव मरि जुगली भयो । ते हरिवर्ष खेत सुख छयो ॥

वीरा कष्ट साधि मरि भयो । किल्विख नाम देवता भयो ॥
तबतिनयुगलिहिलखिदुखपायो । पूरव जनम वैर सुधि आयो ॥
तिन युगलिहिं ह्वांतै लैं चल्यो । चम्पा नगर प्रजा तैं मिल्यो ॥
नृप हरिभद्र नाम कहि थाप्यो । रानीसहितताहिसुखव्याप्यो ॥
नगर प्रजा कौतिन सिखरायो । नृपहिंमास मयभोग खवायो ॥
ताही पाप युगलिया मरिकै । नरकगये अचरज जगकरिकै ॥
कुल हरि वंस भयो तिनहीं तैं । हैं प्रसिद्ध जगमें जिन हीतें ॥
यह ई तीजा भया अछेरा । जिनस्वामी सीतल की बेरा ॥

अथ चौथा अछेरा ॥

चौथो अचरज अवसुनि कहिये । अद्भुत रसताको पथ गहिये ॥
तीर्थंकर नहिं तियकै उपजै । जौ उपजै तौ अचरज निपजै ॥
मल्लिनाथ तिय ह्वै औतरे । जिन वरवपु अद्भुत रसभरे ॥
पूरव जनम करम यह बांध्यो । तातैं तिय तनसों जिय साध्यो ॥
तिहि भव महा विदेह नगरमें । शतवल नृपके सुखद नगरमें ॥
कुंवर महावल नामा जनमें । मातपिता अति मोदित मनमें ॥
मित्त किये छह राज कुमारा । वय गुनसील रूप सम सारा ॥
अचल धर्म पूरन अभिचन्दा । वसुवे श्र म छहनाम नरिन्दा ॥
सातों वाल मित्र मिलि पूरे । समपदवी शापत हित रूरे ॥
लैचारित सब तप कों लागे । महावली पै छिपि कछु जागे ॥
छहतें अधिक कपट तप कीना । तिहि प्रभावतें तियतन लीना ॥
मिथला नगर कुंभ नृपजाकैं । प्रभावती तिय गर्भ सुताकैं ॥
मल्लिकुमारी इहि सुभ नामा । रूप सील गुनपरमललामा ॥
अगहन सुदि एकादस दिना । जनमीजिन वरह्वैतिहिछिना ॥
छहों मित्रहू जब मरि गये । देसान्तर मैं राजा भये ॥
सुनि गुन रूप सील मल्लीको । भयेभंवर सुनिगुन वल्लीकौ ॥
आये तजि निज २ रजधानी । मल्लिकुमारीजिहिदिसजानी ॥
मल्ली अवधि ज्ञान करि जाने । परम सनेही मीत पुराने ॥

तिन्हें देखि निज रूप लुभाने । विकसकासवसविकलपिछाने ॥
मल्लि स्वर्न पुतली सज कीनी । तामें निज छबिसवधरिदीनी ॥
रत्न भूषनन भूषित कीनी । कंचन में पुतली रस भीनी ॥
नित प्रति ताके मुख के माहीं । अन्न कोर इक २ धरि जाहीं ॥
सोसड़िअन्नअधिकजवबिगर्यो । अतिदुर्गंध भयो घरसिगर्यो ॥
छहैं जनन तब सो लहिलीनी । अतिबिगन्ध घनतेंघिनकीनी ॥
तब मल्ली ते सब समझाये । अन मय तनके भेद बताये ॥
अस्थिचर्म नस वस मज्जामय । रुधिररुमास मूत्रमलआलय ॥
ऐसोयह अनतन धन घिनघर । सुनो सनेह जोग नहिंवरनर ॥
बोधि छहन को चारित दीनो । जनममरन दुखतें करिहीनो ॥
चौथो अचरज यहै बखान्यो । अतिविसमयअद्भुतरससान्यो ॥

अथ पंचम अछेरा ॥

मिलें न वासुदेव द्वै जग में । जो पै मिलें तुअचरज मग में ॥
खंडधातुकी में इक नगरी । कंकाअमर नाम गुन अगरी ॥
वासुदेव इक कपिल सुनामा । तहां वसे सुभ लच्छन धामा ॥
इक दिन किहू हेत गुन मये । कृष्णसुवासु देव तहं गये ॥
ताको हेत कहौं सुनि लीजे । एक समय नारद रस भीजे ॥
पंचाली के अविनय खीजे । खंड धातुकी जाय पतीजे ॥
पद्मोत्तर राजा पै गये । रूप द्रोपदी वरनत भये ॥
तीन लोक में नाहीं ऐसी । सुन्दर तिय। द्रोपदी कैसी ॥
सुनि गुन राजा मोहित भयो । देव अराधि सिद्धजप कियो ॥
तिन सुर जाय द्रोपदी हरी । लाय नृपति के आगे धरी ॥
पै द्रोपदी सील व्रत साधे । निस दिन रहे धर्म आराधे ॥
भोर भयो पांडव जब जान्यो । चकितथकि तह्व अतिदुखमान्यो ॥
ढूंढ हारि जब कछु नबसाई । तब सुधि कीन यादव राई ॥
कुन्ती जाय कृष्ण को लाई । आय कृष्ण सब बिथामिटाई ॥
नारद मुनि ताकी सुधि पाई । तब हंसि यों पांडवन सुनाई ॥

कहा करी तुम मिलि पांचौपिय। राखि न सके पांच मैंडक तिय॥
सोरह सहस अठोतर से तिय। एकाकीराखत हम ज्यों जिय॥
यो हंसि रिपु पे करी चढ़ाई। सहपांडव चलि गये कन्हाई॥
पद्मोत्तर राजा सों लरे। जीति ताहितिय लैकरिफिरे॥
तव जयसङ्खकृष्ण धुनि कीनौ। कपिल सुवासुदेव सुनि लीनौ॥
कपिलतहां तव मिलनविचारी। मुनिसुव्रत्ति जिनिवरजेभारी॥
कह्यो न वासुदेव द्वै मिलें। मिलेंतुअचरजअतिजगखिलें॥
जोलौ कपिल सिंधु तट आये। तौलौ कृष्ण सिंधु मधि पाये॥
सङ्ख नाद तव दुहुं दिस भये। नादहिं तो मिल निज ग्रहगये॥
यह पांचवों अचंभौ नयो। नेम नाथ कै वारें भयो॥

अथ छठवों अछेरा॥

चमरेंदर धर्मेन्द्र लोक लो। जाय नहीं जो जाय अचंभो॥
पूरन नामा तापस एका। कियो घोर तपवरस अनेका॥
सव विधि साधि कष्ट मरिगयो। तप वल तें चमरेंदर भयो॥
अवधि ज्ञान करि जवउनदेखा। धरमेंदर पद निजसिर लेखा॥
लखिअतिक्रोधअगिनतनजार्‌यो। धरमें दरसों लरनविचार्‌यो॥
जोजनलाखवदनविस्तार्‌यो। सुरन डरावन लाग्यो भार्‌यो॥
मन में महावीर की सरना। गहिधरि काहू को जी डरना॥
तव धरमेंदर वज्र चलाया। चमरेन्दर भाजा भय पाया॥
प्रभुपदतर अनुतन धरि रह्यो। अवधिज्ञानकरिसुरपतिलह्यो॥
महवीर की सरना लीना। तव धरमेन्द्र छांड़ि सो दीना॥
कह्योवच्यो जिनवरकी सरना। फेर न ऐसो कवहूं करना॥
दुहूं परस्पर दोष छिमाये। आप अपने थल दुउ सिधाये॥
छठो अछेरो पूरन भयो। अव आगे सुनि अचरज नयो॥

अथ सातवों अछेरा॥

सतवों अचरज जिन देसना। निफल न होय एकपल छिना॥
अफलो होय तु अचरज होई। यह जग में जानै सव कोई॥

महावीर भगवंत सुजानी । जबै भये प्रभु केवल ज्ञानी ॥
समो सरन सब सुरन रचायो । महावीर तब सब्द सुनायो ॥
सो देसना न किन्हूं मानी । यह अचरज सतयोंसुनिज्ञानी ॥
अथ अठवां अछेरा ॥
भूत भविष्यत अरु अब तबहीं । ऐसो अचरज भयो न कबहीं ॥
सो उपसर्ग बखाना । गोसालक तें जो भगवाना ॥
सह्यो कह्यो सो सुनि चितलाई । सावस्ती नगरी सुखदाई ॥
तहां बसै इक खल मन खलसुत । गोसालक तपसी इरषायुत ॥
तिन जिन वरसों बाद मचायो । प्रभु पर तेजो लेस चलायो ॥
सुनछत सरवानुभूत दोय जन । महावीर के मुख्य सिष्य तन ॥
साधु दोय ते आड़े आये । ते जलेस्स ते तुरत जलाये ॥
तिनहिं जारि वह तेजो लेसा । गयो जहां महवीर जिनेसा ॥
दै प्रदच्छिना पाछे फिर्यो । गोसालकही तातें जर्यो ॥
पै जिनवर के तनके माहीं । ऊठन चिह्न इकभयोतहाहीं ॥
काल पाइ सोऊ मिटि गयो । पै जगमें यह अचरज भयो ॥
यह उप सर्ग जिनै नहिं होई । यातें कह्यो अछेरो सोई ॥
अथ नवां अछेरा ।
रवि ससिनिज बिमानयुतआवै । जाहि न कितहूं कबहूं कापै ॥
जोपै जाहिं तु अचरज होई । विदित बात जानत सब कोई ॥
कौसंबी नगरी के माहीं । महावीर स्वामी तिहि ठाहीं ॥
समो सरन देवन तहं रच्यो । एको सुख जातें नहिं बच्यो ॥
तहां सूर ससि अति छवि पाये । निजविमानहू देखन आये ॥
नवम अछेरो यहै बखानो । अब दसवों हू सुनो सुजानो ॥
अथ दसवां अछेरा ॥
अब दसवों अचरजसुनिसोऊ । द्विजकुलजिन जनमैंनहिंकोऊ ॥
देवानन्दा उदर मझारा । श्रीभगवन्त लियो अवतारा ॥
दस अचरज ये सुरपति कहे । सेनाधिपहि बोलि कहि रहे ॥

अरहंतादिक जिनजन सबहूं। भिच्छुककुल नहिं उपजें कबहूं॥
सो श्री महावीर जिन ईसा। द्विज कुल गर्भचवे जगदीसा॥
कुल अभिमान मान मन साध्यो। नीच गोत कुलयातें बांध्यो॥
सो सब अब विस्तार बखानो। पिछले भव जिनवर के जानो॥
सत्ताइस भव महावीरके। बरनों सुनि गुन परम धीरके॥
जाभव तें समकित मित जागी। मुक्त होनकी थित अनुरागी॥
ताहि आदि दै महावीर लों। सत्ताइस भव भये सु बरनों॥
प्रथम भये नयसार थलीसा। जिन अातिथ हितचहेसुनीसा॥
भोजन सजि मग जोवनलाग्यो। मुनिआयेलखिमुद मनजाग्यो॥
सादर सनमाने बिहराये। साध बिहरि अति आनंदपाये॥
मुनितब कृपा पात्र जन जान्यो। ताके सनमुख धर्म बखान्यो॥
सोसुनि तिन समकितपदपायो। मुकुत जोग ताको भवभायो॥
यह पहिलो भव दूजो सुरको। तीजो सुनिअब बरनों धुरको॥
भरत चक्रवे घर अवतरे। नाम मरीच सकल गुन भरे॥
इक दिन भरत आदिस्वामीतें। पूछयो माय नामि नामी तें॥
अहोजिनेसर यब इहिकाला। समोसरन थल परमविसाला॥
यामें और जीव कोउ तुमसों। तीर्थंकर है कहो सो हमसों॥
सुनि बोले श्री आदि जिनेसा। समोसरन में तो नहिं ऐसा॥
पै तापस तुव सुअन मरीचा। लहि है पदवी परम अनोचा॥
चौविसवों जिनवर मोई है। महावीर नामा जस पैहै॥
चक्रवर्त्ति हू ह्वै है सोई। नाम मित्र प्रिय ताको होई॥
महा विदेह खेत में उपजे। मूका नगरी में सो निपजे॥
अरु त्रिपृष्ट नामा वसुदेवा। भरत खेत में ह्वै है एवा॥
ऐसे वचन भरतमुनि जिन तें। सुत मरीच पै आये छिनतें॥
दै पर दच्छन वन्दनकीन्हा। भागवन्त अपना सुत चीन्हा॥
पुनि सुत सों उनऐसे भाख्यो। दै भगवन्त वचन को साख्यो॥
होंगे जीव तियङ्कर ह्वैहे। वासुदेव पद हू सो पैहै॥

चक्रवर्ति ह्वै है सोई। कही बात ऐसे मुद मोई ॥
तोहि तिथङ्कर पद समुहायो। यातें हों तुहि वन्दन आयो ॥
सुनि मरीच अतिआनंद पाग्यो। विपुल हर्ष तें नाचन लाग्यो ॥
कुलको गर्भ भयो अति भारी। मोसों सुकुल न जगत मझारी॥
तेहो गर्भ नीच कुल बांध्यो। तातें भिच्छुक कुल भवसाध्यो॥
कोड कोड़ सागर वय माहीं। सत्ताइस भव भयो तहाहीं ॥
तासें तीन प्रथम ये कहे। चौथे भव सुर तन धरि रहे ॥
पुनिग्यारह भवमाहि इकन्तर। इकतपस्वी इक विबुधनिरन्तर ॥
पन्द्रह भव जव ऐसे गये। राज कुमार सोरहें भये ॥
सत्तरवें सुर ठारह माहीं। वासुदेव पुनि भये तहाहीं ॥
भव उनीसवें नरक सिधारे। वीसें जनम सिंह तन धारे ॥
गये नरक पुनि भव इक ईसें। धरयो जनम नृप कौ वाईसें ॥
चक्रवर्त पुनि ह्वै तेईसें। फेर देवता ह्वै चौवीसें ॥
राजा नन्द पचीसें भये। पुनि छवीसवें सुर गुन छये ॥
सत्ताइसवें भव भगवन्ता। देवा नन्दा उदर वसन्ता ॥
यातें इन्द्रहि योग सुगर्भ। नृप कुल में सरजावे अर्भ ॥
हरि नगमेशिहि ऐसें कहिकैं। फिरवोल्योसुरपतिमुखलहिकें॥
अब तुम वेग जाहु तिहिनगरी। देवा नन्दा जहं गुन अगरी ॥
ताके गर्भ वेग चुरावौ। छत्रियकुण्ड ग्राम मैं लावौ॥
सिद्धारथ राजा जहं राजै। त्रिसला रानी जहं छवि छाजै॥
ताके गर्भ माहिं है कन्या। ताहि तहां तैं लै गुन धन्या॥
वदलिदेहु दुहुगर्भ परस्पर। त्रिसलाकूख माहिंजिनवरधर ॥
हरिनगमें सीयहआयुससुनि। करिप्रणामतिहिदिसचाल्योपुनि॥
करन वइक्री रूप विचार्यो। सव रतननको सार निकार्यो॥
वहुजोजन मितिदण्डरूपधरि। समुद घात ताकें पाछे करि ॥
लोकउचित निजरूपवनायो। सुर उत्कृटी गति करिधायो ॥
अमिति द्वीप सागरमधि ह्वैकैं। जंवूद्वीप मध्य छित छ्वैकैं ॥

भरत छेत्र छित पर जब आयो। ब्राह्मनकुंड ग्रामतब पायो ॥
ऋषभदत्त द्विज वर सुभ घरनी। देवा नंदा सुवरन वरनी ॥
ताहि स्वापनी निद्रा देके। पुदगल अशुभ सबैहरिलैके ॥

अथ गर्भाकर्षण ॥

सुभ पुदगल तहं दये मिलाई। गर्भ उदर तें लियो कढ़ाई ॥
छत्रिय कुंड तुरत लेगयो। त्रिसिलाकूख माहिं धरदयो ॥
क्कार कृष्णा तेरस ससि बासर। उत्तर फागुनिनखत सुखदवर ॥
निसि निसीथ बीतै तिहिवारा। कल्यानक यह गर्भ पहारा ॥
देवानंदा उदर सहायक। रहेबयासी निसिजिननायक ॥
तिहीं राति तिहि देवानन्दा। फेर सुपन देखे अति मन्दा ॥
चौदह सुपन प्रथम जे पाये। ते त्रिसला मनुलये छिनाये ॥
ऐसो सुपन देखिके जागी। अतिसांचिन्ता मनसोचनलागी ॥
तिही राति त्रिसला रानी ने। सिद्धारथ राजा मानी ने ॥
सोवत तेई चौदह सुपने। लखे समात वदन में आपने ॥
सुखद चित्रसाला जहं रानी। सरस सेज में रेन विहानी ॥
ताको वरनन कछुक बखानों। जहां सोय सुख सुपनो जानों॥

कवित्त ॥

नवल धवल धाम ललित ललाम जिन कीनी छाम छवि छपाकर को जो छाई है। रचित विचत्र चित्र खचित जरय जाकी जगर मगर होत जोत चहूं धाईहै ॥ छौनी पै बिछौना छवि छ्ये से बिछाये स्वच्छ छात चांदनी की चांदनी सी छहराई है। कोमल कमल दल रचितवि चित्र सेज कमला सी तापै सोई त्रिसला सुहाईहै ॥ १ ॥ जागत कछुक पल लागत झलक नींद पागनमे दृग मृगछौना से छिपाये हैं। उदितउदार अद्भुत सार भरे मंगलीक सोभा सार सुखद सुहाये हैं ॥ चौदहों भुवन ताको रिद्धि औ समृद्धि सिद्धि साधन विनाही

पाई मोद मन छाये हैं। चौदहों सुपन एक एक तें निपुन ऐसे अनुभव अपने श्री त्रिसला ने पाये हैं ॥ २ ॥

अथ चौदह सुपन——प्रथम गज बरनन ॥

देखि दिग दुन्द विगत मद होत जातें चारि रदवारौ ऐसौ मन मदवारो है। मंदर सो उच्च सुखकंदर सो जामें सुठसुन्दर अमंद मंद गति अति भारी है ॥ अमल कमलदल विमल बरन स्वच्छ मानों जिन जस पुञ्जनंजु उजिआरो है। ऐसों गजराजन कोराजसिरताजआजपहिलें सुपनरानीत्रिसलानिहारचोहै ॥ ३ ॥

द्वितीय वृषवर्नन ॥

उन्नत विपान छबिखान को बखानिसके धर्मबंधु विधि को प्रबल बलवारो है। कोमल विमल रोम सोमके बरन तमतोम को हरन हार रूप निरधार्यो है ॥ रुष्ट तन पुष्ट जामें एको गुन दुष्ट नाहि दुष्टता मिलत लखि ललित सुढारचो है। ऐसो वृपराजन को राज सिरताज आज दूसरे सुपन रानी त्रिसला निहारचो है ॥ ४ ॥

तृतीय सिंह वर्नन ॥

केसर सिरीख के सरीखेकेसकेसरके कोमलविमलचर बरन पियारो है। तीछन तिरीछे नख तालू तल जीभ लाल दीपसे दिपत दृग दीह देहवारो है ॥ दंतुरित दंतनि की पंति छवि वंत स्वच्छ तुच्छ कटि तटि पुच्छ उन्नत उधार्यो है । ऐसोमृग राजनको राज सिरताज आज तीसरे सुपनरानी त्रिसला नि-हार्योहै ॥ ५ ॥

चतुर्थ लक्ष्मी वर्नन ॥

हिमगिर मांहिसरसर में सरोज बन बननेंजलज एक परम सुहायोहै। वारिज में दिव्य गेह गेहमें कनक बेल बेलनेंकमक एक एक तें सुहायो है॥ सोहनै बदन नैन मोहनै चरनकरनाभि उर उरज कमल व्यूह छायो है। कोमल कमल सुखी कमला

त्रिमल देवी ऐसो चौथो सुपनो श्री त्रिसला ने पायो है॥ ६ ॥

पञ्चम फूलमाला वर्नन॥

चंपक चमेली वेल मालती सुमिल मेलि परि मलझेल गुन गूंथी मन भाई है । सेवती गुलाव कुंद केतकी मदनबान जुही सोनजुही पुहीसोहोसुखदाईहै॥ मधु मकरन्दछके तुन्दिलमलिंद वृन्द गुंजिगुंजि रंजमन मंजु मुद छाईहै । फूली फूलमालसोभा सौरभकी जाल बाल त्रिसला को पांचवें सुपन दरसाई है॥७॥

षष्ठम चन्द्र वर्नन॥

राकापति रैनपति रतिपतिअति मित्र उडपति ओषधी को पति मन भायोहै । रोहिणीरमनराट रूपको सुमन तीनो ताप को समन सुमनन करि ध्यायो है॥ द्विजराजजाको पद कोविद कला को भलो भाईहै रमाको मुद कुमुदन छायोहै । पूरन अमंद चन्द आनद को कंद ऐसो छठवां सुपन रानी त्रिसला ने पायो है॥ ८ ॥

सप्तम रवि वर्नन॥

तेज पुंजरासी सुप्रकासी तमनासी देव वरस छमासी दिन छिन प्रगटायो है । कोमल कमल कलकुल मोदकारी भारी कोक सोकहारी लोक लोचन सुहायो है ॥ प्रबल प्रताप पैहरत तीनों ताप तातें तीन कालताको तीन रूप करि ध्यायो है। मारतंड मंडल अखंडित प्रचंड ऐसोसांतवों सुपन रानी त्रिसला ने पायो है॥ ९ ॥

अष्टम ध्वज वर्नन॥

उन्नत अकास लों प्रकास दस दिस मांह छांह जाकी जौन्ह जैसी फैली छिन छोर में । लहरत पौन फहरात फरहर जामें चित्रित विचित्र सिंहचित्र बीच ठौर में ॥ कंचन रचित दंडखचित अनेक नग जग मग होत जग मांहि जोति जोर में। दिव्यतेज

भई ऐसौ ध्वज रानी त्रिसला ने आठवें सुपन देखि लीनौ दृग दौर में ॥ १० ॥

नवम कलस वर्नन ॥

कंचन रचित मनिमानिक खचित मरकत पुखराग हीरामोती जड़ि धार्‌यो है। फूलन की मालरें विसालरें लपेटीं गरें भौंर पुंज गुंजन तें लागै अति प्यार्‌यो है ॥ मंगलीक द्रव्यजग जेते तेते तामें सब सुखद सुभग मोद भाजन सुढार्‌यो है। ससर सरस परिपूरन कलस ऐसो नवमें सुपन रानी त्रिसला निहार्‌यो है ॥ ११ ॥

दसम सरोवर वर्नन ॥

पूरन सलिल स्वच्छ अच्छपरतच्छ तामें लच्छ मच्छकच्छन कौ केलिथल प्यारो है। कंजरुक मोदवन घन जामें फूलि रहे झूलि रहेभौंर झौंर सोभाभरि ढार्‌योहै ॥ हंसराज हंसकुंज सारस वलाक कोक सोक तजि रमत चहूंघां सुक सार्‌यो है। ऐसो सरवर वर सर मानसर नाहिं दसवां सुपन रानी त्रिसला निहार्‌यो है ॥ १२ ॥

ग्यारवैं छीरसागर वर्नन ॥

पूरन अपार पारावार जे उदार सिंधु तुच्छ से लगत ऐसो स्वच्छ सोभा भार्‌यो है। तरल तरंग अति तुंग के अभंग भंग भौंरन की भीर तें गंभीर नीर वारो है॥ तिमि से तिमिंगल से नक्रवक्रदन्त जामें दीसत दिगंत लौं न अंत पार पार्‌यो है। ऐसो छीरसागर उजागर अनन्त वन्त ग्यारवैं सुपन रानी त्रिसला निहार्‌यो है॥ १३ ॥

वारवों विमान वर्नन ॥

मध्य दिन दिनमनि गन कौ सो तेज तेज-मनि गन चित्र तें विचित्र चित्र कार्‌यो है। झझरी झरोखा गोख मोखा अगनित जामैं दीपमान दीपमान हूंतें विस्तार्‌योहै॥ विविधि विवुध वधू

नाटक निपुन गन गंध्रपन गान तान मन मोद भार्योहै। ऐसो सो विमान कविमान कन्नजानि सकै बारवें सुपन रानीत्रिसला निहार्यो है॥ १४॥

तेरवैं रत्न रास वर्नन॥

हीरन को हीर मानौ मानिक कौ मन पुपराग कै पराग पानी पन्ननकौ गार्यो है। लील की लुनाई लालड़ी की ललिताई चन्द्रकान्ति की चमक लैकैं अतर निकार्यो है॥ ताही को बनाय ढेर कंचन सुमेर को सो दगन खुलत तीखे तेज को पसार्योहै। ऐसो रत्नरास के उजास कौ प्रकास आज तेरवें सुपन रानी त्रिसला निहर्यो है॥ १५॥

चौदवें निर्धूम अग्नि वर्नन॥

जोत की घटासी तेज पुंज को छटासी सीम लटा की जटा सी जाकी दीपति उज्यारी है। वनमें दवासी नीर निधि वाड़ वासी सुद्ध दाहक हवासी यों अरूप रूपवारीहै। हवि बीज भूमि निकलङ्क निरधूम जाकी तिहूं लोक धूम झूपि रही दुति कारी है। उन्नत उदोत ऐसी अमल अगिन जोति चौदहैं सुपन रानी त्रिसला निहारी है॥ १६॥

चौपाई॥

ऐसें गज नृप सिंघरु रमा। फूलमाल उडुपति अर्नुमा॥
ध्वज घट सरवर छीरनिधाना। वर विमानमनिचयदुतिवाना॥
निर्धूमानल चौदह सुपने। लपे जबे त्रिसला दृग अपने॥
ते सब मुख में आइ समाने। ऐसे जब त्रिसला ने जाने॥
जगे भाग सोवत तें जागी। अति आनन्द हरष रस पागी॥
अति उत्साह मोदमय भई। अपने भागि की वलि गई॥
उतर सेजतें आनंद भारी। गज गतिह्वै पतिपास सिधारी॥
देखि दरस अतिसरस ललामा। जोरिदुहूं करकियो प्रनामा॥
पियप्रति अधर सुधारस खोले। मधुर वचन अमृत से बोले॥

पहिले सुपन स्वरूप ना कही। फिर पूछी पति मानौं सही ॥
इन सुपनन कौ फल है कैसो। होय कौन इनतें पुनि जैसो ॥
सो प्रभु मोपै बेग बखानौं। नहिं उत्तमफल तासौं जानौं ॥
सुनिपियतियमुखकी प्रियबानी। कै सुपननचिंतन करि जानी ॥
हरखित ह्वै तियसों तब कह्यो। यह अति आनंद जातन सह्यो ॥
अलभ लाभ तुमकों कछु ह्वै है। तीन लोकनहिं सुजस समै है ॥
धर्मसंधानधन तन मनजनसुख। नवनिधिहैं निधिहैं सिगरौं दुख ॥
अति उत्तम गुन निधि सुत पैहौ। जासौं अति आनंद सुख लैहौ ॥
कुलदीपककुलमौलिमुकुटमन। कुलकमलनरविकुलकमलविमलवन ॥
अति सुकुमार उदार चारु तन। रूपसील गुनवान विचच्छन ॥
सुन्दर सुघर सुछद सुखसागर। धर्म धैर्य नौ जग्य उजागर ॥
सूर बीर नर बीर धीर गति। दान बीर पर पीर हरनमति ॥
जो तुमभाख्यो अपनो सपनौं। ताकौ फल ऐसो सुत निपुनौं ॥
गज सौ धीर बली वृष जैसौ। सिंह प्रताप धर्म श्री कैसौ ॥
फूलमाल सो सौरभ साली। ससिसमनन सुभसुजस बिसाली ॥
रवि प्रताप परसिद्ध ध्वजासौं। मंगल रंगल कमल प्रभासौं ॥
सुन्दर विमलकमलसर वरसौं। अति गंभीर छीर सागरसौं ॥
रत्न रासि समगुनगनसाली। अमलअगिनसमतेज विसाली ॥
यह संछेप सुनन गुन जानौं। यातैं सहस सहसगुन मानौं ॥
यौं पिय पैं तियजब सुनि पायौ। रोमरोम प्रति आनंद छायौ ॥
अम्ब कदम्ब फूल जिमि फूले। पुलकि रोमतन मुद अनुकूले ॥
प्रनयविनयकरिपियहिनिहोर्यो। प्रकरकरनकौं करसिरजोर्यो ॥
बिदाहोय रंग महल पधारी। गजगामिनिभामिनिपियप्यारी ॥
बैठि कुसुम सुख सेजपिछारी। अपने मन तब यहै बिचारी ॥
मति फिर आवै नींद दृगन में। नहि मनलागै अशुभसुपननें ॥
यातैं अब जागतही रहिहैं। गुरु पद देव ध्यानसुख लहिहैं ॥
ह्यां रानी यौं रैन बिताई। ह्यां नृप अपने मन यों ठाई ॥

अधिकारी सब विधि के बोले । तिनसों मधुरवचन नृपबोले ॥

अथ सभा वर्नन ॥

सभा सदन सद सजकरलीजे । सभासदन कों सजन कहीजे ॥
प्रथम पुहुमि सब झारिबुहारौ । छौनि बिछौन बिछायसंवारौ ॥
जे अतिमृदुल मनोज्ञमनोहर । मोलअमोल बिचित्रविविधवर ॥
दर दर पर दर परदा बांधो । दिव्यकनकगुनगुनितसुनाधो ॥
कनक सलाका मीना कारी । अतिपरदा चिक लेहु संवारी ॥
छितते छात छाय पट रूरो । मोलन महंगो मालन पूरो ॥
जाके चहूं किनार किनारी । चपला ज्यों झलके जरतारी ॥
ताके चहूं कोर दुति दमके । झीनी झुनड़ो झालर झमके ॥
मनिमय दिव्य सिंहासनलावो । सभा सदन के मध्य बिछावो ॥
औरौ आठ स्वच्छ भद्रासन । दिस ईसान धरो गमसासन ॥
झीने चित्र ओट पट माहीं । एक सिंहासन धरो तहांहीं ॥
चन्दन अगर मलागिर गारो । छिरकिछौनि सौरभविस्तारो ॥
धूप दान भरि सुभगसुधूपो । विविध सुगंधितधूप नधूपो ॥
सुरभिसुमन दमदिमनि बिथेरौ । अलिअवली जहंलहि बसेरौ ॥
ऐसें जब राजा फुरमायो । अधिकारिनकेमन सुदछायो ॥
आज्ञा सिरधरि तुरत सिधारे । अब अपने अधिकार सुधारे ॥
नृपहु कह्यो सो सर्वविधिकीनो । बिबिधबिचित्रसरसरस भीनो ॥
ऐसे में निसि निघटी सारी । प्रात पूर्व पहर्पारी पारी ॥

अथ प्रभात वर्नन ॥

पुनि प्रभात की सोतिउज्यारी । फैलिपरी दसदिसि दुतिवारी ॥
जिमि कलगोरव मधुर सुहाये । भयोंद्विजननिमिलिसोरमचाये ॥
कमलकुलेकुमुदिनि कुंभिलानी । सुरभि समीर मन्दसियरानी ॥
नर्दमान दमदावन लागे । सुख सय्या तें नृपवर जागे ॥
प्रथम मंगल के सदन सिधारे । अमित होय फिर श्रमनिरवारे ॥
कोमल अनल कनक कपवारन । अंग चमंग करे सुकुमारन ॥

पुनि उष्णोदक मज्जन कीनों । मज्जनकरितन सज्जनकीनों ॥
कटितट अरुन वरन पट धार्यो । उत्तर पट दुड कंचन डार्यो ॥
चरन कटक कर चूरा रूरे । रहे रतन मय फवि छवि पूरे ॥
हार हमेल कण्ठ कण्ठी छवि । बाजूबन्द रहे बाजू फवि ॥
माथें मुकुट जड़ित मनि राजे । कानन कुण्डल अतिछविछाजे ॥
सुन्दर मुंदरी अंगुरिन सोहै । पहुंचन पहुंची अति मनमोहै ॥
वसना भरन दिव्यसुर लायक । तेसब पहर फबे नर नायक ॥
जबे सबै सज सजि नर नाहर । रंगमहलतें निकसे बाहर ॥
छत्र चमर गहि लये खवासन । वैठे आय जटित सिंघासन ॥
मंत्री सेनाधिप गन नायक । दूत भंडारी सब गुन लायक ॥
गनक चिकित्सक कविजनरूरे । एकएक तें सब गुन पूरे ॥
सब कर जोरैं सन्मुख ठाढ़े । सबअति प्रीतभीत भय गाढ़े ॥
तहं नृप सुप्पन अज्ञा दीनी । जेसुपनरथ प्रगय अति झीनो ॥
लावौ बेगि सुरथ सुनि धाये । आठ चतुर पाये ते लाये ॥
श्रीफल करले नृपसों भेटे । नृप दरसनतें सब दुख मेटे ॥
नृपहूं कीते अति मन माने । सब सप्रीत सादर सनमाने ॥
प्रथम सजे वसुभद्रासन ते । आठों वैठे नृप सासन ते ॥
त्रिसला दिव्य ओट पद माहीं । वेठि बरासनज्यों छवि छाहीं ॥
दोऊ कर फल फूलन भरिकै । द्विज सुप्पन कै आगे धरिकै ॥
विनयअनयअतिसदहितधार्यो । फिर सिंघासन अंगीकार्यो ॥
तब नृप सुपन विवस्था कही । फिर ताकोफल पूछ्यो सही ॥
चिन्तन करितिनसबन परस्पर । यथा शास्त्रबोले सब द्विजबर ॥
सुपनागम द्वासप्तति सुपने । तिनमें तीस कहेअति निपुने ॥
ताहू मैं चौदह जे कहे । जिन माता बिन और न लहे ॥
चक्रवर्त्त माता हूं पेपे । पै अति मन्द वरन सो देपे ॥
वासुदेव जो गर्भै आवै । सात सुपन तिहिजननी पावै ॥
अरु बलदेव मंडलिक माता । चार एक देखे सुख दाता ॥

तातें यह निहचै हम जाने। जिन वर त्रिसला गर्भ प्रमाने॥
ऐसो सुत नहिं भयो न होई। दई देहगो तुम कों सोई ॥
गर्भ मास नव मास व्यतीते। साढ़े सात दिवस पुनि बीते ॥
अंग उपंग संग गुन पूरो। मान प्रमान सुभग अंग रूरो ॥
मन रञ्जनव्यञ्जनलच्छन युत। तुमलहिहौ ऐसो अद्भुतसुत॥
चक्रवर्त्त दस दिस में ह्वै है। जन धन जन अवनीनसमहै॥
सुनि राजा रानी अति हर्षे। धन मन गन सुखनपर वर्षे ॥
बहु वसु वास रासि तिहि दीने। आस पुराय विदा ते कीने ॥
त्रिसलाहू पति आयसु पाई। मुदमय अपने सदन सिधाई॥
जिन अवतार जानि सुरराई। धन अधिकारी लये बुलाई॥
तिर्यक जृम्भक देव सुनामा। तिनसों कह्यौ इन्द्र सुखधामा॥
जहं जहं भूमें है धन भारो। स्वामी सत्ता रहित उज्यारो ॥
सो सब महा निधान लियावो। सिद्धारथ नृप घर पहुंचावो ॥
सो आज्ञा सुरपति ने दीनी। उन सिरधार यथाविधि कीनी॥
अन्नधनजनअननादिकसर्वसिधि। विविधिभांतिकीरिद्धिनवोनिधि॥
गज हय रथ भय सेना भारी। सेनाधिपअगिनित अधिकारी ॥
ऐसी बढ़त सम्पति अधिकाई। दम्पति नृप नृपतिय घरछाई ॥
तब [illegible] निज धारे। जो अबकें सुत होय हमारे ॥
[illegible] धरि नाम बुलावें। लखि अतिमङ्गलआनंद पावें ॥
[illegible]रमधि उदर विचारी। अति दुख पावे मात हमारी ॥
[illegible] हलिहैं तदुखमातहि। मुहिविशेषचहियतयहिभांतहि॥
[illegible] चित अचल ह्वै रहे। सो लहि मातअपितदुखसहे ॥
[illegible] जब मातन लह्यो। रोय तबै यों अलिसों कह्यो॥
[illegible] दई निधि मों छिन गई। कहा करों अब कैसी भई ॥
किन [illegible]नों गर्भ हमारो। जीव प्रानके जीवन प्यारो ॥
कौन क्रिया यह आड़ी भई। गर्भ चेतना जिन हरिलई ॥
घोर कठोर विषय रस पागे। कर्म पाछले भवके जागे ॥

ऐसें विलपति तरुननि गनी । छिनछिनकलपसमानविताानी ॥
अवधिज्ञानकरि श्री जिनजाना । जननी ननमननरनसन माना ॥
तब भगवान अचलव्रत तजिकें । फरकनलगे मातहित भजिकें ॥
जब छह मास गर्भ के भये । पंद्रह दिन ता ऊपर गये ॥
जिन मन में तब निहचें कीनों । मात पिता हितदढ़व्रतलीनौ ॥
गहें नाहिं गुरु दिच्छा तोलों । मात पिता जगजीवें जोलौं ॥
गर्भ चेत जब जननी जान्यो । भयो मोद मंगल मनमान्यो ॥
सुख सोवत जागत हित पागी । रक्षा करन गर्भ को लागी ॥
दिपन अहार विहार जिनेका । सब तजि दये एकतें एका ॥
जिन जिनवरतनमनअभिलापे । ते सब परिपूरन करि रापे ॥
इक दिन मनसा उपजी ऐसें । इन्द्रानी श्रुति कुण्डल जैसें ॥
दिव्य अलौकिकसुरमन गनमें । जो पाऊं तो करौं करन में ॥
सुरपति अवधिज्ञान करिजानी । जिनजननीहित यहमनठानी ॥
खत्रियकुण्ड पास सुखदाई । इन्द्रपुरी इक इन्द्र बसाई ॥
तहां बसे सुरपति सम्पति लै । सुरतरु गोमनि परिपूरन कै ॥
नृप सिद्धारथ जब यह जान्यो । सेन साजि चढ़िसंगर ठान्यो ॥
सुरपति नरपति सों भय नाना । दुसह युद्धलहि प्रथमपराना ॥
सब वैभव सेना भट लूटा । सुरपतितिय श्रुतिभूपनछूटा ॥
सो त्रिसलाढिग भट लै आये । ताहि पहिरि मनमोद बढ़ाये ॥

अथ महावीर जन्म कल्यानक ॥

गर्भ दास वासर जब बीते । सुभ नव मास आय परतीते ॥
साढ़ेसात अधिक दिन तापे । चैत सुदी तेरस तिथि आपे ॥
नखत उत्तरा सुभ फागुनी । मुद मंगल में सुरनर मुनी ॥
सातों ग्रह निज उच्चस्थाना । जनमसमयजिहिसुभफलनाना ॥
दोप रहित सुभ समयसुहायो । जो जिनजन्म जोगजगजायो ॥
जिन श्रीमहावीर भगवाना । जनमलियोगुनरूप निधाना ॥
जिहिनिसिमहावीर जिनजनमे । देवी देव मुदित ह्वै मनमे ॥

देव लोक तें भू पर आये। सब देवन के भये बधाये ॥
दसदिसिविमलप्रकासप्रकास्यो। व्योमबिमाननतें तम नास्यो ॥
आनंद मगन सकल सुरवृन्दा। व्यापकक्कहकहसबदअमन्दा ॥
धनद निदेसित अनुचर धाये। कनक रजित की रासें लाये ॥
बसन आभरन रतन अमोले। सुरभिफूलफल अमलअतोले ॥
चन्दन चूर कपूर धूर लै। परिपूर्यो नृपनगर वृष्टि कै ॥
सुरभिसुसीतल सुगति बयारी। सरस परस इन्द्रियसुखकारी ॥
थल जलरुह बनउपबन फूले। अलिकुलकलनवरव अनुकूले ॥
कोकिल केकी कूकन लागे। तरुफरभर धर झूंकन लागे ॥
चेत अचेतन तन मुद छायो। छिनक नारकिनहू सुखपायो ॥
भूम्यौ भई भार भय हीनी। बसु बसुमती प्रकटकरिदीनी ॥
अध ऊरध दिस विदिसन वारी। आठ आठ प्रति दिसाकुमारी ॥
अध ऊरधअरुविदिसाकी सब। चारि चारिसअमिलिछप्पनतव ॥
दसों दिसा तें मुद मय धाई। सिद्धारथ नृप आलै आई ॥
प्रथम प्रनत जिनवरके पागीं। अब अपने पुनि कारजलागीं ॥

अथ छप्पन दिग देवीकृत उत्सव ॥

एकन करिहग पल्लव बुहारी। पहुंदिस पुहुमी झारि बुहारी ॥
इकन कनकमय जल भर झारी। एकन सींची पुहुमी सारी ॥
एक स्वच्छ कर दरपन लीने। इक बीजन करमें कर दीने ॥
एक छत्र चामर कर धारी। इक स्नान नीर अधिकारी ॥
एकन धूप दीप कर लीनो। एकन नाल बधारन कीनो ॥
नाल दबाइ धारि भुव भीतर। रत्न रासि राखी ता ऊपर ॥
सो सनमान करि गान परस्पर। गई असीसत अप अपने घर ॥
ऐसो उत्सव सुर मङ्गल मय। छप्पन दिगदेविन कीनौजय ॥

अथ चौंसठ इन्द्र उत्सव ॥

अब चौंसठ इन्द्रन मिलि जैसो। कियो महोच्छो वरनौ तैसौ ॥
जिहिछिनजनमेंजिनवर स्वामी। जिन जन गनके पूरन कामी ॥

सुर इन्द्रनके आनन डोले। हरिन गमेसी तुरतैं बोले ॥
घोष सुघोष प्रगट कौं कीनौं। वर्गअनान रजिसाजनवीनौ ॥
जोजन लाप जासु विस्तारा। तापर सुरपति होय सवारा ॥
पटरानी सन्मुख तिअ आठा। दिव्याभरन वसनठठि ठाठा ॥
वांये सामानिक सुर नायक। देवी देव दाहिने लायक ॥
पाछे सात सेनपति सोहैं। सुर समूह तुरमय नन सोहैं ॥
अप्सर गंध्रप किन्नर के गन। नृत्य गानगुन ज्ञान जानजन ॥
सिगरे सुर समूह संग सुरपत। खत्रिय कुण्ड नगर पहुंचेतत ॥
प्रथम प्रनाम नामि सिरकीना। सकन खाइ जिनवरकरलीना ॥
लै सुमेर कौं कियो पयानौ। ततछिन तिहिंथलपहुंचेमानौ ॥
देवलोक गृहपति व्यन्तर के। चौंसठ इन्द्र मिले सुरवर के ॥
मिलि रचना कलसनकोकीनी। कनक रजित मनिमंरसपीनी ॥
एक कोट इक लाख सवाई। तिनकी संख्या तहां वताई ॥
लैसव नीर छीर निधि भरिलर। चौंसठ इन्द्र लिये अपनेकर ॥
उद्यत भये स्नान हित सिगरे। हाथनलिये जड़ित मनिगगरे ॥
पंचम आरा आगम के गुन। संसय सरज्यौ सुरपति केमन ॥
सिसुतनअतिसुकुमार सुभावन। क्योंसहिहैयहभारअमितघन ॥
सो सब मनकी जिनवर जानी। श्रुतिमतिअवधिज्ञानकेज्ञानी ॥
चरन अंगूठा धरनी चांप्यो। मेरुधेर सह पुहमी कांप्यो ॥
जलथलअनलअनिलनभसारौ। हलचलखलभ हमचघोपसारौ ॥
देवि देव अहिगन गंधर्वा। भये सबै विसमय मय सर्वा ॥
अवधि ज्ञान तब सुरपतिदेखा। जिन प्रताप अपने मन लेखा ॥
निज अग्यान जानि सुरनायक। जिनवर चरनगहे सुखदायक ॥
अहो नाथ अपराध छमीजे। सो निजजानदुकहूं लीजे ॥
वार वार विनये जिन स्वामी। छमाकरी जिन पूरनकामी ॥
लियो उठाय अंगूठ अवनि तें। सिथ्योहुल्योसव कम्पधरनितें ॥
पुनि प्रनाम सुरपति तहंकीना। स्नानक्रिया मेंफिर चितदीना ॥

अच्युतेन्द्र पहिले जल ढारें । आन इन्द्र सुर पुनि पधरावें ॥
पुनि ईसान इन्द्र निज कारें । जिनवर कों बैठाय निहारें ॥
चारि वृषभ तनधरि देविन्दा । आठ शृङ्गकरि सुभग तुरिन्दा ॥
निरमल जल जिन वरपर ढारें । करि अभिषेक भरें सुखभारें ॥
पुनि निरमल कोमल पटप्यारें । जिनतनपोंछि अंगोछिसुधारें ॥
पुनि कपूर कस्तूरी केसर । चन्दनले जिन तन लेपन कर ॥
नव अंगनि की पूजा साजें । चरन जानु कर कुहनी राजें ॥
कन्ध सीस भालरु हिय कूपें । येई जिनवर अंग अनूपें ॥
तिनमें तिलक देइनव बारी । कुसुमांजलिप्रतितिलक सवांरी ॥
पुनिवर सुरतरु कुसुम समूहन । पूजेंअतिहितकरिजिनवरतन ॥
अमलकमल कोमलकरुदलसे । पट पहराये निरमल जलसे ॥
पुनि कल कनकरचितचितवहने । रतन खचित पहराये गहने ॥
फूल माल तापर पहिराई । सुरभि धूप धूपें सुखदाई ॥
पुनि नैवेद निवेदन कीनों । घण्ट मङ्कु करि नाद नवीनों ॥
अष्ट मङ्गलिक सन्मुख अरचे । स्वस्तिक घट भद्रासन चरचे ॥
श्री वत्सांक नन्द आवर्तो । संपुट मत्स्य युग्म सुख कर्त्ता ॥
और आठवां दरपन जानें । अष्टमंगलिक ये परमानें ॥
वर मनि मानिक हीरा मोती । जिनकी जगमें जगमग जोती ॥
नवविधि रतन जतन करि तिनके । रचे मंगलिकसन्मुख जिनके ॥
श्रीफल पूग आदि फल नीके । सन्मुख धरिथी जिनवरजीके ॥
नृत्य नाट्य गुन गान तरंगा । चंग मृदंग उपंग अभंगा ॥
पुनि आरती उतारें वारें । तापर राई लोन उतारें ॥
मंगल दीप वारि पुनि जिनकी । सत्रह भेदी पूजा तिनकी ॥
जिनवर मज्जन सज्जन करिकैं । लाये जहं त्रिसलासुखभरिकैं ॥
प्रथम स्वापनी निद्रा हरिकैं । पुनिप्रनाम जिनजननिहिकरिकैं ॥
कोरिन कंचन वरषा भरिकैं । कोरिअसीस जोरि करकरिकैं ॥
सुरसुरपति सब सदन सिधारे । मंगल मोदें भरेमन भारे ॥

अथ नृप मिद्धान्य कृतोत्सव ॥

भोर भये ज्योंहीं नृप जागे । पुत्र जनम आनंद रस पागे ॥
अधिकारी सब लये बुलाई । तिनसों नृपति कहे समुझाई ॥
बंदीवान बंद सब छोरौ । मंगन मनतें मुख मति मोरौ ॥
जेतौ जो मांगे तिहि तेतौ । बिन पूछें दीजो धन वेतौ ॥
खारी पाली गज अरु बटखर । तोल प्रमान सबै बढ़ती कर ॥
बीथी बगर डगर नगरी के । चौपथ चार चौक सिगरीके ॥
चंदन अगर अरगजा घोरौ । सींचि सींचि सब सौंधे वोरौ ॥
धुजा पताका घर घर बांधौ । दर दर मंगल तोरन साधौ ॥
चन्दन चरचित कलस धरावौ । कदली खंभन तें छवि छावौ ॥
कुसुम समूह माल फूलन की । मत्त मधुप मन अनुकूलनकी ॥
ठौर ठौर सत कोरि बखेरौ । धूप द्रव्य धूपौ सत वेरौ ॥
नरतकनट भट भाड़भगतिया । गनिकादिक जेहिं सुभगतिया ॥
अप अपने गुन गन विस्तारैं । जिहि लखिकें रीझैंरिझवारैं ॥
तंत्र वितंत्र सुपिरघन आवज । बीन वेनु कठताल पखावज ॥
तालतान गुन गान मान सुन । होहिं मोदमयसबजनपदजन ॥
अज्ञा लहि अधिकारी धाये । सजि सब सौंज खवर लेआये ॥
नृप सुनि जगेभाग लौं अपने । सफल भये रानी के सपने ॥
सैन ऐन तजि सैंसदन मैं । श्रमकरिहरिअति आनंदमनमैं ॥
उबटि अरगजा वासित तेलन । करि अभ्यंग अंगसुख झेलन ॥
न्हायअंगोछिपोंछि तनकोमल । अमलअमोलवसन पहिरेकल ॥
पहिरे गहने चहने जियके । मुकता हार चार छवि हियके ॥
मुकटकटककुण्डलकटि मेखल । कण्ठी कण्ठलसत मुकताहल ॥
पहुंची मुंदरी छला विराजे । अंग अंग अतिफविछवि छाजे ॥
मंत्रि मुसाहिब सेनप साथा । सभा सदन आये नर नाथा ॥
बार भंडारन के सब खोले । दान जाचकन दये अतोले ॥
जातैं प्रथम खवर सुनि पाई । सवालाख तिहिं दई बधाई ॥

[illegible] मंगल में कुल व्यवहारा । जाति कर्म आदिक छविभारा ॥
[illegible] छठे दिन कीनो । अति आनंद रंग रस भीनी ॥
[illegible] भये सूतक दिन बीते । न्योते न्यात लोग करि प्रीते ॥
[illegible] सज्जन जिवनारा । जेवन लगे नगर जन सारा ॥
मधु [illegible] पकवान मिठाई । जो जाके मन भाई पाई ॥
घेवर [illegible] खुरमा खाजा । कहैं परस्परतचि सों खाजा ॥
[illegible] सेव [illegible] । मधुर जलेबी अमरित झरती ॥
[illegible] पोहि कचौरी पूरी । रूपन स्वरी स्वादन पूरी ॥
[illegible] अति [illegible] । कवि जन वरनि न पावें पारा ॥
विविधि भांति के व्यंजन नीके । [illegible] मिले भावते जीके ॥
कचरी केर करौंद [illegible] । [illegible] विविधि सयाना ॥
दूध दहीकी कही न [illegible] । [illegible] ॥
और कहां लों अधिक [illegible] । [illegible] पत्र पसीजे ॥
[illegible] सब जिवनार [illegible] । वर [illegible] पुनि दये खवाई ॥
[illegible] लवंग सुपारी [illegible] । [illegible] कपूर सुमेला ॥
[illegible] । [illegible] तर करि सनमानी ॥
[illegible] । [illegible] सुलसन सबन [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] जो जाके मनमानी ॥
[illegible] । [illegible] सब तिन सों लागो कहने ॥
[illegible] । धनधनजनदिनदिनअधिकारे ॥
[illegible] । वर्द्धमान हम अबतें धारो ॥
[illegible] । [illegible] दिन बढ़न लगे दिनजैसो ॥
[illegible] । [illegible] पालन तें निकसे तब ॥
[illegible] । [illegible] गुन दरस परसके ॥
[illegible] । त्रिभुवन [illegible] आये अनुहारन ॥
[illegible] । जिन संगजिनवररमतसदाहीं ॥
[illegible] । [illegible] तरुसोंअरिकै ॥

तिनु सब भय नय भये पाने। कहि गहि फैंक्यो वीर सहाने ॥
[illegible] तन सुरहय तनवन्हि नौ। [illegible] जिन आरोहन कीनौ ॥
[illegible] बलकरियो वाक्यो। [illegible] जिनवर बलधाक्यो ॥
ता पीछे पद अवराय छवायो। देवलोक कौं तुरत सिधायो ॥
[illegible] घटसाल [illegible]। [illegible] विद्या निधि जिनराये ॥
[illegible] अमोल पिन्हाये। उपाध्याय के पाठ लगाये ॥
[illegible] निधि [illegible]। [illegible] सरन्हीं ॥
[illegible] विद्या जरकेंगी। [illegible] जिन जानें तेती ॥
[illegible] धरि द्विज देहा। [illegible] कीयो कठिन संदेहा ॥
[illegible] जिन ऐसो कीन्हों। [illegible] न चीन्हों ॥
[illegible] जिनवरमहिमा। सुनि [illegible] महिमा ॥
[illegible] उपाध्याय गुरु राई। बाल शिष्यके पकरे पाई ॥
[illegible] पितासुनिसुतके [illegible]। [illegible] नयभये [illegible] ॥
जोवनवय जब भये जिनेसा। ब्याहे राज कुमारि सुदेसा ॥
जसुदानाम बाल सुकुमारी। तासौं विषय भोग सुख सारो ॥
वर्द्धमान जिहि भाख्यो माता। महावीर जगसननविख्याता ॥
सिद्धारथ राजा पितु जाकौ। त्रिसलानाम जासु माताको ॥
भाई बड़ौ नंद वर्द्धन कहि। सुपारस्व नामा चाचा लहि ॥
जिहि सुदर्सनानाम बहिनकौ। प्रियदरसना सुता दरसनकौ ॥
[illegible] जिन वर पुत्रीकी पुत्री। तासु नाम जसवती सुहिनी ॥
ऐसे यही धर्म अनुसारकै। वर संपदि संतत सुखकारिकै ॥
जब अट्ठाइस वरस जिनेसा। भये मातपितु सुर लोकेसा ॥
अग्रज भ्राता सौं तब भाख्यो। भई प्रतिज्ञा पूरन भाख्यो ॥
अब इच्छा दिच्छा की मनतैं। सुनडी परत रहत नाहिं तनतैं ॥
वेग नाथ अब आज्ञा दीजै। जातैं जनम सफल करिलीजै ॥
तब अग्रज भ्राता यौं बोले। मधुर वचन अमृतके तोले ॥
सब सोमता तरु माताकी। जिहतैं दुसहमिन्नोनाकतौं ॥

केतक दिन अब धीर धरीजे। पाछैं मन भावे सो कीजे॥
मानी अज्ञा जिनवर स्वामी। जिन जनगन के पूरन कामी॥
दोय वरस तब औरों रहे। तीस वरस पूरे निरवहे॥

अथ दीक्षा कल्यानक॥

देवलोक तें देव पधारे। चारित समै जतावन वारे॥
कहन लगे जयजयजिनस्वामी। छत्रिय धर्म नृपन में नामी॥
आतम तत्व बोध अब लीजे। जिन जनजीवनकौहित कीजे॥
सुनि संसारिक सुख सब जेते। जनधन अन उपवन घनतेते॥
वाज ताज गजराज राज सब। तजिदीने सुखसाजकाजसब॥
कछु कुटुंब कछु दासन दीने। दान छमछरी मैं जे कीने॥
ते अब कहौं धरी छह माहीं। एक कोटि वसुलाख सवाहीं॥
तीन अरब अरु ब्यासी कोरा। अस्सी लाख दान सब जोरा॥
उत अग्रज भ्राता है राजा। दिक्षा समय महोच्छौ काजा॥
नगर डगरसब वगर सिंगारे। धुज तोरन कलसादि संवारे॥
पुनि जिन कों अस्नान कराये। सहस अठोतर कलस ढराये॥
भूपन बसन सरस पहिराये। अतरअरगजनिकरि सुरभाये॥
चन्द्रप्रभा पालकि वैठाये। विविधि भांतिवाजनवजवाये॥
चौसठ इन्द्रन कांध चढ़ाये। खत्रिय कुंड ग्राम मझि आये॥
नगर लोग सब देखन धाये। यौं जब नगर वाहरैं आये॥
उपवन तजि वन घन नियराये। ग्यातखण्ड वन घनजबआये॥
अति आनन्द मोद मन छाये। तरु असोकतर सोक मिटाये॥
पालकि तें पुहमी पग धारे। तन तें भूपन बसन उतारे॥
पंचमुष्टि [illegible] लोच सु करिकें। द्वै उपवास धीर चित धरिकें॥
[illegible]मनिदकेदिन। नखतउत्तराफागुनितिहिछिन॥
[illegible] सुरनवर वानर। विजै मुहूरत मैं ता तरु तर॥
[illegible] इक पट धारयो। सबतजिचारित अंगीकारयो॥
[illegible] ज्ञान तहें पायो। चौथोज्ञान आनि मन छायो॥

सुर कुल कुल कुटुम्ब जन जेते। जिन पद वंदि विदा भयेतेते ॥
पुनि अग्रज सें अज्ञा लेकें। जिनवर विहरे विरहा देकें ॥
सांझ समय इक गांउकुमारा। तहां जाय पहुंचे सुकुमारा ॥
काउसग्ग करि ठाढ़े रहे। आतम तत्व ध्यान धुनि गहे ॥
ग्वाल एक तहं आवत भयो। बैल एक तिहिंथल धरि गयो ॥
वगरि गयोसो चरत विपिनमें। ग्वाल आय पूछी वर जिनतें ॥
मौन दसा जव ज्वाव नपायो। जान्योचोर क्रोध अति छायो ॥
वहुताड़न तरजन तिन कीनों। सहनसीलजिनसवसहिलीनो ॥
मनुतनु धरि सुरपति तहंआयो। तिनग्वालहिंस्मुझाइछुड़ायो ॥
सिद्धारथ नामा इक देवा। छांड़ि करन जिनवरको सेवा ॥
सुरपति आप सुधाम सिधाये। द्विजवहुलालय जिनवरआये ॥
पायस पारन कीनो जिहिं घर। कुसुम वृष्टि कीनो सवसुरवर ॥
ऐसें आठ मास तप धारा। करि सुभसुच्छअहारविहारा ॥
दोयज्झंत नामा तापस घर। पावस आदि पधारेजिनवर ॥
सुहोमित्र नृप सिद्धारथ को। अति सनमाने जिनतीरथको ॥
भरि चौमासा रहिवे कारन। विनयोमान लियोजिन तारन ॥
तहं जिनतप करिध्यानलगायो। सुरन आय चन्दन तन लायो ॥
ताकौ सौरभ दस दिस छायो। अलिकुलचहुंदिसआयलुभायो ॥
पुर तरुनी सौरभ रस पागीं। जिन सैं चन्दन मांगनलागीं ॥
जवजिनवर कछुज्वावनदीनौ। तियनसुतनजिनतनघसिलीनौ ॥
तिहीं वरस वरसात नवरस्यौ। तव सव लोगतहां कोतरस्यो ॥
कह्यो साध यह कितते आयो। जातैं भयो सकल अनभायो ॥
लोक अहिततापसहूं मनधरि। भयो विमनतापसहूंजियकरि ॥
सोजियजानिजानि जिननायक। पांच अविग्रह लीने लायक ॥
विनाप्रीति कहुं रात न रहनौ। काउसग्गतपकरि निरवहनौ ॥
करतल भोजन मौनी रहनौ। नहीं जुहार गृही सैं कहनौ ॥
ऐसो पांच प्रतिज्ञा गहिकै। दुस्सह लोग अविज्ञा सहिकै ॥

ग्राम नामा है हि तें थलतज्यो । तिहरिअस्थि नामा थल भयो ॥
सूलपानि तह जअकुमतिगाति । अस्थिरचितमठमांहिदुष्टगाति ॥
तहैं तासु पूरव भव कथा । सुनो ताहि वरनों श्रुति यथा ॥
धन सारथ बहू विहवारी । ताको वैल थक्यो गति हारी ॥
तब तिन ताहि वैल गासनो ले । ग्रामाधिप को दियो सौंपिकै ॥
और बहुत धन ताको दीनो । वृषरक्षाहित सो तिन लीनो ॥
पै ता वृष की सार न कीनी । धन सब खाय करीमति हीनी ॥
भूख कष्ट सहि वृष मरिगयो । सोई सूलपानि जक्ष भयो ॥
पूरव वैर तहां तिन सुधि कर । मरीकरी पसु नरकी घरघर ॥
दुपद चारि पद अगिनित मरे । लोक उपद्रव तें सब डरे ॥
तब इक गनकतहां चलिआयो । नगर लोग सबपूछन धायो ॥
तब तिन एक उपाय बतायो । मरन जिलेनर नार न पायो ॥
तिन सबहन के अस्थि मगायो । वृषाकार इक मठ बनवायो ॥
सकल प्रजा मिलिस्थापिकीनो । भयो सुदेस उपद्रव हीनो ॥
तादिन तें तामठ के माहीं । रह न सकै कोऊ निसिताहीं ॥
तहां वसे निसि जिनवर नामी । जद्यप लोगन वरजे स्वामी ॥
तहं तिन जच्छ बड़ो भयदीनो । गजअहि बीछीवपुधरिलीनो ॥
निष्फलभयोवलछलकरिथाक्यो।जिनपदपरओकुमतिमदछाक्यो॥
जोरि हाथ अपराध छमायो । ताहि प्रबोधिआप अपनायो ॥
चरम रैन कछु रहत सवारे । दस सुपने जिन नाथ निहारे॥
प्रथम पिसाच दुष्ट इक मारा । सितकोइलपुनिअसितनिहारा ॥
फूलमाल गो वरग सुहायो । पदम सरोवर सिंधु सुहायो ॥
दिनकर मेरु आंत तरु लिपटी । योंदससुपन नींदलखिउचटी ॥
जनपद जन जिन महिमाजानी । सब मिलि वंदे पूरन ज्ञानी ॥
अस्थि ग्राम चौमासा रहे । मौन वृत्त सब असहन सहे ॥
गनकएकजन सनमुख आयो । तिन विवादकरि सोरमचायो ॥
मौनि प्रतिज्ञ जानि सिद्धारथ । जिनतन पैठ्योसाध्योस्वारथ ॥

करि विवाद सो गनक हरायो । हारि दीन ह्वै विनय सुनायो ॥
स्वामी तुम साधन में नामी । जहां रहो तहं पूरन कामी ॥
ऐसो यह थल तजि दूजे । कोउ न मानै कोउ न पूजै ॥
यह सुनि जिन कछु वचन न कहंते । जानि अजोगि विहारे तहंते ॥
सोमदत्त द्विज मित्र पिता को । तहां मिले मारग मै ताको ॥
हाल विहाल निहारि जिनेसा । कृपा दृष्टि चितये सुभ वेसा ॥
तब उन अपनो दारिद भाख्यो । जातें सुतिकान नहिं राख्यो ॥
सो सुनि सोचे जिनवर स्वामी । हों निर्ग्रंथ यह अर्थी कामी ॥
इहि थल पाहि कहा यों दीजे । आन निरामी कैसे कीजै ॥
देव दूष पट आधो जाच्यो । दारिद दन्द हिये तें काढ्यो ॥
ताकी कोर सुधारन द्विजवर । वस्त्र गयो लै तांती के घर ॥
तिन तांती ताको कहि साधो । जो लै आवै दूजो आधो ॥
ऐसो साधि देहुं मैं तो पट । लाख मोल पावै सो नहिं घट ॥
लोभ लागि सो द्विज फिरि धायो । श्रीजिनवर स्वामी सनुहायो ॥
पै अति लोच सकोचन पाग्यो । मांगि सकै नहिं लालच लाग्यो ॥
तिहिं छिन कंटक गुच्छन माहीं । उरझ्यो देवदूष पट ताहीं ॥
जिनवर तिहिं फिरि लखि तहं त्याग्यो । तिहिं लीनों द्विज लालच लाग्यो
लोभ सबल जिन जायो दुरघट । क्यों न दियो पहिलें तिगरो पट ॥
पंचम आरो निकट संभाल्यो । जिहिं कुल मयगुन मो नन चाल्यो ॥
यों विचारि जिनवर जिय जाने । आगम काल साध पहिचाने ॥
क्रूर लोभमय होहिं कालबस । मोनन लोभ वस्त्र कण्टक फस ॥
कंटक क्रूर दिव्य पट धार्यो । लोभ परिग्रह करन विचार्यो ॥
तेरह मास दिव्य पट सोई । जिनवर तन आच्छादन होई ॥
तदनन्तर भगवन्त जिनेसा । लसे रहन विन वसन सुवेसा ॥
करतल दन आहार विहारा । काय नेह तजि आतम धारा ॥
सहैं सहन असहन उपसर्गा । जो कियतिय पसु नर सुरवर्गा ॥
पुनि जिन विहरि तहांतैं आगे । कनकवालुका भुव तट लागे ॥

गांउ कनकखलढिगजिनवज्जे। पहुंचे तहं के लोगन बरजे ॥
आगे रहें दृष्ट विष विषधर। दीठ विषहिं तेजो मारतधर ॥
चंड कोश ता अहि को नामा। कालकराल क्रोधको धामा ॥
याहू की पूरब भव भावी। भाखैंजिनअहितन उरआवी ॥
इक दिन काहू नगर मझारी। पावसरितुमुनिजिन व्रतधारी ॥
गये गोचरी हेत गृही घर। मरो मेड़की दबि मुनिपगतर ॥
शिष्य लखि सोबोल्यो गुरु सों। देहु स्वामि मिच्छामदुकड़ो ॥
गुरुन मानिजवनिज थलआये। फिर चेला सुइभाव चिताये ॥
फिरि संध्या पड़कमन समेहू। गुरुन कहो मिच्छामिदुक्कड़ं ॥
तीन वेर चेला वर गुरुसों। भाखिरह्यो नहिं मानीधुरसों ॥
अरु तापरअति क्रोधपसार्यो। मुनि चेला ओघालैं मार्यो ॥
वच्यो भाजि चेला गुरु क्रोधी। मरि तीजे भव भयो विरोधी ॥
तापस ह्वै इक बाग वनायो। सो फल फूलनतें अधिकायो ॥
इकदिन राजकुंअर तिहिंवारी। आय एक फल तोर्यो भारी ॥
तापस लखिअति तामसछायो। लै फरसातिहिं मारन धायो ॥
क्रोध छाय दृग अंध सुकर्यो। अंध कूपमें सो गिरि मर्यो ॥
मरि इह भव सो तापस तयो। चंड कोश दृग विषधर भयो ॥
अभयद निर्भय ह्वै जिननाथा। ताही पे गये करन सनाथा ॥
तहं तप करि जिनविनईनोमा। अहि घरतेंकढ़िजिनतनडसा ॥
दूधरुधिर ह्वै वदलें निकसा। वदनकमलजिनवरकरविकसा॥
ज्ञानरतन अहिकों जिन दीना। तिनसुनिसमझिचरनगहिलीना॥
आन तजे दिन करि संथारा। देव लोक आठवें सिधारा ॥
नागसेठ घर पुनि जिननाथा। करिपारनतिहिंकियो सनाथा ॥
पुनि भगवत तहां तें विहरे। श्वेतंविका नगर में ठहरे ॥
नृपति प्रदेसी नाम तहां तिन। महिमा मानी जानिनाथजिन ॥
आगे विहरि सुरभि पुर पैठे। उतरन गंग नाव पर वैठे ॥
वैर भाव सुरनाग कुमारा। लग्यो आय तहंवोरन वारा ॥

पूरव भव तिन सिंह सभागा। वासुदेव ह्वै जेहिजिन मारा॥
सम्बल कम्बल देवन ताकों। वरजि जताईजिन महिमाकों॥
तिनहूं की पूरव भव करनी। सुनि वरनौं जो आगमवरनी॥
मथुरापुर जिनदास महाजन। तिननिजरूपजोरीइकदिनछन॥
किहूं मित्र कों मांगे दीनो। तिन अतिवाहिकरीवलहीनो॥
मरन वार नवकार सुनायो। मरि सुभ ध्यान देवपदपायो॥
संवल कंवल तिनको नामा। सब देवन में भये ललामा॥
पुनि जिनवर जग विहरनलागे। पांच सुमतिमितिकेरस पागे॥
क्रोध मान ममतादिक त्यागे। स्वच्छइच्छतजिविहरनलागे॥
निरालंब जैसे आकासा। निरस्नेही ज्यों पवन विलासा॥
सारदजलकी नाईं निरमल। मरजादानतजतजिमिनिधिजल॥
खड्ग विपान मान एकाकी। ससि सम ताप नजामें वाकी॥
गुपत सकलइन्द्रिय कछुवालौं। चारित भर वाहक वरदा लौं॥
द्रव्य न देसन भाव न काला। प्रति बन्धेनहिंजिनजनपाला॥
ऐसें जग विचरैं जिन स्वामी। जिनजन गन के पूरन कामी॥
पंचरात नगरी मैं वसैं। इकनिसिगांव मांझ वसिनसैं॥
विष चन्द्रनतन मनिसमजाकैं। जीवन मरन समान सुताकैं॥
ऐसैं जिन जन पारंगामी। महावीर वर भगवत स्वामी॥
विहरैं विचरैं विपन नगरमैं। अमल अचैल अवोल डगरमैं॥

घनाक्षरी॥

मानकों न मान अपमान अपमानको न राग हूं सैं राग न विरागहै विराग सैं। सूरजसे सूर पूरे सोमजैसे सोम रूरेधूरेहूं अधूरे हैं सहन जाकोजाग सैं॥ धराधर जैसेधीर वीरवलवीर जैसे छीर नीरनिधि से गंभीर चीरत्याग सैं। ऐसैंविहरत वीत राग महावीर स्वामीजाको यों महातम है आतमको लागसैं॥

चौपाई॥

तदनंतर दूजे चौमासे। राज ग्रही नगरी मैं थासे॥

[illegible] मासखमन वासा कीना। पारन विजयसेठ घर कीना॥
मंखलिसुतगोसालकताहिंठां। जिनमोहनलाग्योलखिमहिमां॥
जिनवर तवतिहिं [illegible]भागे। तिनभाख्यो हैं शिष्यतुम्हारो॥
[illegible] वालुका पुर जिन आये। नंदन द्विज पारन करवाये॥
तो उपनंद तासु को भाई। गोसालक तहं भिच्छा पाई॥
कुत्सितान्न लहि कोप अधीनो। स्राप ताहि ऐसो कहि दीनो॥
जो मो धर्म्माचारज सांचो। तो तुवघर जागे अगिनाचो॥
स्राप देत ताको घर जर्‌यो। क्रोध छाय ऐसो खल कर्‌यो॥
मंखलसुतनिजकृतअभिमानी। भयोछ्यो मद गरव गुमानी॥
चम्पा वृद्ध गांव में आये। चौथी वरषा तहां बिताये॥
जीरन सेठ निमंत्रन दीना। अभिनव के घर पारन कीना॥
लाढ देस में पुनि जिन आये। काउसग्ग तप ध्यान लगाये॥
तब तिहिं काल ग्वालदक आई। जिन मग [illegible] रंधाई॥
वरखा [illegible] जिन तहां [illegible]। पुनि छठी वरखा जब आई॥
पुरी भद्दिका जिन [illegible]। आठ मास रितु तहांबिताई॥
[illegible]। [illegible] नाम [illegible] पुनितिन॥
[illegible]। गोसालक उपसर्ग बढ़ाये॥
[illegible]। [illegible] व्यंतरी गन तें॥
[illegible] जिनवरकौं। गज्ज ग्रहो पुनिगये नगरकौं॥
[illegible]। तवग अनारज थल में छाई॥
[illegible]। गांउ कुकुरन डस्यो एका॥
[illegible] भागी जटा सीस पर वांधे॥
[illegible]। तापसतिहिं शिरशिर परधरे॥
गोसालक [illegible]। सो तपसो ताऊपर तरज्यो॥
[illegible] नापैं। जरन लग्यो गोसालक जातैं॥
[illegible] जिन [illegible] ज्वाला। तेजोलेश तजीतिहिं काला॥
गोसालक कौं [illegible] बचायो। तव गोसाळ चेत चित पायो॥

सिद्धारथ सौं पूंछि तबै उन। साधी सिद्धि तेज लेशा पुन ॥
पुनि सावस्ती नगरी आई। दसई वरखा तहां बिताई ॥
पुनि पोढाल नगर में जिनवर। काउस्सग्ग तप करिठाढ़े धर ॥
जिन बल प्रबलप्रसंस प्रसंगा। इन्द्र सभा में भयो अभंगा ॥
तहं अभव्य संगम सामानिक। चहो परिच्छा करन अचानक ॥
तिहिं थलआयएकनिसिमेंतिन। बीस किये उपसर्ग सहेजिन ॥
अहि गजसिंहआदितनुधरि कें। अमित उपायकियेतिनडरिकैं ॥
डग भर डिगेनहींजिन स्वामी। भवभय जलनिधि पारंगामी ॥
षोंछमास लों सहि उपसर्गा। चूके नेक नहीं तप वर्गा ॥
तबतिहिंइन्द्र आयअतिदूस्यो। सोनिजदोष मानिसुखसूस्यो ॥
नीत रीत हित तिहिं सुरराई। मेरचूल कों दियो पठाई ॥
वृद्ध गुवाल तहां इक आयो। वृत छ मास पारनौ करायो ॥
सुसमापुर पुनिआये जिनवर। चातुरमास ग्यारहैंतहं कर ॥
चमत्कपात भयो ताही थल। कौसंबी मैं रहे महाबल ॥
तहां पौस बदि पड़िवाके दिन। जिनवरलियोअविग्रहसो सुन ॥
उड़द बाकला सूप कोन सें। इक पग बाहर एक भौन में ॥
राजकुमारी मूंड़ मुड़ायें। पग बेड़ी अरु नागे पायें ॥
दासी ह्वै रोवत मधि दिनमैं। तीन उपास तासु पारन मैं ॥
जो ऐसें हमकों विहरावै। भाव भगति करि तो मनभावै ॥
ऐसैं कृत प्रतज्ञ ह्वै जिनवर। पारन हित नित विचरैं घरघर ॥
दैवजोग तैं नृपति सथानिक। दधिबाहन नृप तिन कीनौ दिक्क ॥
मारि तासु की चंपानगरी। बन्द लूट कीनी सो सिगरी ॥
परी एक भट कर तिहि रानी। गही विकल ह्वै जात परानी ॥
तिहिंभटतिहिबदननरनिहार्‌यो। काटिजीभतिनमरनसुधार्‌यो ॥
बची तासु कब चंदन बेटी। चंदमुखी गुन रूप लपेटी ॥
ताहि मूढ़ भटी बेचन लाग्यो। धनासेठतिहिलखि अनुराग्यो ॥
मुहु मांग्यो ताकौं धनदैकै। बाल चंदना मोल सुलैकै ॥

आयो घरै लाय तिहिं राखी । हितमित वानी तासों भाखी ॥
मूल कुमूला सेठ सिठानी । अतिकलहातिहिंलखिअनखानी॥
कोपि तासु कों मूंड़ मुड़ायो । पग वेड़ो दै कैद करायो ॥
तीन दिना लौं भूखी प्यासी । कैदै माहिं रही सो दासी ॥
चौथे दिनतिय अनत सिधाई । सेठ खबर दासी की पाई ॥
काढ़ि वंद तैं बाहिर आनी । आश्वासितकरिकहिमृदुबानी ॥
उड़द बाकला प्रस्तुत पाये । सूप कोन में ताहि दिवाये ॥
आप लुहारहि बोलन धायो । वेड़ी काटन हित मगवायो ॥
ऐसैं मैं जिनबर तहां आये । दौरि चंदना दरसन पाये ॥
अपनौ भाग्य विचारि सभागी । उड़द जिनै विहरावन लागी ॥
तव जिन निज परतज्ञ विचारी । सब पाई जो चित में धारी ॥
देस काल ज्यों के त्यों पाये । रुदन विना सव भाव सुभाये ॥
यह चित धरि जिनफिरेविरागी । बाल दुखित ह्वैरोवन लागी ॥
तवफिर फिर जिन पारन लीना । चंदन तियहिं कृतारथ कीना ॥
वेड़ी पगन आपही टूटी । वेनी सिर पर लांवी छूटी ॥
सकल देव गन लहिसुख हरखे । बारह कोटि सोनैया बरखे ॥
सो धन राजा लैन विचारी । देव गिरा तहं प्रगटी भारी ॥
यह धन तेरे काम न आवै । जब चंदन तिय दिच्छा पावै ॥
ताकों होय महोच्छव जवहीं । यह धन खरच होयगो तवहीं ॥
मृगावती राजा की रानी । सो चंदन की मासी जानी ॥
तिन चंदन कों लई बुलाई । अपने ढिग राखी सुख पाई ॥
चातुरमास बारवें जिनवर । चंपानगरी पहुंचि रहेकर ॥
मास तेरवें बन तप कीना । पूरव भव वैरी तिन चीना ॥
जाके कान माहिं तिहिं भव में । तपत धात डारीही दव मैं ॥

अथ कथा ॥

ताकी कथा कहौं विस्तारी । वासुदेव भव जिन अरिहारी ॥
एक समय नटनाटक सुनतें । आवनलगी नींद सुख गुनतैं ॥

सेजपाल सों तब उन भाखी । इनकों अब नाटकतें राखी ॥
यों कहि सोये नरवर स्वामी । पै वरजे नहिं उन धुनि कामी ॥
नाटक धुनि तें प्रभु जब जागे । अज्ञाकोप लेखि रिस पागे ॥
ताके कान माहिं तिहिं काला । धातु औांट डारी नरपाला ॥
अबकें तिनतन ग्वालाकों धरि । वेर पाछिलो सुमिर कोपकरि ॥
तीखी मेख काठ की गढ़िकै । जिन तपसमयआयतिनवढ़िकै ॥
कानमाहिं गहि बल करि ठोकी । वेर वदलिसवज्योंकी त्योंकी ॥
तिन पापी ऐसो दुख दीनों । तिन वेदन कीनों तन छीनों ॥
तहतें जिनवर विहरि सिधाये । वेद खरक नामा घर आये ॥
तिनअतिवल करिकीली काढ़ी । जातें अधिक वेदना वाढ़ी ॥
काढ़त सवद कियो जिन भारी । गिरि दरके धर धरकी सारी ॥
ह्यांलों सब उपसर्ग वदे जे । भरे संपूरन ते जिनवर के ॥

अथ महावीर के वलज्ञान कल्पानक ॥

ऐसैं बारह वरस पुराये । ता ऊपरछह मास वढ़ाये ॥
पंद्रह दिन ता ऊपर वीते । तीन पहर हूं तहां विवीते ॥
दसमी सुदि वैसाख मास तिन । विजयमुहूरतसुव्रत नामदिन ॥
उत्तर फागुननखत जोगमसि । गांउब्रि नकांतिहिंवाहरवसि ॥
साल तरु तरें रिजुसरिता तट । आतम तत्त्व ज्ञान पूरन घट ॥
द्वै उपास उत्तर तरु हेटे । चौविहार करि उकडूं वैठे ॥
तहं अति उत्तम ज्ञानन माहीं । केवलज्ञान लह्यो तिहिं ठाहीं ॥
ता दिन तैं अरिहंत कहाये । सुरमुनिमनुमनजान सुहाये ॥
भीत ओट की नहिं कछु छानी । ऐसे जिनवर केवल ज्ञानी ॥
जीव गतागत भव कायाथित । मनवचकायकरमकोपरिमित ॥
गुपत प्रगट सब जानन हारे । यों विचरैं जिनवरभयडारे ॥

अथ समो सरन वर्णन ॥

जबै भये जिन केवल ज्ञानी । सब जीवनकी छानी जानी ॥
तब ज़ृंभक नगरी मैं आये । सब देवन के भये वधाये ॥

चौंसठ इन्द्र चारि विधि के सुर । महिमा लागे करन ज्ञान गुर ॥
समोसरन जिनवर हित रच्यो । एको सुख जात नहिं नच्यो ॥
आदि जिनेश्वर हित हूं ऐसें । सुरन रच्या हों बरनों तैसें ॥
बारह जोजन मिति ही ताको । द्वै द्वै कोस ऊन की बाकी ॥
बाईसों जिन लों या क्रम सों । रचयो समोसरन अनुपम सों ॥
तेईसों पारस जिन तारन । पांच कोस को रचितिन कारन ॥
महावीर स्वामी जिन हेता । चार कोस को कियोतिन जेता ॥
सुथल समान स्वच्छ चाँतिनो को । परिधाकार भावतो जी को ॥
पुनि वैमानिक सुर तहं आये । तिहि थल पर गढ़ तीनि बनाये ॥
प्रथम रजित दूजो कंचन को । तीजो [illegible] रतनन को ॥
रजित दुर्ग में कूटक्ल तिनने । बैर भाव [illegible] बसें सु तिनने ॥
दूजे कंचन दुर्ग [illegible] । [illegible] कल्पाधिकारी ॥
रतनन को [illegible] गढ़ [illegible] । [illegible] निहि ठाहीं ॥
बारह [illegible] भाखें । [illegible] बारह भाखें ॥
[illegible] । [illegible] मुनि बिस्तारी ॥
[illegible] । अरु [illegible] चारि विधि सुरवर ॥
[illegible] । साध [illegible] अरु व्रत धारी ॥
[illegible] । भई पर [illegible] बारह तहं तब ॥
[illegible] को [illegible] । अप अपनी थल बसें तहांहीं ॥
[illegible] । [illegible] अरु [illegible] कति बद्दिसबिय ॥
[illegible] । तिनकों [illegible] चौथी दिसि थोजें ॥
[illegible] । [illegible] दुर्ग बसें गुन आगरी ॥
[illegible] के [illegible] । चारि चारि चहुं दिसि दरवाजा ॥
[illegible] मोहें । सुर नुनि मनु गन के मनमोहें ॥
[illegible] मनजोती । स्वच्छ मढ़न मनि मानिक मोती ॥
[illegible] बागें । पच रंग [illegible] निचुर तिसी क्यारी ॥
[illegible] भरि उमड़ी । चहुं दिसि तें अलि अवली झुमड़ी ॥

वर सरवर तरवर घन मांहीं। ठौरठौर सुठि स्वच्छ तहाहीं॥
चहुं दिसिजाके मनि सोपाना। फूले विमलकमल कुलनाना॥
भौंरभौंर जिनके रस राते। मधु मकरंद छके मदमाते॥
राजहंस के वंस अनेका। कुंज पुंज संकुल दल सेका॥
अच्छअतच्छ स्वच्छजलमाहीं। मच्छकच्छ परतच्छ दिखाहीं॥
निसिदिनदिनमनिगनद्युतिचहिकै। कोकसोकछाड़तसुखलहिकै॥
यों अनेक जलचर जलपच्छी। वरवलाक सारस छविअच्छी॥
सुखसनाज कारज जग जेते। नृत्य नाट्य गंध्रव गुन तेते॥
विबुध वधू अप्सर किन्नरवर। मिलि नाचतगावत मधुरे सुर॥
तंत्र वितंत्र सुपिर घन आवज। बीन वेनु कठताल पखावज॥
इन्हें आदि दै जेजे वाजे। ते अगिनत तहं बाजिविराजे॥
और कहां लौं कवि जन वरनै। होयन अमितगुनन कौनिरनै॥
सुरन रच्यौ ऐसो सुखदायक। थल अनूपजिननायकलायक॥
जिन जिनके अतिसै चोंतीसा। सोवरनों अब बिस्वा वीसा॥
तन विन सेद विमल विनछाया। सुरभि सुलच्छसुलच्छनकाया॥
छीर वरन स्रोनितरंग जिनको। समचतुरस्त्रसंस्थ तन तिनको॥
अमितवीर्यअतिप्रिय हितवानी। वज्र नराच रिषभ तनमानी॥
छेम सुभिच्छ आठ सैकोसा। गगनगामि जनमित्र अदोसा॥
चतुरानन सबजिय वध वारक। सबउपसर्ग रहितजिनतारक॥
वरविद्येश केश नख समता। कवलअहाररहित जिनगमता॥
अनमिखअरध मागधीभाखा। फूलि फरेसव रितु तरुसाखा॥
दर्पनसम भुव जन मुदकारी। वहै सुरभि अनुकूल वयारी॥
भुवकंटक रज कांकर हीनो। सुरभि सलिलवरसनरजभीनो॥
कनककमलरचनाजिनपगतर। नमितसकलअनतरुवरकरभर॥
अमलअकास और दसआसा। सुरगन आह्वारन गुन खासा॥
धर्म-चक्र आगें चलि राजै। अष्ट मंगलिक सन्मुख छाजै॥
चौंतीसौं अतिसय ये जिनके। कहौं अष्ट प्रतिहारज तिनके॥

अरु अशोक त्रय छत्रविराजनि । भामंडलसुर दुन्दुभि बाजनि ॥
चंवर सिंघासनदिव्यधीरधुनि । कुसुमवृष्टिसुर करत तहांपुनि ॥
येई आठ कहे प्रतिहारज । चारिअनंत सुनो सुखकारज ॥
ज्ञान अनंत अनंते दरसन । बल अनंत त्योंहीसुखबरसन ॥
ऐसे जिन जिनके हें ये गुन । तिनकी महिंमाबरनों सोसुन ॥
समोसरन की मध्य मही में । जाकी महिंमा प्रथम कही में ॥
कनकदंड मनिखचित बिराजे । जोजन सहस उच्चछबि छाजे ॥
तापर पंचरंग धुजा बिराजे । इन्द्रधनुष जाको लखि लाजे ॥
तहं अशोक अरु शोक निवारें । तिहिं तररतन सिंघासन ढारें ॥
छत्र तीन सिर ऊपर सोहै । बदन प्रभा भामंडल मोहै ॥
ता थल महावीर जिनस्वामी । तेठे कनक सिंघासन नामी ॥
चारयो दिस करि चार बदनतें । मेघगिरा गंभीर सघनतें ॥
धर्म बखान बखाने जानें । सब समझें अपनी भाखामें ॥
पैं यह धर्म देसना बानी । सुनी गवन पै किहूं न मानी ॥
सो तब गाहि अबंगी भयौ । प्रथम प्रकरन में सो कह्यो ॥
जिनवर सो थल [illegible] बिचारयो । पावापुरी नाम तिहिं धारयो ॥
[illegible] जिन [illegible] । संयम पाप सेन बनठहरे ॥
[illegible] । गौतमरुद्रजक्रतुकियोबिसाला ॥
[illegible] । जाकें शिष्य अनेक सुलच्छन ॥
[illegible] नामा । बिद्यासागर गुनगन धामा ॥
[illegible] पागे । अब अपने अधिकारन लागे ॥
[illegible] । समासरे जिनवरतबतिहिंथल ॥
[illegible] गढ । मिल्यो परखदा बारहबर बढ ॥
[illegible] लागे । सुरगन सब आये गुन पागे ॥
[illegible] बिचारी । इहां जज्ञ आवत असुरारी ॥
[illegible] सिधारे । द्विजवर कोप भरे अति भारे ॥
[illegible] भागे । जिन बंदे अनगन असुरारी ॥

यातें याके तट अब जैये। विद्या वाद विवाद हरैये ॥
ऐसें कहि तहं से द्विज नायक। संग कंद्र्पे जिन्द सुलायक ॥
सज्यो सरन पल पहुंचे आई। जहां मिले सब सुर समुदाई ॥
जिनदर्स्महिमा लखिभयदाये। लखिअमृतअद्भुतरसछाये ॥
तबतें द्विज मन यहैं विचारैं। जो जन मन संदेह निवारैं ॥
तो हम इनकी महिमा जानें। जिनवर महावीर कर मानें ॥
ऐसें जब उन हिय विचारी। जिनवर मन की जानी सारी ॥
पहिलें स्वागति करि सतकारे। पुनिसन्मानि नाम दे भारे ॥
कह्यो तुमारे उर अंतर जो। सो हम सब जानें सुनियेसो ॥
तीन दकार चहत तुम भाख्यो। अरप तासुको पूछन राख्यो ॥
सो हम तुमकों देहिं बताई। दया दान दम तीनो भाई ॥
इन्द्रभूति सुन विस्मित भयो। चकित होय अदभुतरस छयो ॥
जिन महिमा उन निहचै जानी। जैनी दिच्छालें सनमानी ॥
चारों दसों विप्र जे रहे। सिप्यन सहित जैन पथ गहे ॥
भये ग्यारहौं गनधर नामी। सबप्रतिबोधे जिनवर स्वामी ॥
एक मुहूरत माहिं पढ़े सब। द्वादस अंगी चौदस पूरब ॥
तिनमें इन्द्रभूति जो रहैं। तिनहीकों गोतम जिन कहैं ॥
सो गोतमस्वामी महिमा सुन। अदभुत रूप उदार चारगुन ॥
जावजीव जिन छठतप कीना। लब्ध अठाइस जिहिं आधीन ॥
आठसिद्धि अरु चार ज्ञानजुत। इक केवल बिन सबगुन संयुत ॥
इकदिन जिनसों पूछ्यो गोतम। क्योंकरिकेवलमिले महातम ॥
वीतराग भाख्यो गोतम सों। करौ अष्टपद तीरथ क्रमसों ॥
तद्भव सिद्धि तुम्हैं तहं मिले। सुनि गोतम अष्टापद चले ॥
अपनी लब्धन के बल चढ़े। पहुंचि तुरत तिहिं ऊपर चढ़े ॥
प्रथम जुहारि सकल थल सोधे। तिर्यक्जृम्भक सुर प्रतिबोधे ॥
जब उत तैं उतरन चित दीने। पंद्रहसे तापस सिख कीने ॥
जिहिं जिहिंगोतमदिच्छादीनो। तिनतिनसबनहानपथचा‌ही ॥

तक न ज्ञान गोतमें होई। तब जिनवर सों पूछ्यों सोई॥
[illegible] सों भाख्यौ। तुमसोपंचमति राग जुराख्यो॥
ताहि तजो तौ उपजै ज्ञाना। बिन त्यागेकछुनरे न जाना॥
तब गोतम भाख्यौ वर्जिनसौं। छुटै न राग तुमारो मनसौं॥
[illegible] कह्यो गोतम से। तुमहूं अंत होय हो हम से॥
ऐसें कहि कहि अति हित पोखे। गोतम स्वामीहू संतोखे॥
चातुरमास जिने जहं जिनवर। रहे सु अब भाखों इकठेकर॥
अस्थिगांव पहिलें चौमासे। महावीर जिनवर तहं थासे॥
चंपा पृष्ठि चंप चिन कीने। तहां तीन चौमासे कीने॥
वानिज गांव विशाले मांहीं। बारह बरखा रहे तहांहीं॥
राजग्रही नगरी तब आये। चौदह चातुरमास बिताये॥
मिथिला में षट कीने स्वामी। दोय भद्रिका पुरी सुधासी॥
आलंभिका में एकै बरखा। श्रावस्ती इक निर्ज बरखा॥
[illegible] माहीं। चौमासा भरि रहे तहांहीं॥
[illegible]। अंतएक बरखा बसि तामें॥

अथ महावीर मोक्षकल्याणक॥

[illegible]। बसों पाख सातवां बीतें॥
[illegible]। साढ़ेबारह चारित लहिकें॥
[illegible]। केवल वत्सर तीस बितायो॥
[illegible]। उत्सर्पिनी काल वय भये॥
[illegible]। हाड़ा कोड़ एक बारे के॥
[illegible]। तीन बरस चौमास हुन में॥
[illegible] दिन रहतें। पावानगरी माहिं निवहतें॥
[illegible] मंडी में। स्वाति नखत संगम ससिहीमें॥
[illegible] नाम रहतं। चंद्र नाम संवत्सर कहतं॥
[illegible] मासा। पाव नंदवर्द्धन कहि खासा॥
[illegible] दिन देवानंदा। तिहीं निमा को नाम अमंदा॥

चौं विहार ह्वै वास सुथारे । सूर उदय तैं प्रथम सकारे ॥
पदमासन सुन आसन ठाने । चंपावन अध्यैन बखाने ॥
सुख विपाक मंगल फल भाखैं । पंचावन अध्यैन सुसाखैं ॥
दुखविपाक ताकौं फल कहते । चत्तिस ध्यैनन पूछै वहते ॥
तिहिं छिन ताही काल वसता । जिनवर महावीर भगवंता ॥
मुकि जानकौं सुसमय लह्यौ । तब तहं इन्द्र आन यौं कह्यौ ॥
ज क्यौंहू करि यह छिन वीतै । घरी होय यह काल वितीतैं ॥
ना तरु दुष्ट भस्मग्रह छैहै । सकलअसुभफलबल दलसैहै ॥
याकौ फल द्वैसहस वरसलौं । साध साधवी जती सतीकौं ॥
अधिक मान सनमान न होई । जबलौं वरस न वीतै सोई ॥
सुनिबोले सुरपति सौंजिनवर । सुरगिरचालनसकौधरनिपर ॥
पै यह समौ न टाल्यो जाई । जोकरमनथिति वांधि वनाई ॥
यौं कहि सब वंधन तजि दीनै । आठौं कर्म तजे स्वाधीने ॥
सिद्धिवुद्धि जुत मुक्ति सिधारे । सकलभीम भवभय निरवारे ॥
तव सुर चंदनमय चय कीना । अगिनकुमारअगिनरचिदीना ॥
वायकुमार अगिन परजारी । मेघ कुमार सींचि चय डारी ॥
उत्तर संसकार वरजिन कौं । ऐसैं भयो भयो दुख जन कौं ॥
नव मल्ली नव लच्छ आदिदे । मिले अठारह नृपता थलपे ॥
तनतव तिहिंनिरवानरैनदिन । पोसाकरिवितयोसोदिनछिन ॥
ग्यान जोतजिन सिद्ध सिधारे । फैलिगये जग मैं तम भारे ॥
तब सब लोगन दीवा वारे । नाम दिवारी तबतैं पारे ॥
पुनि भगवंत मुक्ति तदनंतर । सुच्छम जीवकंथुआ धरपर ॥
उपजेतिहिं लखिप्राय साधुजन । त्यागिआपअन त्यागिदयेतन ॥
शिष्यन सौं गुरु कहनलगे यौं । अवचारितदुस्साध्यभयोज्यौं ॥
मुक्ति समैंनिजलहिजिन उत्तम । दिच्छा हित पठये हैगोतम ॥
तिन निरवान समै देवन तैं । पूछयौतुम कितजातसदन तैं ॥
देवन जिन निरवान सुनायो । सुनि गोतमअतिसैंदुखपायो ॥

[illegible] नम। जिनम गणनउयोंजिनको नम॥
[illegible] दर केवल। केते जिनवर पाद महानल ॥
[illegible] जिन रक्तो। वरनि कर्णानिकरौ वरनरती ॥
हैं [illegible] नर [illegible] प्रवीने। ताबें एक पांन दिन होने॥
[illegible] नव नोघ तिपानी। छकमास द्वै छह द्वै सामी ॥
[illegible] मासि तप कीना। पाप [illegible] सुहीना ॥
[illegible] पाप व्रत धारा। द्वै सै उनतीस [illegible] ॥
[illegible] भद्र होय दिन कीने। महा भद्र दिन चारि प्रवीने ॥
भद्रसर्वतो दिन दस कीने। [illegible] लीने ॥
इक दिन ऊन तीनसौ [illegible]। पारन दिन [illegible] ॥
[illegible] बारह वरस भयेमिल ॥
[illegible]। [illegible] केवल पद पाये ॥
[illegible] लीना ॥
[illegible] दस चारि हजारा ॥
[illegible] जिनजनश्रावक परमानो ॥
[illegible] जे श्राविकागिनाऊं ॥
[illegible]। यहसबजिनजनवनपरिवारा॥
[illegible]। केवल ज्ञानि सात सै बरनर ॥
[illegible]। वयक्रीय सै सात बखानी ॥
[illegible] में पांचा। [illegible] समझें जे सांचा ॥
[illegible] न हारें। ऐसे वर वादी संचारें ॥
[illegible]। मुकत गये सु सातसै सही ॥
[illegible] में साथी जिन हाथा। चारित लेके भई सनाथा ॥
[illegible] आठ में भये। जिन परिवार कहे सुख छये ॥
[illegible]। कहियत जिनवरके अवतारा ॥
इक [illegible] कहावे। दूजे परिया यान्त वतावे ॥
[illegible] पाटलों। चल्योमुकतपथकहियुगांतलों ॥

चारि वरस केवल ग्यानन्तर । चल्यो मुकतमारगतदनन्तर ॥
सु परियांत कृत भूमि कहीजे । इहू भूमि जिनवरहि पतीजे ॥
तदनन्तर नोसौ अस्सी जन । भयो बड़ो दुरभिच्छ भयावन ॥
सबविच्छेदभयोलखिजिनजन । लिखन लगे पुस्तक तवतेधन ॥
नौसे नवति वरस त्रय वीतें । कई कहें तव लिखे सप्रीतें ॥
इक वाचन वलभी नगरी है । देवढगन छत्र सतन करी है ॥
दूजी वाचन मथुरा नगरी । करी कन्दला चारज सिगरी ॥

इति श्री महावीर स्वामी अधिकारसंपूर्ण ॥

श्रीपारसनाथ अधिकार ॥

दोहा ॥

अब श्रीपारसनाथकेपांचोंजे कल्यान । च्यवन जनन चारित्र अरु परम ग्यान निरवान ॥ जब जब इन पांचोंन को भवमें भयो संजोग । तब तब नखत विसाखही मांहि रह्यो ससिजोग ॥ पारस पूरव दस जनम जेजे भये निदान । तिनतिनको वरनन करों कछु संछेप वखान ॥ पोतनपुर अरविन्द नृप विप्रपुरोहित तासु । कमठ और मरुभूत द्वै पुत्र पुरोहित जासु ॥ मरुसुन्दरी वसुंधरा नाम वाम छवि जाल । तासों कमठकुपूतने करीकुगतिकुचाल ॥ सो सुनि मरु मरु भूति लों भयो प्रीति रस हीन । करीकठिनताडन भयो मन करि कमठ मलीन ॥ सकुचिसोचि संसारतजि तिन तप कीनोजाय । सहज सरल मन मरुगयो तिहि तट दोप खिमाय ॥ पैतिन तापस कमठ ने मारयो मरु करिक्रोध । यहै बिप्र सुत दुहुन को भयो प्रथम भवबोध ॥ सो मरु मरि हाथी भयो कमठ भयो मरि सर्प । वैर सुमिर ता दुरद को डस्यो सर्प करि दर्प ॥ यह दूजौ भव फेर गज मरि सुर भयो सुजान । कमठ जीव अहि मरि भयो नरक निवासि निदान ॥ यह तीजो चौथो भयो मरु विद्याधर रूप । निकसि नरक तें कमठ फिरि भयो भुजङ्गमभूप ॥ डसिविद्याधर कों वहुरनरकनिवास्योसोय ।

...चायग मरि बारवें सुरपुरको सुर होय ॥ भयो द.
पुनि मरु मरि नृप होय । ...ज्र नाभि नामा लियो चा...
मरु घोय ॥ भयो भील भव कमठ तिन नृपहि मारि मरि...
नरक गयोभव सातवें नृप सुर भयो सुसील ॥ चक्रवर्तमरुजीव
पुनि भयो भये भव आठ । कमठ जीव ह्वै सिंघ पुनि हन्योताहि
मुनि पाठ ॥ पुनि मरु सुर ह्वै कमठ लहि नरक नवें भवफेर ।
मरु जिय पारसनाथ ह्वै प्रगट्या दसवें हेर ॥

अथ श्री पारसनाथस्वामी चवन कल्यानक ॥

जंबु दीप थल भरत मेंपुरी बनारस धाम । अस्वसेन नृप राज घर रानी वामा नाम ॥ तासु कूप में चेतबदि चौथ भयें अध-रात दसम देवता लोकतें मरु जिय च्वे विख्यात ॥ नृप तिय वामा निहि समय कछु सोवत कछु जाग । नखत बिसाख जोग लहि सुपन चौदहों लाग ॥ सुरगम्ब घी आउ तजि तजि अहार निवहार । गर्भरूप त्रयग्यानजुत भयो गर्भआधार ॥ चवनसमय ...नी चवि जान्यो जिन ज्ञान । वामा सो सुभ सुपन फल कह्यो सुजानन आन ॥ बाम सुपन फल सुनि समुझिनोदानन्द बढ़ाय । करन लगी निज गर्भकौरक्षा अति सुख पाय ॥ गर्भवास केमासनव गयेसवानव बीत । पूस असित तिथिदसमि को नखत बिसाखप्रवीन ॥

अथ श्री पारसनाथ जन्म कल्यानक ॥

...म निर्मथ दीने विदित श्री जिन पारसनाथ । प्रगटि जन्म लै ...की कीनेकृपनगाथ ॥ छप्पन दिसा कुमारि अरु चौसठ इन्द्रन आद । महावीर जिन लौं कियो जनम महोच्छौ चाय ॥ अस्वसेन नृप हूं कियो मङ्गल मोद बढ़ाय । जैसे सिद्धारथ नृपति कियेमहोच्छव चाय ॥ गुनवयविद्याविनयवररूपसीलसुघराय । कुल श्रीपारसनाथ जिन प्रगट भयेसुभ भाय ॥ तीनग्यान करि सहित जिनश्रुति मति अवधि अधार । हरित बरन नव हाथ

वपु भुक्ति मुक्ति दातार ॥ सिसु पौगंडकुमार वय क्रमक्रम भई वितीत । तव तरुनाई तरनि की भई उदय परतीत ॥ नगर कुशस्थ प्रसेनजित नृपति सुता सुभजासु । प्रभावती इहिं नामजिन पारसब्याहीतासु ॥ दम्पतिसुखसम्पतिभरे कारिग्रहस्थबिवहार । विषय भोग सुख भोगि सब चारित पर मन धार ॥ इक तापस पंचाग्नितप साधत लखि जिन जान । ताहिकह्यो रे मूढ़ क्योंसाधत तप अग्यान ॥ यों कहिगहि दा अगिनतैं जरत निकासेदोय । सर्प्प सर्प्पिनी अधजरें मरन लगेलखि सोय ॥ आदि पांचनोकार के पांचो वरन सहेत । असि आउसा विचारि चित तुरत उतायल हेत ॥ दीने तिन्हें सुनायते बोधि देवपद पाय । धरनइन्द्र अहि मरि भयो पदमावति तिय चाय ॥ सो तापस हो कमठ जिय लज्जित ह्वै सकुचाय । मेघमालिसुरमरिभयोधारिवैरहिय भाय ॥ दिच्छा समय दितावने नव लोकान्तकदेव । आयजिनेसर को करी जैनन्दा कहि सेव ॥

अथ श्री पारसनाथ दिक्षा कल्यानक ॥

तवजिनवर संसार तजि दीने वरसीदान । धन पूरन ह्वै हमीकरी अर्थी रह्यो न आन ॥ पुनिएकादस पूस वदि दुपहर दिन तजि राग । दिव्य पालकी चढ़ि पहरि भूपन बसन सभाग ॥ चौंसठ इन्द्रन आदि दै विबुध त्रिविध को भीर । नर नारी सव नगरके संगचले धरिधीर ॥ पुरी बनारस बीच ह्वै निकसि विपिन घन पाय । उतरि अशोक सुतरु तरैं दीनों सोक मिटाय ॥ चौविहार उपवास द्वै सकल सिंगार उतार । पाय विसाखा जोग ससि तजि सब सुख संसार ॥ सहित अहित वर तीनसै उत्तम राजकुमार । देवदूप पटयुत लियो चारित पद निरधार ॥ रहे फेर छदमस्त दिन रैन असी अरु तीन । देव मनुप पशु कृत सहेअति उपसर्ग नवीन ॥ दिच्छाकै दिन दूसरै कियो विहार अहार । पंचद्रव्य वरषा करी देवन महिमा भार ॥ पुनि जिन देस कलिङ्ग

ैं काउसग्ग नव चार। रहे गुहा गिर की गहैं आतम तत्त्व वि-चार ॥ ... नासा तहां एक महागमराज। सुगड मालिककर ... पूजे जिन सिरताज ॥ ...अनसन पुनि मरिभयो सुर कलि ... पहिले भव सो गजहुतो वपुवावनो नरेस ॥ पुनि जिनवर तहतें कियो दच्छिन देस विहार। तापस थल वट वृक्ष तल सांझ काउसगधार ॥ ...य मेघ माली तहां कमठ जीव ...तार। ...न लग्यो उपसर्ग अति पूरब वैर विचार ॥ अहि ... वैताल गज सिंघरूप धरि दुष्ट। बहुविधि जिन भगवन्त को ... दुष्ट ॥ तोऊ जिन दृढ़ ध्यानको छुटो न सहज स-माधि। सो लखि पुनि कोप्यो अधि ...धन लग्यो असाध ॥ प्रलय ...घ ... लाग्यो ... भार। भयो घनो घनघोरि ... ॥ कड़कन लागी बीजुली तड़कन लागी ... धूम ॥ नदीकूप ... जानू कटि उदर उर कण्ठ ... मगन महातप भूप। ... तब धरणेन्द्र पद्मा-... कंपचक्राय ... दिनतीन। रहि ... ॥ ... विचारि ... जिय लीने दोप ... नगरी ... सुधाम। सुबमवसी ... ॥ पुनि जिन गुपत सुतीन अरु ... विहरन लगे जिनजन करैसना-... ॥ ... तीनदिन रैन। चौरासीवीं रात ... ॥

अथ श्रीपार्श्वनाथ ग्यान कल्यानक ॥

चैत कृष्ण तिथि चौथ तिथि नखत विसाखापाय। लहिअपरा-

हत घातहू तर समाधि लगाय ॥ पायो केव...

दह राज प्रतच्छ । इन जिनके कोटे भये गनधर आठ गु...

गुन अरु थाप वसिठ पुनि ब्रह्मचारि कह तीन । कीरत प्रभु

सुजस गनधर आठ अजोन ॥ साथ मन्दा सुभ तहां सोलहस-

हस वखान । सहस आठ जुत तीन सय सुभ ग्रजावको मान ॥

एक लाख चौसठ सहस जिनजन श्रावक जान । तीनलाख सुभ

श्राविका सहस अठावन मान ॥ पंचासत सत सातयुत चौदह

पूरब जान । अवधिग्यान ज्ञानी गने चौदह सैं सुज्ञान ॥

केवलग्यानी सहस इक छसैं वइक्रीवान । साध मुक्तिगामी

सहसदूनो साध्वी जान ॥ विपुल सुमतिधर आठसैं वादीछसैं

सुजान । सर्व्वारथ सिधिजे गये बारहसै ते मान ॥ दुहुं विधि

भूमी अन्तकृत इक जुगान्तकृत होय । दूजी है परयान्तकृत

प्रथम कही सब सोय ॥ तीस बरस ग्रह वास दिन च्यासी निस

छदमस्त । कछुकम सत्तर बरस कुल केवल ग्यान समस्त ॥

सरव आयु सौवरस की पूरन करि जिन जान । लह्योपरमपद

मोख को सोख्य कहौंनिदान ॥

अथ श्रीपारसनाथ मोक्ष कल्यानक ॥

तिथि सावन सुदि अष्टमी निसि निसीथ जिन नाथ । परवत

सिषर समेत पर तेइस साधन साथ ॥ नखत बिसाखा जोग

ससिचौविहारव्रतसाध॥काउसग्गतप लय लह्योपायोमुक्तिअबाध॥

अथश्री नेमनाथ अधिकार ॥

अब बरनौं श्रीनेम के पांचौं वर कल्यान । चवन जनन चारित्र

अरु परम ग्यान निरवान ॥ इन पाचौं कल्यान को जब जब

भयो सजोग । तबतब चित्रा नखतही माहिं भयो ससि जोग ॥

अथ चवन कल्यानक ॥

कातिक वदि बारस सुतिथ नेमनाथ अरिहन्त । सुरसंबंधी

आयु तिथ तजि सो जिय जयवन्त ॥ समुद विजय यादव नृपति

सोरी पुरके मांह। सिवादेवि ता नृपतिकी रानी अति छविछांह॥ निसि निसीथ में चवि कियो गर्भ माहिं तिनबास। क्रमक्रम करि बीते जबै गर्भ सवानव मास॥ सुपनादिक जैसे प्रथम जिनजननी जे पाय। वरनि बखाने ते सकल त्योंहीं भये सहाय॥

अथ श्रीनेमनाथ जन्म कल्यानक॥

सावन सुदि तिथि पंचमी सिवादेवि के कूप। जिन जन्मे श्रीनेम प्रभु सुन्दर सगुन अनूप॥ छप्पनदिसा कुमारि अरु चौंसठ इन्द्रन आय। त्योंहीं मङ्गल मोद मय कियो महोच्छो चाय॥ समुद्रविजय जयवन्त हूं मोद उछाह बढ़ाय। सिद्धारथ नृप ज्यों कियो जनम महोच्छो चाय॥ एक सागर जिन जोर की [illegible] सुरगनि गेह। होंन लगी सुर [illegible] तिन करी परिच्छा एह॥ [illegible] जिन पौढ़े पालने [illegible] अंक भरि ताम। सवालाख [illegible] उत्यो ऊंचो [illegible] प्रकाश॥ जानि जान जिन ग्यान [illegible] मार्ग शुद्ध। सो [illegible] घरमें धरयो कृष्णदेव सो [illegible] आन छुराय [illegible] पायन पारि खिमाय। लै अप[illegible] गयो भयो [illegible] नाय॥ समुद्रविजय जिनके पिता [illegible]। उग्रसेन [illegible] तिनके गोती भाय॥ तिन [illegible] त्यों [illegible] मूलि वैरी कियो सो [illegible] बाम मानकी प्रकृत दुष्टकरि दीन। गर्भ [illegible] मन आनि भये मलीन॥ रूपि सुतहि संदूपमें [illegible]। दै यमुना जल बोरि तिहिं दीनों मथुरानाथ॥ [illegible] पाई वनिकसुभद्र। खोलि देखि सुन्दर सुअन [illegible]॥ सो मांग्यो वसुदेव को उग्रसेन सुतकंस। [illegible] सो वसुदेव प्रसंस॥ राजग्रहीनगरी [illegible]। [illegible] यादौं प्रबल तानगरीको भूप॥ [illegible] वासुदेव पदपाय। भयोसु[illegible]॥ जीवजसा ताकी सुता

बुधि गुन रूप प्रसंस । ब्याहि दई ताकों पिताउग्रसेन सुतकंस॥ ब्याहि ताहि तिन पायबल करि निज बापहि बन्द । मथुरापति पितु राज पर बैठि भयो स्वच्छन्द ॥तिन देवकन्दपकी सुता नाम देवकी तासु । ब्याहिदई वसुदेवको अति हित चितकरि तासु ॥ लघु भ्राता इक कंसको अइमत्तो इहि नाम । तजि ग्रहवास अवास सुख भयो साधु अभिराम ॥ तिन इकदिन निज ग्यान करि होन हार की जान । जीवजसा भाभी निकट कही बात यह आन ॥ गर्भ देवकी बहिनको होय सातवों जोय । सो तेरे भरतारको मारनहारो होय ॥ यह सुनि उनपति पास चलि बिथा सुनाई जाय । सुनि सचिन्त ह्वै कंस तब लै वसुदेव बुलाय ॥ बंधि बचन कहि कपटके बाचा लैंदै साखि । सात गरभ तुम आपने देहु हमैं यहभाखि ॥ सत्य संधि वसुदेव तहं बचनबंध कै नीठ । दए गर्भ सातों नहीं दई बचन को पीठ ॥ जबजब प्रसवी देवकी तबतब लैसो गर्भ । सिला पटकि मारे सकल एक भांति छल अर्भ ॥ भयो सातवेंगर्भ में जब श्रीकृष्ण निवास । सुपन सात लखिदेवकी पूरीआसाथास॥ सिंहसूर ससि अगिन गजधुज बिमानबिख्यात। बासुदेव माता लखत एई सुपने सात ॥ गर्भकाल पूरन भयो भादों बदि बुध वार । तिथि आठैं अधरात को लियो कृष्णअवतार ॥ सोइ गये सब पाहरू खुलि गये सकल किवार । कृष्णहि लै वसुदेव तबउतरे यमुना पार ॥ नन्द गोप घर तासुकी घरनि जसोदा नाम । जनमी पुत्री तिहि समै ताके अति अभिराम ॥ पहुंचतहां वसुदेव धरि सुतलै सुता उठाय। फिरे उतरि इहिबार पुनि निज घर पहुंचे आय॥ भोर भये पहरू जगे न्रपतिसुनाई जाय । न्रप सुनि त्योंहीं सोसुता लीनी तुरत मगाय ॥ देखि सुता ताके तबै छेदे नाकरु कान । भयो कंस मुदवन्त अति ह्वै निहिचिन्त निदान ॥ वासुदेवश्रीकृष्ण अवनन्दसदन केमांझ ।

नवससि लौं नितनित निपट बढ़न लगे दिन सांझ ॥
बालचरित अद्भुत करत हरत मात पित चित्त । लखि दृग हि-
यो सिरात अति वारत तन मन वित्त ॥ इक दिन इक सरवग्य
को पूछ्यो कंस सुचाहि । कहि कोमेरो शत्रुहै जातें मुहिभय
आय ॥ उन भाखो खरमेख अरु केसी वृषभ अरिष्ट । जो इन
सब को मारिहै मारै तोहि सपष्ट ॥ सुनि नृप त्योंहीं तुरत तेउ
इकइक दये पठाय । तेसबमारे सहजही बालचरित यदुराय ॥
जानि कंस जिय संस बढ़ि भयो सोच गय सोय । अनहोनी
होनी नहीं होनी होयसो होय ॥ बहन सुभद्रा कंस की ताको
रच्यो बिवाह । दिस दिस तें आये नृपति जानि स्वयम्बर
चाहि ॥ सुनि सुदमय श्रीकृष्णहूं मथुराचलेउताल । जयपिवलि
दग्जे बिपुल रहे नाहिं नन्दलाल ॥ चलत बाट काली उरग
नाथ्यो पुनि गजमारि । मुष्टिकादि चानूर सबमारे गह्लपछारि ॥
[illegible] पछारिके मार्यो नृपति कंस । सतभामा ताकी
[illegible] ॥ [illegible] तीनमें नामवय सोरह बरसी
[illegible] । [illegible] नृपति अति अभिराम ॥ सब
[illegible] दास [illegible] । [illegible] सबसेवा पदपर
[illegible] ॥ [illegible] कंसकी तब अति
[illegible] । [illegible] गई सहित परिवार ॥
[illegible] कोरिकोध । कालकुमारन
[illegible] अतिताहि [illegible]
[illegible] [illegible] कहि आसु
[illegible] । [illegible] यदुकुल देवि
[illegible] ॥ [illegible] रिछार । [illegible]ातजि
[illegible] सहस [illegible] तहां बसाई द्वारिका चनद
[illegible] । कनक [illegible] भई सुपुरी वरिष्ठ ॥
[illegible] श्री [illegible] । जहसम्पति सरसत

संतत बाढ़ी जादव भौर ॥ रतन कम्बलनको तहां ब्योपारी इक आय । वेचे कछुक दछु लैगयो राजग्रह में लाय ॥ वेचन लाग्यो लखिलयो जीव जसा ललचाय । मोल पूछि विसम्मितभई सवालाख सुनि भाय ॥ उन जो वेचे द्वारिका सो सवकही सुनाय ।सुनिपूरव दुख जगि उठ्योपितुसोंकह्योदुखाय ॥ सोपितु सव भटकटकले गजरथ तुरंग पदात । अमित फौजकी मोजसों कोपिचढ्यो विख्यात ॥ उनहूं तें श्रीकृष्णसुनि जदु कुल कटक समेत । चढ़ि पहुंचे मिलि परसपर रच्यो मच्यो नर खेत ॥ सैन रेनु ह्वै एक तहं भुव उड़ि नभ करि बास । आप छौनि छ्ह रहि गई कोने आठ अकास ॥ किधौं सैनखुर रैनु उड़ि भई धोस की रैन। कृष्णचन्द मुखचंद तहं मनिगन उड़गनऐन ॥ किधौं धूरि धूंधर घने घन घुमड़े चहुंवोर । असि लरजन तरजन तड़ित गज गरजन घन घोर॥ सरसपरसपर वान वर वरसन अमित अपार । सोअखण्ड जलधार की झरी भरीभय भार ॥ स्रोनित सरिता कढ़ि बढ़ी सर भरि उमड़ि अपार । रुण्ड मुण्ड मण्डितरुधिर जल जलचर अनुहार ॥ प्रबल वली वलि वीर लखि जरासन्धि करि क्रोध । जरानाम विद्याप्रवल प्रेरित करी प्रबोध ॥सो विद्या कारनभई रुधिर वमन कैहेत । कृष्ण अनेक अनेकजन जादवभये अचेत॥नेमनिदेखित कृष्णतवअष्टम तप आराधि । प्रतिमा पाय महेन्द्रतें तिहिं प्रक्षाल जलसाधि ॥ सेचन करि सेना सकल लीनी मरतजिवाय । अतिउछाह करि कृष्ण तव दीनों सङ्ख वजाय॥तहांसङ्ख तीरथभयोप्रतिमा थापी सोय। फेरपरस्पर युद्धहित सजिसन्मुख ह्वै दोय॥ चक्र चलायो जोर करि जरासन्धिहरि ओर । कृष्णचक्रायसुताहिफिरि अरि मारयोदरजोर॥चारि कोटि जदु नृपसहस वत्तिसमहलसमेत । महाराजश्रीकृष्णयोंबसे द्वारिका खेत ॥ एकसमैजिनअतुलवल परचन्सुरपतिलोक । चलोमिलिसुर एकसुनिदईपरिच्छाझोक ॥

वाम्योगिर गिग्नार डिगमुर धारापुर एक । करनलग्यो सोवसि
तहांअति उतपात अनेक ॥ द्वारवती के द्वारतेंनिकसि वाहरें जाय।
जाय ताहि राखे पकरि जक्करिदेवता सोय ॥ एक समें वलभद्र
अरु कृष्णहि राखे घेर। मच्यो कुलाहल नगर में वगर वगरभय
हेर ॥ तव रुकमिनि श्रीनेम सोंभाख्यो सनमुख हेर । कहा भयो
कैसो सुन्यो कौन करत यहजोर ॥ तुमसे पुरुख अनंत वल छतें
उपद्रव एह । होय वडो अचरज यहै छुटे न मन संदेह ॥ सुनि
श्रीजिन रथ चढि चले पहुचि नगर गढतोरि । जुटे जुद्ध तादेव
के सनमुख आयुध जोरि । अनिल अनल जल प्रवल सर दुहूं
ओर तेंछोरि । अनमोहसर मारिकें सुरमोह्यो वरजोर ॥ सुरपति
आय [illegible] तव पाय पारि सो देव । विदा भयो सो विवुधवर
विविध भांत करि सेव ॥ तव श्रीजिन भगवंतवर नेमनाथअरि
[illegible] । भये [illegible] नगरके कृपकरुन वहिभगवंत॥ताऊन तिनकेजीय
में [illegible] व्याहनकाज । मातपिता करि सोच तव अति विनये
[illegible] ॥ [illegible] भामा अरु रुकमिनी तिनहूं निपटनिहोरि ।
[illegible] नाम [illegible] ॥ सावनसुदिछठ सुभ
[illegible] गये । चढी जान [illegible] मथुरा पहुंचीजाय
[illegible] साज सव [illegible] वग [illegible] । कल कौतक
[illegible] ॥ नामवास वासे अतर भूपण
[illegible] । [illegible] मंगल उग्रसेन के वार ॥ तहं
[illegible] पूछ्योनेम । वोल्यो वह तुम व्याहके
[illegible] ॥ [illegible] पशुपुंजको वात तहां जिनहेर
[illegible] दया आनि मति फेर ॥ मनिभूपण
[illegible] छुड़ाय। तोरन हांतें फिर फिरे सव
[illegible] ॥ [illegible] मई [illegible] चढी यह देप। खाय
[illegible] मूरछा विसेप ॥ आलिन आयकरि वीज॰
[illegible] नाय। करि सचेत अपकेतकी दई आगि

भड़काय ॥ विरह विथा वाढ़ी विपुल अतिन बान विषजाय। रोम रोम सब रमिगई रोय रोय बिललाय॥ नीरहीन जिमि मीन अति दीन छीन बिललात। तलफि तलफि विलपति विपुल नेमप्रेम उतपात॥ तजिभूषण दूषण दये चीरे चीर अधीर। छूट पटात लोचत लर्टान हिये अटत नहिपीर। अलिअवली चहुंओर तें अलि अम्बुज कैंमाय। धरिसमुझावत कुअरि कों क्यों ऐसे अकुलाय ॥ अज्यों अरंभन व्याह कौ ववारीकन्या तोहि। कहाइतो दुख दूसरौ दूलहलावें जोहि ॥ यहसुनिधुनि सिर फिरि कह्यो ऐसेफेर न भाखि। मनवचक्रम मोपतिवहैइहि भव रबि ससि साखि॥ जो उन छाड़ी मोहि तौ छाडौंकहा विचार। हौं नहिं तिनको छाड़िहौं मनवचक्रम निरधार ॥ उत श्रीनेम उदासह्वै ज्यों पहुंचे निज गेह। नव लोकान्तक देवता दिच्छा समयो जेह ॥ आये ताहि चितावने मधुर वचनकरि सोय। कहन लगे कल्यान मय जयजयवन्ता होय॥ सुनत सुमिरसमयोतुरत कीनै वरसीदान।भुव ऊरिन पूरनकरी भरी सकक धन धान ॥

अथ श्रीनेमनाथस्वामी दिक्षाकल्यानक॥

सावन सुदि छठ तिथि सुदिन दुपहर चढ़ि सुखपाल। चौंसठ सुरपति सुर सकल सहित जिनेस दयाल॥ पुरी द्वारिक बीचह्वै निकसि बाहरैंआय। पहुंचे गिरिगिरनार पै रेवत टूक हिंपाय॥ निकट घनी अंवराइ तहं तरु असोक तर आय। उत्त रि तहां सुखपाल तें ससि चित्रा में पाय॥ भूषन बसन उतारि सब पंच मुष्टि करि लोच। चौविहार उपवास द्वै करि धरि आतम सोच॥ देवदूपपट राखि इक छांडि सकल ग्रह साज। राजकुमार सहस्त्र संग लिय चारित जिनराज॥

अथ श्रीनेमनाथ स्वामी ग्यानकल्यानक॥

चव्वन निसि चारित्र पद पालि पचपनी रात। आसिन

नि सावनमए निसि निसीथ विख्यात ॥ वरगिरनार पहार पर देत वृक्षतर आय । चित्रा ससि उपवास है चौविहार करिचाय ॥ परम ग्याग कल्यान में पायो केवल ग्यान । चौदह राज समान जन मन परनामहिं जान ॥ राजमती हूं आय तह दिच्छा ले जिनहाथ । तजिसंसार असार सब वृत ले भई सनाथ ॥ तब पूछ्यो श्रीकृष्ण यह एकओरकोप्रेम । कैसो सो भाखनलगे श्रीजिननायक नेम ॥ आठजनमको प्रीतयह अब क्योंछूटे भ्रात। देवलोकमें चारि भव चारि और सुनि वात ॥ नृप घनभूत रु धनवती प्रिय मति अपराजीत । सङ्ख यशोमति चित्रगति रत्नवती समप्रीत ॥ नौमे भव राजीमती नेम नाथ के साथ । जनम जनम को बन्ध क्यों छुटे छुटाये हाथ ॥ अब इनको परिवार सुन गनधर गच्छ अठार । सहस अठारह साधु की सम्पति कहि निरधार ॥ चालिस सहस सुसाधवी बरश्रावक इकलाख। तापर उनहत्तर सहस अब श्रावक तिय भाष ॥ तीनलाख उनर सहस बनिता गनवी जान । चौदह पूरव धरि कहे ते सौचारि बखान ॥ पन्द्रहसे ग्यानी अवधिते बड़कोधार । सहस विपुलमति मानमें वादी बड़े विचार ॥ डेढ़ सहस वर साधु अरु शुभसाध्वी में तीन । जिन कर दिच्छा पायके भये मुक्तपद लीन ॥ दुहुं अन्तकृत भूमि ते इक युगान्तकृत जान । अरु दूजी परियान्तकृत नेमनाथ परिमान ॥ आउमान जिननाथ को अब सब कहें बखान । बरस तीनसे नेमजिन रहे कुमार सुजान ॥ छदिन ऊन है मास पुनि रहेनाथ छदमस्त । बरस सातमें तिनमहित केवल ग्यान समस्त ॥

अथ श्रीनेमनाथ मोक्ष कल्यानक ॥

बरस सहस सब आउ के पूरन करिजिनराय । तिथि असाढ़सुदि अठमी चित्रानृत ससि पाय ॥ मध्यरात गिरनारपर उर्ध तक गिरटूक । चौविहार उपवास जुत धरिसुभ ध्यान

अचूक ॥ मुकत पधारे नेमप्रभुतदनन्तर तहं जान । सहसऋसी अरु चार पर महावीर निरवान ॥ सहस पचासो बरस पर नवसें बरस वितीत । और ऋसी बीते लिख्यो कलपसूत्र करि प्रीत ॥ नेम चरित पूरन भयो छठे वाचना मूल । होहु सकल कल्यानजुत जिनजन मन अनुकूल ॥

अथ सातवीं वाचना ॥

चौविस तीरथ नाथ केअुकान्तर को काल । सोवरनों संछेप करि परम पुन्य को जाल । अरु तिन जिन चौवीस केतातमातको नाउं ॥ चिन्हकाय मित तनवरनउम्मरजनम थितगाउं ॥ थित पांचो कल्यान की मुकत थान कुल गोत । चवेजासु सुरलोकतें ताकों नांव सजोत ॥ साध साधवी सकल अरु गनधर देवी जच्छ । चौवीसों जिननाथ के कहों प्रथम परतच्छ ॥ नेमनाथ मुनि सुव्रतको कुल जदुकुल हरिवंस । गोतमगोतसजोतथेअगटे कुल अव तंस । अल सबको इक्ष्वाक कुलकश्यप गोती जान मुकथान जिन वीसको सिपर समेत वखान ॥ शेषचारिके मुक्ति थल प्रथक प्रथक सुनि सार । महावीर पावा पुरी नेमनाथ गिरनार ॥ वास पूज चम्पापुरी अष्टापदशुभथान । आदि जिनेसर सार वर रिषभ देव निरवान ॥ अव सबको संछेप करि सुनिये सब विस्तार । वरन चिन्ह परिवार वपु थित थल अन्तर सार ॥ तहां प्रथम वरनों विदित महावीर अधिकार । परम पुनीत प्रताप जुत आगम मत अनुसार ॥

अथमहावीरअन्तराला ॥

चरम तिर्थंकरस्वामिवर महावीरभगवान । वर्द्धमानजिनलोक ह्वों त्रिसला मात निदान ॥ सिद्धारथ जिनके पिता हाथ सात नितिकाय । सुवरन वरन वखान तन लछन सिंह सुनाय ॥ वरस वहत्तर आउ थित तजिकै विजय विमान । खत्रिकुण्ड चवि औतरे कस्यपगोत निधान ॥ चवन साढ़ सित छठ आसत

ओर साधवी सार। जैन धरम के मरम करि कहि चालीस हजार ॥देवीजिनकी अम्बिका गोमेधक है जच्छ। ग्यारह गनधर नेमके आगम कहे प्रतच्छ ॥

अथ श्री नमिनाथ अन्तराला ॥

श्रीनमिको जिननेमतैं प्रथम परमनिरबान।पांचलाख पूरो कह्यो वरआगम परमान॥ विजय तात नमिनाथ के मिहला नगरी जान। कमल लछन पन्द्रह धनुष काया मान बखान॥ दस सहस थित सरवारथ सिधि थान। तजिकें सुभ मिथिलापुरी चवि आंतरे सुजान॥आसिन पूनो चव जनम सावन चौथि प्रमान।सुभ असाढ़ नवमी असितचारितदिन अभिराम॥अगहनसितएकादसी भये ग्यान आधार। लह्यो मोखवैसाखवदिदसमोसिखरमझार॥ बीस सहस नमिनाथके साथ साधवी फेर । गिनती इकतालिस सहस जयनागम विधिहेर ॥ पगधाई देवीकही जिनके भृगुटी जच्छ। गनधर श्रीनमिनाथके सतरह कहेप्रतच्छ ॥

अथ श्रीमुनिसुब्रतस्वामी अन्तराला ॥

श्रीजिनवर नमि तैं प्रथम मुनि सुब्रत निरवान। वर आगम अतुलित कह्यो छहलख पूरौ जान ॥ तात सुमित्र सुब्रतके पद्मावती सुमाय। कच्छप लछन स्याम तन बीस धनुष की काय॥ तीससहस वर उमर तजि प्रान तज्यो सुरलोक ।राजग्रही हरि वंस कुलचवि जनमें अनशोक॥ सावन सुदि पूनो चवन जनम जेठ वदि आठ। फागुनकी द्वै द्वादसी सितासिता क्रम पाठ॥ चारित ग्यानरु जेठ वदि नौमीपायो मोख। कीनौं सिखर समेत पर भवभय तजि संतोख॥ जानो मुनि मुनिसुब्रतके तीस सहस विस्तार।सहस पचासै साधवीयहै जैनमत सार॥नरदत्तादेवीकहीवरुननामजदजच्छ।गनधर श्रीमुनिसुब्रतके अठारहपरतच्छ ॥

अथ श्रीमल्लिनाथ अन्तराला ॥

तिनहूं तैं पहिलैमुकति मल्लिनाथ कोजान।ताकोसितिआगम

भ्रमित चउवन लाख बखान ॥ मल्लिनाथ पितु कुंभनृप प्रभा-
वती तिहिमाय । हरित वरण लच्छन कलस धनु पचीस मिति
काय ॥ वरस सहस पचपन सुथितताजि अपराजित लोक ।
मिथिला पुर चविओतरे कुल इक्ष्वाक असोक ॥ चवन चौथसित
फागुनी जनमचारितरु ग्यान । अगहन सित एकादसी ए तीनों
कल्यान ॥ फागुन सितबारस वहुर सिषर समेत सुखेत । लह्यों
परम निर्वान पद आतमतत्व समेत ॥ मल्लिनाथके साध सब
कहे सहस चालीस । पचपन सहस सुसाधवी जानि लेहु बुधि
ईस ॥ धरनप्रया देवीजहां कहि कुबेर वर जच्छ । मल्लिनाथ
गनधर कहे अट्ठाइस परतच्छ ॥

अथ श्री अरहनाथ अन्तराला ॥

नवलख कम इक कोटि मिति बरसप्रथम परवान । मल्लिनाथ
तें मुक्तिवर अरहनाथ कीजान ॥ अरहनाथ की माय श्री देवि
अर्जनाजान । पिता सुदरसनचिन्हजिहिं नन्दावर्त बखान ॥ कनक
रंगधनु तीस वपु चौरासी सहसाय । छांड़ि जयंत विमान
निधि गजपुर प्रगटे आय ॥ चवि फागुन सित तृजसित कातिक
वारम ग्यान । अगहन सुकला दसमि को जनम और निरवान ॥
ग्यारम अगहन सुकलमेंतज्यो गृहस्थावास । सिषरसमेतीमुक्त
थल कुल इक्ष्वाको तास ॥ अरहनाथ के साधु सुभ कहे पचास
हजार । साठ सहस जिहिं साधवी जैनागम अनुसार ॥ वरनी
देवी धारनी जच्छराज जहं जच्छ । अरहनाथ जिननाथ के गन
धर तीन प्रतच्छ ॥

अथ श्री कुंथनाथ अन्तराला ॥

अरहनाथ तें प्रथम श्री कुंथनाथनिर्वान । लप इक्यानवे वर-
कम पाव पल्य में जान ॥ पल्योपम सागर प्रमित पहिले कहे
बखान । आगम के अधिकार में काल मान परवान ॥ श्रीमि
कांता मातके कुंथनाथ सुत जान । सूरसेन जिनके पिता छा

चिन्ह पहिचान ॥ पंतिस धनु कंचन वरन तन हजार सत गांठ । पांच सहस्र कम आउथित छांड़ि सर्वसिध छांह ॥ हस्तनपुरचवि औतरे कुल इक्ष्वाक मझार । सावन कृष्णा नवमि तिथ चवन तानुनिरधार॥पहिली वदि वैसाष की पंचमचौदस फेरक्रमकरि मोप वषान अरु दिच्छा जनम सुहेर ॥ ग्यानचैत सुदि तीजकों पायो केवल ज्ञान । पांचों तिथ कल्यानकी येइ जान सुजान ॥ साठ सहस मुनि कुंथके और साधवीसार । जानों साढ़े तीनसे साठरु पांच हजार ॥ वालादेवी भाषिये अरुगंधर्व सुजच्छ । कुंथनाथ गनधर कहे सुभ पैंतीस प्रतच्छ ॥

अथ श्रीशांतनाथ स्वामी अन्तराला ॥

कुंथनाथ तें प्रथम श्री शांतनाथ निरवान। पल्योपम को अर्द्ध मिति ताही के परमान ॥ विश्वसेन जिनके पिता अचिरा मात वखान । मृग लंछन चालीस धनु कनक काय पहिचान ॥ लाख वरस थित आउ की तजि सर्वारथ सिद्ध । हस्तनपुर चविऔतरे कुल इक्ष्वाक प्रसिद्ध ॥ असित सत्तमी भादवों चवन जेठ वदि फेर । तेरस जनम वखान सुनि मोषों तामेंहेर ॥ जेठ वदीचौदस लियो चारिततापरग्यान।भयोपोससुदिनवमिकोजासुसिपर निरवान॥ शांत साध वासठ सहस और साधवी सार । इकसठसहस रुदोयसै जैनागम अनुसार ॥ वानी देवी जासुकी गरुड़ नामवर जच्छ । शांतनाथ गनधर कहे तीसरु छह परतच्छ ॥

अथ श्रीधर्मनाथस्वामी अन्तराला ॥

शांतनाथ तैं प्रथम श्री धर्मनाथ निरवान । पौन पल्य मिति ऊनकरि सागर तीन वखान ॥ धर्मनाथ श्री भानु पितु जासु सुव्रतामाय । वज्र चिन्ह कंचन वरन पैंतालिस धनु काय ॥ आउ वरस दसलाख थित तजि सर्वारथ सिद्ध । रतनपुरी चविऔतरे कुल इक्ष्वाक प्रसिद्ध ॥ सित सातैं वैसाख चवि जनम माघ सुदि तीज । ताही की तेरस रहे सुभ चारित रसभीज ॥ केवल पून्यो

पोस सित जेठी पंचम मोख। सुभ समेत गिरि सिखर पै पायो परम संतोख॥ धर्मसाध चौंसठ सहस और साधवी सार। बासठसहस रुचारिसै जैनागम निरधार॥ जहं देवी कन्दर्पिनी कहिये किन्नर जच्छ। गनधर जासु बखानिये तैंतालीस गतच्छ॥

अथ श्री अनन्तनाथ अन्तराला॥

धर्म नाथनें प्रनाम पुनि जिनअनन्त भगवान। मुक्तिगान तिनको कह्यो सागर चारिनमान॥ सिवसेन जिनकेपिता सुजना तिनकी मात। सिंह सिंघानक कनक तन धनु पचास गिनि गात॥ तीस लाख बरसो उमर लोक सोलहों त्याग। अवधि बंस इक्ष्वाक में चवि औतरे सभाग॥ असितासातैं मानतीसावन बदी बैसाख। तेरस चौदस रुगे तीनों क्रम साख॥ प्रथमजनम दिक्षा बहुर तीजे केवल ग्यान। बहुर चैत सित पंचमी सिखर सुधन्न निरबान॥ मुनिअनन्त छासठ सहस और साधवी सार। बासठ सहस रुचारिसै जैनागम निरधार॥ जिनकी देवी अंकुशा पाताला जिहिं जच्छ। गनधर नाथ अनन्तके कहे पचासनतच्छ॥

अथ श्री विमल नाथ अन्तराला

जिन अनन्तनें विमल जिन मुकतअन्तर परमान। नव सागर पनेल्यो देह सुजानि सुजान॥ विमल पिता कृतवर्म अरु स्यामा तिनकी मात। कनक वरन सूकर लछन साठ धनुष मितिकाय॥ साठ लाख बरस तनु देव लोक बारहीं त्याग। कंपिलपुर अवतार कै दर्सने लोक सभाग॥ माघ सित बैसाख चवि पौंस सुदी छठ जान। तीज चौथ मिति माघ को जनम जु चारित जान॥ पुनि कल्याणक अतिध्यायपायसुखध्यान। सुभ गिरि सिखर समेत पर पायो पद निरवान॥ विमल साध अडसठ सहस और साधवीसार। एक लाख परी कहो जैनागम अनुसार॥ विदिता देवीदर्गनिसे षनमुख जिनके जच्छ। विमलनाथ गनधर विमल कहिपचपन परतच्छ॥

अथ श्रीवासपूजनकी अन्तराला ॥

विमलनाथ तें प्रथम जिन वासपूज निरवान । अंतर दोनों मुक्त को सागर तीस बखान ॥ वासपूज वसुपूजि पितु जया माय रक्तलाल। धनु सत्तर तन थिति बरस लाख बहत्तर काल ॥ महिष चिन्ह चंपा पुरी छांड़िदसम सुरलोक । जेठ सुकल नोंमी चवे हरे जनन के सोक ॥ फागुन वदिचौदस जनम मावसदिच्छा तोप । ग्यान माघ सुदि दूज सित साढ़ौ चौदस मोप ॥ चंपापुर में साध सुभ सत्तर दोय हजार । तीनसहस अरु एकलप सुभग साधवीसार ॥ चन्द्रा देवी वरनिये अरु कुमारजहं जच्छ। वास पूज गनधर कहे वर छासठ परतच्छ ॥

अथ श्रीश्रेयांस अंतराला ॥

वासपूज तें प्रथम पुनि जिन श्रेयांस सुजान । मुकान्तर इन दुहु न को चौंवनसागर जान ॥ विष्णुसेन जिनके पिता विष्णा जिनकी माय। खडग चिन्ह कंचन वरन अस्सो धनु की काय ॥ चौरासीलप वरस थित तजि सुरअंतकलोक । सिंघपुरी चवि औतरे कीने लोक असोक ॥ जेठ वदी छठ चव जनम असिता वारसफागताही की तेरस तहांचारितलह्योसभाग॥मावी माव सग्यानवदि तीज सावनीमोप । सिपर समेतहि में भयो जनम मरनसंतोप ॥ कहे साध श्रेयांसके असीचारहजार । छहहजार इकलख कहीसुभगसाधवी सार ॥ वरनी देवी मानवी जच्छ राजजहं जच्छ । सतहत्तर गनधर कहे जिनश्रेयांस प्रतच्छ ॥

अथ श्री सीतलनाथ अंतराला ॥

अब श्रेयांसजिनेसतैंश्रीसीतल निरवान । घटबढ़ करि संख्या कहौं सो सुनिलेहुसुजान ॥ छासठलप छब्विससहसतीस वरस वसुमास । पन्द्रहदिन गनि जोरि सब दससागरमें तासु॥सब संख्या यह ऊन करि सागरकोटि मझार। सो सीतल श्रेयांसको मुक्त्यन्तर निरधार ॥ सीतल के हृढ़रथ पिता नन्दाजिनकीमाय।

श्रेयस्सी लंछन कनकतन धनुनव्बेकाय ॥ एकलाख पूरब उमर [illegible] ठोक । भद्दलपुर [illegible] औरतेहरे जननके सोक ॥ चयन [illegible] [illegible] । [illegible] बारसहि [illegible] एकही [illegible] ॥ [illegible] बे-[illegible] । [illegible] निरवान [illegible] ॥ [illegible] [illegible] इकतास [illegible] ॥ [illegible] । श्री [illegible] कहे इक्यासी परतच्छ ॥

[illegible] ॥

[illegible] निरवानतें प्रथम [illegible] निरवान । कहि सागर [illegible] आगम परमान ॥ [illegible] सुग्रीव अरु [illegible] । [illegible] धनु ऊचो [illegible] मुरलोक । काकन्दो [illegible] ॥ [illegible] चवन [illegible] लीनो दिक्षा [illegible] । [illegible] । ग्यान [illegible] ॥ [illegible] सुबुधि [illegible] । [illegible] पूर्ण [illegible] जैनागम अनुहार ॥ [illegible] नामजहं [illegible] । सुबुधिनाथ गन-[illegible] परतच्छ ॥

[illegible] ॥

[illegible] । सागर नव्वेकोटि कहुं [illegible] परमान ॥ महासेन जिनके पिता और लछमना माय । [illegible] धनुकहे [illegible] काय ॥ [illegible] पूरब [illegible] तजि जयन्त सुरलोक । पुरी चन्देरी [illegible] हरेजनन केसोक ॥ चवन चैतवदि पंचमी पोसवदी के मांह । बारस तेरस जनम अरु चारित की कमछांह ॥ फागुन अरु भादों वदी असित

जनमी जोय । ग्यान और निर्वान को क्रम करि लिपि लोहोय ॥ सहस पचासक दोयलष चन्द्राप्रभु के साथ । तीनलाख अस्सी सहस सुभ साधवी अगाथ ॥ भ्रकुटि देवि जिनकी कही विजय नाम वरजच्छ । गनधर कहे तिरानवे चन्द्राप्रभु परतच्छ ॥

अथ श्रीसुपारसनाथस्वामी अंतराला ॥

चंद्राप्रभु को मुक्ति तें प्रथम सुपारसनाथ । सागर नवसैकोटि सिति मुक्तयन्तरकोगाथ । सुप्रतिष्ठ जिनकेपिता पृथ्वीसेनामाय । कनक वरन स्वस्तिक लछन द्वै सै धनु की काय ॥ वीसलाष पूरव उमर पंचग्रीव तजि लोक । पुरीबनारस औतरे हरे सकल जन सोक ॥ भादोंवदि आठैं चवन जेठवदीके मांह । वारसतेरस जनम अरु दिक्षाको क्रम छांह ॥ छठमातैं फागुन वदी ग्यानऔर निरवान । यथासंख्य कल्यानको क्रम करि लीजे जान ॥ साध सुपारसनाथ के तीनलाख सिति जान । तीन सहस अरु चारि लष सुभ साधवी वखान ॥ वरनी देवी शानता अरु मातङ्ग सुजच्छ । वर गनधर पंचानवे जिनके परम प्रतच्छ ॥

अथ श्रीपद्मनाथ स्वामी अंतराला ॥

मुकत सुपारसनाथ तैं पदमनाथ निरवान । नवहजार जेकोटि मित सागर पहले जान ॥ पद्मपिताश्रीधर कहे और सुसीमामाय । अरुन वरन पंकज लछन धनुढाई से काय ॥ तीसलाष पूरव उमर अन्तग्रीव तजि लोक । कौसंबी पवि औतरे हरेजननके सोक ॥ माघवदी छठ चवन अरु कातिक वदिके मांह । वारस तेरस जनम अरु दिच्छाकोक्रम छांह ॥ चैतोपून्योग्यान वदि ग्यारसअगहन मोष । सुभगिर सिषरसमेत पर कह्योंपद्म जिनतोष ॥ तीस सहस अरु तीनलख पद्म साध निरधार । वीस सहसअरु तीनलष कही साधवीसार ॥ स्यामादेवी वरनियेकुसमनाम जहं जच्छ । गनधर पद्मजिनेसके इकवुत्तसत परतच्छ ॥

अथ श्री सुमतिनाथस्वामी अंतराला ॥

[illegible]नाथमैं सुमतिजिन मुक्तिमान परमान । सहसकोटि नव्वे [illegible] सागर पहचान ॥ सुमतिनाथ पितु मेघरथ और मंगला माय । क्रौंचचिन्ह कंचनबरन धनुष तीनसो काय ॥ चालिस लक्ख [illegible] छांड़ि [illegible]पान । [illegible]पुरी चवि अवतरे ग्यान [illegible] भगवान ॥ दुज [illegible] चवन सुकलपच्छ बैसाख । [illegible] नौमी जनम [illegible]की क्रमसाख ॥ ग्यारस नौमी चैत [illegible] जान । सुमतिनाथ भगवानको परमग्याननिर- [illegible] सुमतिनाथके साथ । तीससहस [illegible] साथ ॥ महाकालिदेवी कही तुम्बर [illegible] । सुमतिनाथ गनधरकहे सतदस छह परतच्छ ॥

अथ श्री अभिनन्दनस्वामी अंतराला ॥

[illegible]नाथमैं [illegible] अभिनन्दनआनन्द । सागरनवलख [illegible] परमानिरद्वन्द ॥ सुमतिनाथ तें आदिदे [illegible] [illegible] । [illegible] जिननायक कौं कह्यो दसदस गुनकी चाल ॥ [illegible] अभिनंदन पिता [illegible]सुमाय । कनककवरनकपि चिन्ह [illegible] काय ॥ लखपचास पूरव उमर तजिकैं विजय [illegible] । [illegible] अयोध्या औतरे अभिनंदन भगवान ॥ चवनचौथ [illegible] मांह । [illegible] और बारस जनम दिच्छा [illegible] ॥ [illegible]धान पोस चौदस सिता आठें सित वैसाख । [illegible] परमपदमाख ॥ अभिनन्दन मुनि [illegible] । [illegible]लाख छत्तिससहस जैनागम [illegible] ॥ [illegible] जच्छनायककर जच्छ । अभिनंदन [illegible] परतच्छ ॥

अथ श्रीसंभवनाथ अंतराला ॥

अभिनंदन तें प्रथमपद संभव जिनको जान । सागर कोटि [illegible]नाकी संख्यामान ॥ संभवनातजितारिनृपऔरसुसेना

माय । हय लंछन कंचनवरन धनुष चारिसै काय ॥ साठ लाख पूरव सुथित छांड़ि आदिग्रीवेक । सावसती चवि औतरे राखि धरम की टेक ॥ फागुन सित आठें चवन अगहन सित के मांह । चौदस पांचें जनम अरु चारितकी क्रमछांह ॥ कातिकवदि अरु चैतसुदि सुतिथपंचमीजोय । लह्यो ग्यान निरवान यह संभव क्रमकरिसोय ॥ जिन संभव मुनि दोयलख और साधवी सार । तीनलाख छत्तिससहस जैनागमनिरधार ॥ वरदेवी दुरितारिका औरत्रिमुखजहंजच्छ । जिनसंभवगनधरकहें पांचरुसतपरतच्छ ॥

अथ श्रीअजितनाथ स्वामी अंतराला ॥

संभवते जिन अजितहूं तिन कों अंतरकाल । कह्यो तितोई वीसलख कोटि सागरेहाल ॥ अजित तातजितसत्रु अरु विजया देवीमाय । कनकरंग गज चिन्ह धनु साठ चारिसे काय ॥लाख वहत्तर पूर्वथित तजिके विजय विमान । पुरी अयोध्या औतरे अजितनाथभगवान ॥ तेरस सितवैसाख चव माघसुदीके मांह । आठें नौमी जनम अरु दिक्षाको क्रमछांह ॥ ग्यारस सुक्ल पोस सितचैतपंचमीजोय । लह्योग्यान निरवानपद अजितनाथ जिन सोय ॥ अजितनाथ मुनि एकलख और साधवीसार । तीनलाख आगम कहे तापर तीस हजार ॥ देवी वाला अजित जहं और महाजस जच्छ । अजितनाथ गनधरकहे नव्वे परम प्रतच्छ ॥

अथ श्रीआदिनाथस्वामीअंतराला ॥

अजितनाथ तैं प्रथम अब ऋषवदेव जिननाथ । सागरकोटि पचासलख लखिलिखि होहुसनाथ ॥ एई प्रथमजिनेसतें चौवि-स जिनलों सार । मुक्तयंतर भाखे सकल प्रथक प्रथकविस्तार ॥ चरमतिथंकर लों कह्यो जो सबको परमान । प्रतिजिन इक इक जोरिकै लेहु सुज्ञानि सुजान ॥ ऐसैं जो सब जोरिये अंतरकाल निदान । रिषवदेवमुक्तादितैंमहावीरनिरवान ॥ कोटिकोटिसागर अवधिमांह ऊनकरितासु । सहस बयालिस त्रयवरस अरु साढ़े

[illegible] जोरिजों लेहु । कल्पसूत्र
[illegible] ॥ नाभिराय जिनके पिता अरु
[illegible] नरन बहुत पांचसै काय ॥
[illegible] सिधि लोक । छांडि अयोध्या
[illegible] ॥ [illegible]सित [illegible]साढी चौथ च्यव जनम
[illegible] भयो दोनों को संजोग ॥ असिता
[illegible] श्याम । लह्यो ग्यान निरवान क्रम
[illegible] सुभग माधवीसार ।
[illegible] परिवार ॥ देवी वर चक्केसरी
[illegible] गनधर कहे चौरासी परतच्छ ॥

[illegible] अधिकार लिख्यते

[illegible] कल्यान । तीजे आरे केरहे
[illegible] ॥ [illegible] भयो रिषभ औतार ।
[illegible] अधिकार ॥ जिनके चारि
[illegible] में [illegible] पांचवें कल्यानक
[illegible] थित बिवहार ।
[illegible] ॥ उत्सर्पनि जो काल
[illegible] कह्यो सुखम दुःखमां
[illegible] । कुलकुल उपजे
[illegible] ये दोनों नीति
[illegible] चार ॥ इन दोउन
[illegible] यह कही नीत
[illegible] पांचवें चउदवां मरुदेव । नाभ
[illegible] ॥ नीति कही धिकारनी धनुष
[illegible] । [illegible] कुलकरकी कही सकल बिवस्था एह ॥ नाभ
[illegible] मरुदेवी की कुख । निसिनितीथ के काल श्री
[illegible] ॥

अथ श्रीआदिनाथ चवन कल्यानक ॥

सुरतंवधी आयु तजि अरुआहार विहार । छांडिचये सुरलोक तें गर्भवास आधार ॥ अब इन जिन श्रीऋषभ के तेरह भव वपु नाम। वरनि बखानैंप्रथमधनसारथवाहुललाम॥ भये जुगलिया दूसरे तीजे सुर नर फेर । चौथे राजामहावल फेर पांचवें हेर ॥ भये देवललितांग पुनिवज्रजंघनृप फेर । छठें सातवें जुगलिया पुनिसुर अठयें हेर ॥ जीवनदायक नाम पुनि वैद्य नवैं भवसोय। दसवें भववरदेवताजनम होय सुख सोय॥ चक्रवर्त्त पुनि ग्यारवें वज्रनाभ इहिं नाम । सर्वारथ सिधि वारवें भये परम अभिराम॥ जनम तेरवें रिषभ प्रभु आदि जिनेसर सार। तिन जिनके अधिकार अब कहौं सकल विस्तार ॥ तीन ग्यानसह चवन जिन कीनों गर्भ निवास। कुंजरादि चौदह सुपनमरुदेवीलखि तासु॥ ऐसें ही बाईस जिन जननि प्रथम गज देखि । और लखैं नहिं व्रख लषे प्रथम कह्यो या लेखि ॥ रहै नहीं तिहि काल मैं जे पण्डित सुपनग्य। यातैं सुपनविचारतहंकियो नाभि सरवग्य॥

अथ श्री आदिनाथ जन्मकल्यानक ॥

गर्भकाल बीत्यो जबै सकल सवानव मास । चैतबदी आठैं नखत उत्तरखाढ प्रकास॥ मरुदेवीकीकूख तैंजनमें श्रीभगवान। ऋखवदेव भगवंत वर आदि जिनेसर जान॥आदितिर्थंकरआदि नृप भिक्षाचर पुनि आदि। आदि केवली ऋखव ए पांचों नाम अनादि ॥ छप्पनदिसा कुमारि अरु चौसठ इन्द्रन आय। कियो महोच्छौ प्रथमवत धन वरखा वरपाय॥ तोलन तोला सेर मन बाटन गज तिहिं काल। रीति जाति करमादि नहिं और दसूजन चाल ॥ ते सब अब नवरीत करि सब अचार विवहार। करे दुरे दुखदुंद सब श्रीजिनराज कुमार॥ दीन दुखीदारिद्र जुत हीनन कोतिहिं काल। बंदन कोऊ वंदिमैं सब अनन्दसुखहाल॥ एक वरस के जब भये आदिनाथ भगवान । इन्द्र आय इक

उग्र तहं लायो जिन हित जान ॥ अरु जिन करअंगुठ में अमृत
कियो संचार । चारित समयावधि लियोसुरसंबंधि अहार ॥ एक
समयनर जुगलियालहि फलताल अघात । मर्यो तासु की जुगल
नियलई नाभिनृप तात ॥ लै राखी निजमहलमैं ऋखभव्याह के
हेत । पति सुंदरि मरि जरि मनो रति छांडी झखकेत ॥ कोटि
लाख सत्तर वरससहस छपनकेमान ॥ संख्या पूरवकीकही इते
वरस पहिचान ॥ बीसलाख के अंकसौं गुनि यह अंक सुजान।
बीस लाख पूरव ऋषभ रहे कुमार सुजान ॥ जोबन वय मय
[illegible] नर विषय भोग रस सार । जोग भये जिननाथ जब तिहि
[illegible] ॥ इन्द्र इन्द्रतियधारिचित जिनवर व्याहविचार ।
[illegible] रचो व्याह विस्तार ॥ धुज तोरनमंगल
[illegible] वितान । नानिमुनमंगायके चौंरी रचोसुजान॥
[illegible] को अरु सुमंगला दोय । जुगलधर्म करि
[illegible] ॥ पीठी उबटि न्हवायपुनि
[illegible] । [illegible] बिन चौरी माहिं
[illegible] पीठी उबटि नहाय । तासु
[illegible] ॥ सुरगनसह [illegible] लैसजि
[illegible] । [illegible] विख्यात॥
[illegible] । मिल इन्द्रानी इन्द्र
[illegible] । सुर [illegible] मंगलगाय मनि मानिकचौक
[illegible] पुनि [illegible] ॥ सकल कर्म
[illegible] व्याह करायो । पाय सकल सुख सुर
[illegible] ॥ [illegible] अवधि लौंग विषय
[illegible] । [illegible] भयो प्रसव जुगलियाजास॥
[illegible] नाम [illegible] अरु सुमंगला नारि । जनी बाहुबल
सुन्दरी प्रथम जुगलिया सार ॥ पुनिजनमी यह जुगलसुत दोइ
[illegible] पंचास । यह सन्तत भगवंतकी भई गृहस्थावास ॥ तीने

आरेके रहे जब थोरे दिन आय । कल्पवृच्छ थोरे रहे भुवमें जुगलि नपाय ॥ लग्न लगे ते परस्पर इक तरु तर ह्वैवैठि । हक्क मक्क धिक्कार ते तिहूं तीनि में पैठि ॥ तिनके न्याव निवेरहीं नाभि नृपति चितचाहि । चह्यो राजके पाट पर सुतहि बिठावन ताहि ॥ आय इन्द्र सुरलोक तें कियो महोच्छो चाय । राजपाट अभिषेक की सांज समारी आय ॥ पुरी अजोध्या आय कें धनद करी नृपकाज । राजसाज सुरपति सजे वाजि ताज गजराज ॥ त्रेसठलख पूरववरस ऋषभदेव करिराज । सकल कला तिनहीं करी प्रगट जगत के काज ॥ लिखनपढ़न अरुगिनन पुनि सुगुन सुपन कौ ग्यान । शस्त्रशास्त्र धनुवानकी विद्या आदि सुजान ॥ गान ग्यान गुन मान मिति तानताल के भेद । नृत्य नाट्य अरु वाद्यके चारों भेद अखेद ॥ कामकला रसरसगितासोरह सजन सिंगार । बसीकरन मोहन कला आदि अमित परवार ॥ जोतक वैतक अश्व गज रथ आरोहन ग्यान । चित्रचितेरन चतुरई अरु विचित्रता जान ॥ सकल सिलपकी स्वल्पता सूछम थूल प्रकार । सब सिखराई जनन कौं सजितिनकेहथियार ॥ त्रेसठलख पूरव वरस जब यों भये वितीत । दिक्षासमय चितावने आये सुर करि प्रीति ॥

अथ आदिनाथस्वामी दिक्षाकल्यानक ॥

जैजैनंदा कहि कह्यो जैभद्रा जिन जान । कोउन लें तिहिं-काल पै दियो समछरीदान ॥ चैत बदी आठैं सुदिन पहिरपाछ-लै पाय । वैठि सुदरसन पालकी सुर म्नु सह समुदाय ॥ पुरी विनीता वीच ह्वै निकसि वाहरें आय । तरुअसोक तर सोकतजि भूषन वसन बढ़ाय ॥ सुरपतिहित इक मूठ तजि चारि मुष्टि करिलोच । चौविहार द्वै वासजुत तजि संसारो सोच ॥ उत्तर षाढ़ा जोग ससि चारि सहस नरसाथ । देवदूष पटजुतलियो चारित जिन जननाथ ॥ तदनन्तर जिन आदि प्रभु लागे करन

[illegible] जाने जैन [illegible] गोचरी [illegible] करूँ महैं [illegible] च्यारि हजार [illegible] गुरुजी तीर तन [illegible] पाय [illegible] गह्यो तपस्या [illegible] कियो विहार। पारनकरन [illegible] पान पूरव आयु निलगे [illegible] तन करो पुरन केवल॥ [illegible] राज। गौरि आदि बिसा [illegible] राज॥ तातैं निधानर भये छगे महा [illegible] धन गेन॥ पुरपता- [illegible] छुधा पिपासा [illegible] करि रहे [illegible] कन्या [illegible] देय। [illegible] भव इकवरद [illegible] कर्म उदै ग्रव- [illegible] अगाय। अन राय पूरै [illegible] देशि साथके [illegible] भिक्षा [illegible] भूत॥ अब जब [illegible] कहने [illegible] जोग। यातें तुहीं [illegible] मुनि बायां [illegible] वर्नन॥ तुव्चारी तू [illegible] भजे हांहो राखे [illegible] दोके गेन। भलोन जिन [illegible]॥ यातें तुव दोऊ मिलो मिलि [illegible]। मुनि जिन दोऊ कर मिले सनमुख दये [illegible]॥ [illegible] उत्सवन अये सग्सांजिनेस। सुर दुंदुभि

नभ बनिकने अति धनऋद्धि हुलेत ॥ ताही दिन तें यह भयो अखय तीज तिहिवार । विहरावन लागे तबै जिन करतों आहार ॥ तक्षशिला नगरी गये विहरत आदि जिनेस । काउसग्ग तप करि रहे तहां न्रपकल्यानेस ॥ तहां बाहुबल जिनसुवन आयो वंदन हेत । करी धापना प्रीत करि जिनपद की तिहिं खेत ॥ मरुदेवी जिन जननि इक सुमिरै जिनके हाल । भूख प्यास तप कष्ट को सहन होय बेहाल ॥ रोय कहे सुत भरत सों राजकाज बन तात । क्यों भूलो सुधि तात की भलो नहीं यह बात ॥ रोय रोय सों रैनदिन दोने नैना खोय । होत जात छिनछीन तन मरु देवी दुखमोय ॥ सहस बरस लहिसहि सकल सुरनरकृत उप सर्ग । तज्यो जिनेसर गेह अरु देहनेह सुखवर्ग ॥

अथ श्री आदिनाथस्वामी ग्यानकल्यानक ॥

फागुनवदि एकादशी नखत उत्तरासाढ । तीन वास पानी रहित चौविहार करि गाढ ॥ दुपहर दिन पुर तें निकसि वन बसि बटतरु हेठ । पायो केवल ग्यान पद परम सिद्ध में पैठ ॥ भरत करी महिमा महत आदिनाथ कीयाय । पुनि मरुदेवीमाय कों हाथी पर बयठाय ॥ तिन पूछी तब भरत सों देवबाद्य सुनि कान । भरत सुनायो लाभवर आदिनाथ को ग्यान ॥ सुनिअति छायो मोद मन मरुदेवी कैं तोय । उघरि गये दृगपटल जे खोये दुख करि रोय ॥ मरुदेवी हु कों तहां उपज्यो केवल ग्यान । एक मुहूरत मांहि पुनि पायो पद निरवान ॥ सुरन आय तहं समुद्रमें दीनी काय बहाय । भरत कियो अतिसोक पुनि हरखेनोदक दाय ॥ भरत जाय छह खंड में राजनीत दरसाय । चक्रवर्त की रिद्धि लै फिरे अजोध्या आय ॥ भरत भ्रात अट्ठानवे तेऊ बोधहिं पाय । चारित लीनों तिन सकल ऋषबदेव तें जाय ॥ सुन्दरियादि कतियनहूंपुनिलीनोंचारित्र । एकबाहुबल बिनसकल सेवकभये पवित्र ॥ सुमुख नाम इक दूत तहं भरत पठायो जाय । नत

[illegible] निकट सकैन सुनाय ॥ कह्यो बुलायो प्रीत [illegible] । मिलन हेत उत्कंठ अति औ- [illegible] ॥ [illegible] बाहुबल कह्यो गहु बल जोर । [illegible] मान नाथैं ईस ओर ॥ भौंतौं ह्यां वनि [illegible] कह्यो कहैं [illegible] । नतो तेग साजि होड कहुं उठ है [illegible] ॥ [illegible] कहो सुनाय । [illegible] भरत सातसैं रघुनाथ ॥ चढ्यो बढ्यो चतु- [illegible] निशान बजाय । [illegible] बाहुबल चढ़ि चलि [illegible] । [illegible] हुऊ जुर जुरम तुहाय । सुभट [illegible] में तनौं मोह छुड़ान ॥ भयौ घोर संग्राम अति [illegible] । ऐसे ही नीति बरस बारह लख्यो न कोय ॥ [illegible] गज तुरंग सबै कापै लोउन भाईन में [illegible] । [illegible] आयकै समुझाये दोउ भाय । [illegible] बनाय ॥ पांचभेद हे ऐसे [illegible] युद्ध पुनि कहो पांचवीं [illegible] । पर पांचों [illegible] ॥ तब चारन जितबाहुबल [illegible] धिक्कार्यो गृह [illegible] जीवन हाम । सों चक्र- [illegible] लीनो तुरत तब [illegible] पांचों रूप खिसाये [illegible] । लघु भाई पग [illegible] नये काउसग्ग [illegible] ॥ आदि [illegible] को मान । भगिनी ब्राह्मी सुन्दरी [illegible] ॥ [illegible] कह्यो हुहूं साधवी [illegible] । सुनि [illegible] हवै [illegible] सोच्यौ चाय ॥

यहुदिन बीते [illegible] कहे [illegible] । [illegible] अबलों समझो होल ॥ [illegible] मान । [illegible] चल्यौ तिनितिहि काल पुमान ॥ तिहिं धल केवलग्यान [illegible] सुर छांह । आदिनाथदेव [illegible] के कहे केवलि [illegible] ॥ अब श्रीआदि जिनेश को कहों सकल परिवार । [illegible] साध सहस निरधार ॥ तीनलाख वर साध्वी श्रावक लाड़ेतीन । पंचलाख चव्वनसहस सुभ श्राविका प्रवीन ॥ चारि सहस चउ सात सैं लाड़े पूरबज्ञान । अवधिग्यान ग्यानी भये नवहजार परमान ॥ बीससहस पद केवली लवध बवको जान । बीस सहस छहसै भये बहुर विक्रियतिग्यान ॥ साड़े छहसै बारह सहस बारह संख्यालोय । तेते वादी भये साध संख्य यह लोय ॥ साधमुकि पदकौं गये बीस सहस लहि बोध । लहो साधवी हूं मुक्त चालिससहस प्रबोध॥ ऐसैं आदि जिनेस की साध संपदा मान । दुहुं प्रकार भुव जिन कहै एक अंतकृत जान ॥ अलहूजो परियांतकृत मुकतराह निरबाह । रह्यौ असंख्या पाटलौं जिनवर पाछे चाह ॥ अबसब आउ जिनेस की कहें सुनौ चित लाय ॥ बीस लाख पूरव रहे पदकुमार सैछाय ॥ त्रेसठ पूरव लाखपुनि वरसराजपद भोग । ब्यासी पूरव लाख कुल गृह सुख भोग संजोग ॥ एक सहस छदमस्त अह सहस [illegible] । पूरव केवल ग्यान पद पाय रहे निज साख ।

अथ श्रीआदिनाथ स्वामी मोक्ष कल्यानक ॥

चौरासी पूरव सकल आयु मान प्रतिपाल । [illegible] बरस तीन इतो जबकाल ॥ तीजे आरे के रहे माह [illegible] सुभ तिथ असिततिरोदसी अभिजित [illegible] परवत तहां दस हजार संगसाथ । छह उपास [illegible] हार व्रतसाध ॥ दुपहर दिन पहले लह्यो आदिनाथ [illegible]

[illegible] तानी [illegible] ॥ [illegible]जिनेश्वर [illegible] । [illegible] सहित इनकी [illegible] ॥ [illegible] करि दह [illegible] । [illegible] नव रस [illegible] कछु [illegible]सु ॥ ता पाछे [illegible] [illegible] । बरस लिख्यो यह ग्रन्थ तब कल्पद्रुम [illegible] ॥

[illegible] अनिरानकी ॥

[illegible] जिननाथ के ग्यारह गनधर सार । जो चौदह पूरव [illegible] ॥ तिनमें है के शिष्य नहिं [illegible] । [illegible] सहो [illegible] के बार ॥ [illegible] नहिं [illegible] । [illegible] जिनवर [illegible] । [illegible] जम्बुनि [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] तीन [illegible] । [illegible] ॥ [illegible] के [illegible] ॥ [illegible] महावीर के पाट [illegible] बरस [illegible] ॥ भई [illegible]बरस [illegible] । [illegible] स्वामी भये तिनके पाट [illegible] पुनि [illegible] । [illegible]

वीर सेवा करीबारह गोतमकोस ॥ आठबरस पद केवली पालि पाय निरवान । शतंजोवक्कै मुक्तिपद परम लह्यो सुग्यान ॥ शिष्यनहो इन दुहुन के रहे तबै तिहि पाट । जंबूस्वामी तें तहां रही धरम की बाट ॥ रिषभदत्तबिवहारिया तिया धारिनी तासु । जिन तें जनमें नाम सुभ जंबूस्वामी जासु ॥ सुनि सुधर्म बानी लह्यो सब संसार असार । आठ तिया ताके तऊ राग रहित बिवहार ॥ इक दिन ताके सदन मैं प्रभव नाम इकचोर । आय पांचसे जन सहित चोर बिपुल धन जोर ॥ चल्योगेह चलिनहिं सक्यौ सासन देव प्रभाव । तब जंबूके पग परयौ सो तस्कर कौ राव ॥ कह्यो स्वापनी सीखिये हमतैं बिद्या सार । अपनी हमें सिखाइये थंभन बिद्या चारु ॥ तब जंबू ता चोर कों सब चोरन के साथ । धरमकथा उपदेश कहि बोधे सब मुनिनाथ ॥ आय आठ तियके सहित अरु उनके पितुमात । सबतस्करमिलि पांचसे सत्ताइस जनजात ॥ इन सब मिलि चारित लियो अति अगिनित धनदान । महावीर तें साठवें बरस जंबु निरवान ॥ भये तहां तिहिं समयतें ये दस बोल बिछेद । मनपरजाई ग्यान इक परमावधि पुनि वेद ॥ लब्धपुलाकी तीसरो आहारक तन फेर । पुनि चारित त्रय भांति कौ कह्यौ पांचवौ हेर ॥ इकपरिहार विशुद्धता ताकों पहिलौ भेद । संपराय सूक्षम बहुरयथा ख्यात पुनि वेद ॥ छपकस्त्रेन छह पुनिकही उपसम स्त्रे नोसात । जिन कल्पी कहि आठ नव केवलग्यान विख्यात ॥ दसवां मोष पधारनौ ये दसबोलदखान । कहेभयेविच्छेद ये जिनजंबू निरवान ॥ जिनजंबू के पाट पुनि प्रभवस्वामि थिर होय । यों बिचारचित में किया पाट जोग नहिं कोय ॥ तब सिय्यंभव बिप्र इक राज गृहीके मांह । जग्य करत लखि तासु मैं साध जोगता छांह ॥ तिहिंपर मोदि प्रबोधिकैं सबदिज कर्म छुड़ाय । दई शांति जिन नाथकी प्रतिमां ताहि दिखाय ॥ गुरु मुख सुनि उपदेश पुनि

[illegible] किके पाटपर बैठे सो गुणखान ॥ [illegible] जिन के पाणिग्रान । ताहूकों लघु [illegible] जानि ॥ पद्मनीर निग्रान तें प्रभव [illegible] जम्बू [illegible] कीने तिहिं हाल ॥ पुनि [illegible] जिन [illegible] गोत । जसोभद्र [illegible] [illegible] ॥ [illegible] शिवपद गाढर गोतजोय । [illegible] पुनि [illegible] ॥ भद्रबाहु [illegible] जाय [illegible] । [illegible] गुप्तिके [illegible] साधीनाग्वहरन पुर [illegible] कीनों [illegible] । भद्रबाहु तातें अनुज [illegible] ॥ [illegible] गुरु कीना अपनो पाट । [illegible] पै काट ॥ जोतिम [illegible] [illegible] कुज्ञान तें सब भई झूठो ताको [illegible] [illegible] सुखदाय । सरी करी [illegible] गुरु [illegible] ॥ [illegible] धर्म नटाय ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] विजय [illegible] [illegible] जानों [illegible] ॥ [illegible] मिथ्या [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] बात [illegible] में कालकोस जिहिं [illegible] विजय विसवास । साढ़े [illegible] । [illegible] कीनोंही विवस [illegible] नृपचहन की पहुंच्यो

राजहजूर। पहुंचिसोचिकछु समझि पुनि भयो विरति भरपूर ॥ लई विजयसंभूतितैं चारित दिक्षा जान। सिरिया पुनि मंत्री भयो नृप आग्यापरमान ॥ वोधन गणिकाकोसकैं थूलभद्रतहं जाय। चतुरमासतिहिंपर रह्यो जल जलजनकेन्याय ॥ भाख्यौसाढ़ेतीन करहसतें रहि कों दूरि। मन आवै भावै सुकर सरल भाव रस पूरि॥तैसें ही औरौ तवै तिहिंगुरुभाई तीन। लगेकरन तपतीन थल अप अपने मति लीन ॥ सिंघसदन सुखइक वस्यो एककूप मुख आय। इक अहिगृह मुख सबन यों वरषा दई विताय ॥ थूल भद्र कीनौ कठिन पै सब तैं तप जान। खड़गधार तीछन अनी घनी वनी दुखखान ॥ इक वरषा रित रस भरी घनघुमड़नि चहुं ओर। सरसनि वरसनि परसपर कल कूकनि पिक मोर ॥ लनकनि चमकनि चंचला गरजनि सरजनि काम। महोमहा आकास सब भयो उदीपन धाम ॥ अरु युवती नवजोवना भूषन वसन बनाय। हाव भाव दृगभौंहकै अरु अनुभावविभाव ॥ नृत्य नाट्य गुणगान के तान ताल मिति मान। वाजनिवीनप्रवीनकर सुर लैलीन निदान॥ एते सब वाधक अधिक साधकसाधनसार। डिग्यौ न डग भरि अचल मति थूलभद्र निरधार ॥ वरषा वीतें गुरुनिकट निपटविनयजुत सोय।ल्यायो गनिका वोधि संग कृपा दीठ गुरु जोय ॥ कही अहो दुक्करदुलभ तुव तप यों द्ववेर। एक वेर तिन सौं कह्यो तीन शिष्य तन हेर॥ तेमन में दुख पाय अति कोप गोप मुख फेर। सिंघ गुफा वासी जती दूजी वर्षा फेर ॥ उपकोश्या वेस्या सदन पावस करन निवास।आस धारि मनमैं चही अज्ञा वर गुरु पास ॥ ज्वाव न दीनो गुरु जब जती सुतब तिहिं काल। विनुही गुरु अज्ञा गयो गणिकागेह सभाल॥ धर्मलाभ तासैं कह्यो तिन चाह्यौ धनलाभ। वसीकरन मोहन भर्यो गुनमय गनिका गाभ ॥ चितवतही तनमन लियो धन विन सर्यो न काम। नृपनेपाल सुदेस तव गयोसाधवनजान ॥

[illegible] मैं नेह [illegible] वस काम । नदी [illegible]
[illegible] नाम ॥ तहां जाय जान्यो नृपति तिन स-
[illegible] । दियो रतनकम्बल सु ले आयो निय पै धाय ॥
[illegible] निकट कियो निवेदन सोय । तिन लै पग सों
[illegible] मोय ॥ [illegible] अपनों
[illegible] । देखि गाय [illegible] पाय अति कहन लग्यो [illegible] ॥
[illegible] यह लह्यो तुम [illegible] लाग्यो जान । [illegible]
[illegible] मोल अजान ॥ सुनि गणिका लागी कहन सुनरे
[illegible] । [illegible] कंबल बहु पोल तें [illegible] जान्यो मूढ़ ॥ अति
[illegible] ज्ञान [illegible] चारित्र । हाथ गवाये आपने क्यों
[illegible] ॥ सुनि मनकों धिक्कार करि विरति भयो सो
[illegible] राग [illegible] गहि वैराग अबाध ॥ वेग जाय
[illegible] । गह्योग्यानपथपरमपद लह्यो
[illegible] । गणिका [illegible] कोस नाम अभि-
[illegible] बांचि [illegible] नाम ॥ सभा माहिं
[illegible] दियो
[illegible] । [illegible] भाग ।
[illegible] ॥ [illegible] सभा जन तिहिं
[illegible] । [illegible] नृप [illegible] हित
[illegible] [illegible] कछु बड़ीन बात।
[illegible] नाम ॥ सुनि यह राजा
[illegible] । [illegible] के साथ ह्वै भद्रबाहु पै जाय
[illegible] मोय । चारि पढ़े पुनि सूत्र
[illegible] थूलभद्र परलोक । ह्वसे
[illegible] अमोक ॥ [illegible] भवजलोभद्र
[illegible] केवल पून ॥ थूलभद्र
[illegible] । [illegible] जिहि एला

[illegible]

पुन्य विवेक ॥ हस्तिसूर इने करचो जिन वासिट सुगोत। तिनकी पुन संदेप कछु कहीं विवस्था पोत ॥ इक दिन पुरी उजेन में पहुंचि गोचरी हेत। शिष्य गये तिनके तहां जिनजन हेनिकेत॥ लखि भोजन मिष्टान्न तहं रंक एक लगि साथ। आयो उत्तमजीव तिहिं जान्यो गुरु लखि हाथ॥ खीर पाखंड कौं तिहि दियो भो जन अति भरपूर। खाय अफरि करि वमन सो मर्यो कष्ट लहि भूर॥ मरि फिर जनम्यो नृपतिघर जातिसुमरन सोय। गुरुसौं भाख्यो विनय युत अन्या दीजै जोय॥ सोई हां साथे धरौं इक चारित नहिं होय। सुनि गुरु ताके हेत जिन धर्म विचार्यो सोय॥ सुनि गुरु श्रावक धर्म सुभ तिहिं कीनौ उपदेस। तिन नृप संप्रत नाम सो मान्यो गुरु आदेस॥ सवा कोटि प्रतमाकरी सवालाख प्रासाद। जीरन उद्धारे सकल तेरह से अबि खाद॥ करी दान साला विपुल सिति सत सात सुधार। कर छुड़ायसवं देस के सुखी किये नरनार॥ स्वस्थित और सुब्रत्त बुध हस्तिसूर शिष दोय। कोटिक गछ कांकंद पुर वासी जानौ सोय॥ तिनके शिष्य सु इन्द्रदिन गोतम गोती जान। तिनहूंके पुनि सिंघगिर गोतम गोत निधान॥ तिनहूं के पुनि शिष भये वइर गोतमी गोत। तिनकौं कछु विस्तार करि कहैं विवस्था पोत॥ धनगिर इक विवहारिया तासु सुनंदा तीव। तासु गर्भमैं चवि वस्योतिर्यक जृंभक जीव॥ धनगिर साध संजोग तैं चारित लीनौ जाय। पाछै तिनकै सुत भयो जननी कौ दुखदाय॥ इक दिन धनगिर निज घरैंकरन गोचरी आय। तियसुत दुखतैं लखि कह्यो यह आपनी बलाय॥ लेहु मोहि दुख देत अति रोय रोय दिन रात। आंखि लगी न छमास तैं जागत भयो प्रभात॥ जहां गये तुम आमतहं याहू को लेजाय। यह कहि झोली में दियो सुअन हठीलो लाय॥ लैआये गुरु निकट तिहिं गुरु भाष्यो हो जोय। सचित अचित जोई मिलै जाय विहरियोसोय॥ जाय सासुहैं सिंघगिर

[illegible] । भाग्यवन्त गण जानि तिहिं वैरि कह्यो गुरु-
[illegible] ॥ [illegible] तिहि एक श्राविका हाथ । गुरु दीनों
[illegible] सुनि पोस्यो जिय के साथ ॥ तहां पालने माहिं तिन सुनि
[illegible] सुनयौं । कहत साधवी वदन तें सीख्यौ गयो न व्यर्थ॥
तीन बरस वय जब भई सुमिर सुनन्दा माय । खेलत लखि सुत
[illegible] के चावन गाई आय ॥ बालक मांग्यो गुर निकट गुर नहिं
[illegible] सोय । जाय पुकारी नृपति पै सोधनगिरि को जोय ॥
[illegible] तब गुरु बोलि सुनि सिगरी पिछली बात । कह्यो वस्तु
[illegible] मन नोसाकी मात ॥ नाना विधि के मात तब धरे खि-
[illegible] । उन एको मोना छुयो ओघा लियो उठाय ॥ नृप
[illegible] हारि पछताय । लै चारित गुरु तेंरहो
[illegible] ॥ आठ बरस को जब भयो बैर भयो तब साध।
[illegible] बाहर गये अनाथ ॥ पाछे सब साधन
[illegible] । आये जब गुरु सुनि चल्यो देन पाठ
[illegible] । वेटिपाट गुरु-
[illegible] ॥ [illegible] एक सुर तहं आयो
[illegible] । [illegible] गुरहिं पंठपाक अबाधि ॥ पै
[illegible] विहरयो नहिं ल्यहि सोय । रीझि होय
[illegible] दई लब्धि वडकी जोय ॥ लब्धि महानमहूं दई लई
[illegible] । [illegible] दुरभिक्ष तें ल्यये बचाय निबाहि ॥
[illegible] विचार । वज्रसेन निज
शिष्य सों भाख्यो गुरु निरधार ॥ म्हाशेठ जिनदत्तक श्रावक
पाछे जोय । घर रसोई नासु कौ लाख द्रव्य जब होय ॥ सोया
काल अकाल में मिलें न नित इहि काज । मरन चहत तिहिं
जाय तुम बरजों आनों बाज ॥ वज्रसेन सुनि गुरुवचन चलिपहुं-
च्यौ तिहिं देस । मिल्यो सेठ जिनदत्त सों भाख्यो गुरु उपदेस॥
तिन मन में चिंतन कियो जो इहि काल दुकाल । लहें भक्ष दुर-

भिक्ष नें बचें छुटे जंजाल ॥ नो दारिन हमलेहिं यह चिंतन आई ज्वार । नाज समाज जहाज वहु भरि भरि आये द्वार ॥ भयो सुभिक्ष सुदेस सब सुखी भये नरनार । सोचि प्रतिग्या आपनी मन नें करि निरधार ॥ चारयों पुत्र कलत्र जुत सो श्रावक जिनदत्त । चारित लै संसार तजि साध भयो छदमत्त ॥ तिनकी साखा चारि तें तीन गई विच्छेद । एकरही तिन चारिमें साखा इन्द्रसुवेद ॥ वैरस्वामि वहु साध संग करिकें तप संथार । देह त्यागि गिरमूलतट लह्यो सुर्ग निरधार । अही रहे वहुवर्ष अरु जती चवालिस वर्ष । छत्तिस गुरु पद पाय पुनि सुर्ग गये जुत हर्ष ॥ मनपरजाई ज्ञानअरु अर्द्धन राच सयेन । गये भयेविच्छेदये तवहीं तें जगऐन॥ चारि शिष्य तिनके भये तागिल पोमिल फेर । तापस और जयंत तें साखा चारि सुहेर ॥ भद्रवाहु के चारि शिष एक थविर गोदासु । अग्निदत्त पुनि जन्हदत सोमदत्त पुनि जासु ॥ भये थविर गोदास के चारि शिष्य वर फेर। चारि साखतिन तेंचली इक तामलसो हेर ॥ दुतिय कोड़वरसी ही पंडवर्धनातीन । दासीपव्वडिका वहुरभूतविजय गुरुपीन॥ नके वारह शिष्य भये नंदभद्र तहं एक। भद्र कह्यो उपनंद नि तीसभद्र सविवेक ॥ पांडभद्र जसभद्र अरु सुमनिभद्रकहि र। पूर्नभूल दोंडभद्र जुत सयलमतोपुनि हेर ॥ जंबूदीह सुभद्र नि सूरभद्र इहि नाम । भये वारहौं शिष्य ये इनको संख्यत्त- ाम ॥ भई शिष्यनी सात पुनि भूतविजयकीओर । थलभद्रकी हिन हैं ते सातौं इक ठौर ॥ जक्खाजक्ख दिनारु पुनिभूताभूत ना सु। सेना अरु वेना वहुर रतना सातौं पास ॥ थविर महा ारि साधके आठ शिष्य पुनि जान । उत्तर वल सहधनढ पुनि हिसि रिद्धि मन मान ॥ पुनि कोडिन्नरु नाग कहि नागमित्र न जान । छलुक रोह गुप्ता कहेआठों शिष्यवखान ॥ अंतरं- का नगर में थविर महागिरि आय । तहां एक दंडी मिल्यो

[illegible] ॥ [illegible] मैं [illegible] कृपाल । [illegible] किनो तिहिं काल ॥ [illegible] [illegible] ते जानों [illegible] ते विना [illegible] पुनि [illegible] । मृग [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ऐसो [illegible] ॥ राज [illegible] तिहिं काल । जीत्यौ [illegible] सो तहां [illegible] के जाल ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] निरधार ॥ [illegible] तीसरो तिन [illegible] । [illegible] कहां अब लौं [illegible] कीव । [illegible] । [illegible] लग्यौ सो डोर [illegible] ॥ [illegible] तिहिं [illegible] ॥ जीति जाय गुल [illegible] ॥ [illegible] । [illegible] भगवन के वच [illegible] पुनि [illegible] पे सोय । [illegible] तिहिं [illegible] ॥ निकस्यो [illegible] । [illegible] भई चारि [illegible] जान । चंद [illegible] ॥ [illegible] के [illegible] पुनि [illegible] जात । [illegible] [illegible] पुनि [illegible] हैं । [illegible] ॥ उदंवरोका [illegible] जान । [illegible] सा.ख चारि [illegible] । [illegible] निजान । उल्लगच्छ [illegible] ॥ [illegible] पुनि पांचवां परि [illegible] । [illegible] गुत नें चारन नामा गच्छ ॥

प्रकटे तातें सात कुल साखा चारि प्रतच्छ । थविर भद्रजस तें कह्यो उडुवाड़क शुभ गच्छ ॥ साख चारि अरु तीन कुल ताके प्रकटे फेर। एक भद्दजस नाम कुल भद्रगुप्त पुनि हेर ॥ तीजो है जसभद्र पुनि चारयों साखा जान । चंपयाभ अजिकाकाकंदिका प्रमान ॥ मिहिलजिका चौथी कहा अत्र कामर्द्धका तासु । गच्छ बेस वाटिक कह्यो चारि चारि पुनि जासु ॥ साखा अरु कुल नीपजे सावस्थिक तहं एक। राज पालका दूसरी अंत रंजिका टेक॥ चौथो खेमम लिघका एकगणित कुल फेर। मेहक कामर्द्धक वहुर इन्द्रपुरग पुनि हेर ॥ ईसगुप्त तें पुनि भयो वरसा नवनान गच्छ। चार साख कुल तीन पुनि तिन के भये प्रतच्छ ॥ कास वर्तिका गोतमी वासिस्थित एतीन ॥ साखा चौथी सोरठी सुनि कुल तीन प्रवीन ।।ऋषिगुप्त रु ऋषि दत्त पुनि अभिजयंत कुल स्वच्छ। सुस्थित सुप्रति बुद्ध तें भयो कोटि गन गच्छ ॥ चारि साख कुल चारि पुनि तातें प्रगटे जान। उच्च नागरी एक अरु विद्याधरी बखान ॥ तीजी वच्ची मध्यमा चौथो साखा जान । ब्रह्मन एक वछल्यहै वानिज तीजो जान॥ प्रश्न वाहना तासुकौ चौथो कुल पहिचान। येई चारयों साख अरु चारों कुल परमान ॥ अरु सुस्थित प्रतिबद्ध के पांच सुशिष्य सुचाल । इन्द्र दिन्न प्रियग्रंथ अरु विद्याधर गोपाल ॥ अर्हदत्त ऋषिदत्त ये पांचो शिष्य सुचाल।विद्याधर तें साख पुनि विद्याधरी विसाल ॥ इन्द्रदिन्न के शिष्य दिन तिन के शिष पुनि दोय। संतसेन अरु सीहगिरि संतसेन तें सोय उच्चनागरी नाम तहं साखा निकसी जान । संतसेन हूं तें भये चारि शिष्य पहिचान॥ आर्ज सेनता पद्म अरु थविर कुबेर बखान । ऋषिपाली चौथे यहीसा खाचारि प्रमान ॥ इनहीचारों नाम तें साखा च। रिबखान.थविर सीहगिर के भये धनगिरि शिष्य प्रधान वेरस्वामि दूजे भये सुमतिसूर पुनि जान। और अरहदिन सुमति पुनि गोतम गोतो

तिनके शिरनाम्म भये तिन तें निकसी साख। ब्रह्मदीप नाम जिहिं जाको जग में साख ॥ ब्रह्मदीपवासी तहां तापस एक। पानी पर गति जासु की ऐसो देखि विसेक ॥ सकल श्रावक सकल भए तासु के दास। एकश्रद्ध श्रावक गयो सुमति गुरु पास ॥ तापस की करनीकही गुरु सुनि सुनाय। नहीं तपस्या शक्तियह लेपशक्ति सुनि भाय ॥ तापस को भयो कपट शिष्य घर ल्याय। चरनोदकला को नीर तें पाय ॥ पुनि जल पर चालन कह्यो तपसिहिं मनाय। पैठिवार बूड़न लग्यो करगहि लियो बचाय ॥ तहां आय कै उतरन चाह्यो वार। नदी फाटि तें पार ॥ ऐसो अचरज देखिसब भये । तापस गो थल लाज भज्यो भयो भूरि भय । के और पुनि तीनशिष्य त्रय साख। वज्रसेन आरज्ज्य के पूनागिर । तिनके शिष्य पुनि तिनके नागल तिनके बखान। तिनहूंके कालिक ॥ तें भद्र पुनितिन केसेवक तिनके मणिक्ह ॥ तिनके धर्मरु बखान। फल्गुमित्र तिनकेभये गोतम गोतीजान॥ है कालिक गोतमगोत। गोतम गोतीसो

जंबूनंदसुर्मां- जोय ॥ क्षमा गमनगुनि बखान। गोतो थिर गुपत धर्म । सिद्धांत तिन गह्यो जान विछेद। मन खेद ॥ पुनि सारवाविद्या एक। तिनपुनि सिद्धसेनसविवेक॥ भये दिवाकर कल्यान। जिनपर बोधेबोध

दै विक्रम नृपति सुजान ॥ महावीर तैं चारसै सत्तर वरसवितीत। भये भये ते थविरजिन लहीजनमकी जोत ॥ वरसपांचसैं अरु असी पांच औरहू सोय । विक्रम तैं हरिभद्र मुनि सूर भये पुनिजोय॥ फेर शिष्य तिनके भये हंस और परहंस। जैनागम गुरु तें सवे पढ़े जोग परसंस॥ पुनि छल करिके भेप घुरिवोधु न कैं तिहिंकाल । जाय देस तिनके पढ़ी तिनकी विद्या हाल॥ सो वोधन जान्यो कपट लहि भाजे तजि देस । मग मैंपाछैंआय उन मारे करि निःसेस ॥ गुरु सुनि कोपे कोपि पुनिकीनी छमा छमाल । मानतुंग आचार्ज पुनि प्रगटे तेही काल॥ जिन भक्तामर तवन वरकर्यो हर्योअग्यान । वरसआठसैतवगये विक्रम नृपतैं जान ॥ पादलिप्त आचार्जहूं भये तिहो दिन आय । पगलेपन करि करत जे तीरथ पंच वनाय ॥ तीन कालकाचार्ज पुनि भये थविर गन नांह । प्रथक प्रथक तिनकी कथा सुनिये अति दुति छांह ॥ प्रथम कालिका चार्य के शिष्य प्रमादी होय। गुरु अग्या मानी नहीं गुरु तजि गये विगोय ॥ आन देस में शिष्य इक सागर चन्द्र सुजान । तहां गये गुरु तिनहु नहिंजाने गुरु पहिचान ॥ वाद कियो करि हारि पुनि जान्यो वड़ो प्रभाव। पाछे तैं सव शिष्य तहं पहुंचे ढूंढ़त पाव । तव उनहूंपहिचानिकै सव मिलि पकरे पाय । चूक आपनी मानिकै लीनेदोपखिमाय॥ एक समै सुरपति सुन्यो सीमंधर उपदेस । सुनि पूछ्यो ऐसो कोऊ सुग्य भरत थल देस ॥ दियो कालिकाचार्य तव श्रीमंधर बतलाय। इन्द्रवृद्ध वपु धरि तहां पहुंच्यो करि चित चाय ॥ आय पूछि संदेह सव पाय यथारथ ज्वाव । मुदित होयआनन्द प्रति ओपी आनन आव ॥ पुनि पूछी निज आरवल सुरपति हाथ दिखाय । है सागर कीजानि कहि सुरपति दियो वताय ॥ तव सुरपति निजरूप धरि प्रगट होय गुरु पास । मांगि सीख तहं तैं गयो अपने सुर पुर वास ॥ महावीर जिननाथ तें सवा-

[illegible] करो । [illegible] कवि [illegible] मुनि जग में भये महर्ष ॥
[illegible] गिरधौं [illegible] । वीरसिंघ नर-
[illegible] निसान ॥ ताकौ [illegible] कालिककुं परमसुता
[illegible] एक दिन वन खेलन चोगान ॥
[illegible] लियो उपवनमें विश्राम । तरु छाया तर
[illegible] ॥ करत बखान तहां सुने गुनकर-
[illegible] चारित लियो निदान ॥
[illegible] चारित्र । कुंवरे जाग्यो जोग
[illegible] पवित्र ॥ तेक्रम करि विहरत गयो पुरी उजेनी
[illegible] राजा तहां राज करे [illegible] ॥ गई सुर-
[illegible] नरपति [illegible] तिहिं देखनृप
[illegible] नृप बाहर दईन
[illegible] दे ग्यान ॥ गुरु मन
[illegible] भारदे शिष्य शिर
[illegible] गये गाम्यो नृप के
[illegible] गिरनाज ॥ साम्बी
[illegible] गिरयो कूप में गुरु तहां
[illegible] करि गुरु तहां वान वान मों
[illegible] वानन बांधि ॥ नृप मुनि
[illegible] कीनो भग । विप्लवमान रानगान
[illegible] संजोग करि नृप पे कोप्यो
[illegible] डरप्यो नरनाह ॥ सोच
[illegible] माह लिख्यो सोसव
[illegible] अपनो सिर [illegible] त्यागिदेहि
यह देस । [illegible] मुनि गुरु यह संदेस ॥ धी-
रज दे नृप सों कह्यो [illegible] करि संकोच । पुरी उजेनी राज तुहिं
देहुं [illegible] सोच ॥ यह कहि जोरि अनीक गुरु चढ़े नृपहिं

लै संग। मारग में ग्रीषम बदलि बरखा कीनो रंग॥ घरपरसोंहैं घन भये झर बरसोंहैं मेह। घर दर सोंहैं पथिक दृग करिसर सोंहैं नेह॥ घिरेघुमड़िघन घोर घर रैन द्योस को ग्यान। कुमुदकमल तें पाइयत कै चकवो चकवान॥ झपकिझपकि झमके झरी लपकि लपकि लपि बीज। टपकि टपकि ओली करें छपकि छपकि मग भीज॥ दंपति अंक निसंक भरि लूटत घनज्यों रंक। माननि तज्यो अतंक अरु मारग छायो पंक॥ मारग रिल अव रोध तें नृपति रहे तहं छाय। भई छावनी कटक की रितु सुहावनी पाय॥ चतुरमास बीत्यो जबै सरद आगनन आय। अमल अम्भ आकाश ह्वै मारग दियो बताय॥ तऊकटक बिन धन नहीं चल्यौ रह्यो तहं छाय। तब कालिक गुरु जान यह कीनौ पीन उपाय॥ करि सुदृष्ट की दृष्ट तें सब इष्टका पजाय। करि दीने सुवरन मई छई रिद्ध निधि आय॥ साजि बाज गज राज वर संगर साजि निनाद। जुरे जंग दुहुं ओर तें सुरे न ससर विवाद॥ मची घुमड़िघमसान अति बची नएको मार। तोप तीर तरवार के वार भये तनपार॥ रुधिर नदिन के परतें भरे कूप सर कुंड। जामैं जलचर ज्यौं जगे रुंड झुंडगज सुंड॥ भाज्यौ गर्द्दभसेन भजि गही कोटकी वोट। परन लगी ता कोट पर सकल कटक की चोट॥ साधी विद्या गर्द्दभी गर्द्दभ सेन बनाय। सो लखिलीनी ग्यानबल गुरुस्वामी सुखदाय॥ बोलि एकसौ आठ भट सबदबेध जिहिं साख। रहो घातकरि सकल मिलि यों तिनसौं गुरु भाख॥ कह्यो जबै सो गर्द्दभी सबद करै मुख फार। सब मिलि त्यागौ बान तुम सबद रोध अनुसार॥ त्योंही कीनौ सबन मिलि गई गर्द्दभी भाग। गर्द्दभनृप मुख पेंकियो गधीमूत्र मल त्याग॥ बांधिलियो गर्द्दभ नृपति दुर्ग तोरि तिहिं काल। जीव दयापुनिपालितिहिंदीनो देशनिकाल॥ गुरु साखो नृप कौं दियो नगर उजैनो राज। सग्सुतित्रहिनहि

[illegible] तिन मुनि राज ॥ तृतियकालिका चार्जको कह्यो [illegible]। त्रितियकालिका चार्ज गुनकहिबे को गमदाव॥ [illegible] चार्ज तें कमकरिकरत बिहार। आगे भरवन [illegible] निज भिग्दार॥ सो गुरु को भरनेज अरु बाल [illegible] मान। गुरु नागममहिमा महतकियो मान सनमान॥ [illegible] गुरु चरन राखे भर चौमास। पै ताकें बिहरें [illegible] गुरु [illegible] उदास॥ तातें नृप दुख पाय निज प्रोहित [illegible]। तासों सब मन को कथा दीनो बिथा सुनाय॥ [illegible] कह्यो सब श्रावकें बुलाय। देहु बिबिधि [illegible] मुनि नर बिहरें जाय॥ त्यौंहीं कीनी नृप सकल [illegible]। भोजन नाना भांति के दीने तिनहिं अतोल॥ [illegible] के शिष्य रान तिन बिहरें सब जाय। नानाविधि [illegible] आवें खाय॥ तब गुरु पूछो नित्य प्रति कोन [illegible]। तिन कारन तब कोन के शिष्यन कह्यो निदान॥ [illegible] प्रभु आज पूछि सब बात। आय निवेदं [illegible] प्रात॥ दूजे दिन शिष्यन सकल पूछी [illegible]। कह्यो आय गुरु सों सकल सुन्यो शांत प्रभु [illegible] अनुचित कह्यो बिनुहीं भाग्य गाय। थल [illegible] पठान है जाय॥ जहँ सालवाहन [illegible] बास। भयो पजूसन पर्व सित पंचमि [illegible] तहां ताही दिन बिवहार। सो [illegible] कौन बिचार॥ पोस करें तो [illegible]। कैसे रहे नहिं पोस बिधि करें [illegible] पंचमी कठको पोसहि धार। रहे [illegible] अग्या यों निरधार॥ तब भाखो गुरु होयनहिं [illegible] सोय। अधिक पंचमी दिवस तें पर्व पजू-सन सोय॥ तब नृप भाखी होय जो अग्या प्रभु की आज।

चौथ सुतिथ पोसह करौं कालि महोछौसाज॥ यह सुनिगुरु राजी भये दीनी आग्या मान।थापी ताही दिवस तें चौथ पजूसन जान॥ सात ऊन दस सौ बरस महावीर तें जोय।बीते प्रगटे कालिका चारज जग में सोय॥ भई आठवीं वाचना संपूरन यह जान। समाचारिकी वाचना नवमी सुनौं निदान॥

अथ नवमी वाचना॥

कहियत नवमी वाचना अब सब सो सुनि येह।साध समाचारी सकल अट्ठाइस गनि लेह॥खानपान संचार अरु रहनि चहनि दे आदि ।अनुचित उचित विचार सें जेते विवहारादि॥ चतुरमास बरसात नें क्रिया बिबेक बिचार । सदाचार जे साध के समाचार निरधार॥बरषा रितु आरंभ मैं छाड़ि सकल आरंभ। चारि मास के नेम गहि साध अलोभ अदंभ॥ रहैं एक थल माहिं कौं मिति अहार विवहार। सो थल तिनके हित सजे ग्रहबासी साचार।स्वच्छ सुद्ध मृदु भूमि करि लीपि पोति धवलाय।छात छौनि त्रिन छान करि छाय बिछौनि बिछाय॥ नाल प्रनालन की निपट सुचि करि गच ढरवाय। साध साधवी कें ग्रही ऐसें थल पधराय॥ रहैं साध तिहि स्वच्छ थल भर चौमासा छाय।सुमन सुवच सुभ कर्मकौं स्वच्छ सुसील सुभाय॥ तहां प्रथम इक मास पर जब बीतै दिन बीस। भादों सुकला पंचमी सकल तिथन मनि सीस॥ आसाढो पून्यों हि त दिन पचासवैं जोय।बढ़ै न तामैं एक दिन घटै तो घटती होय॥ ता दिन पर्व पजूसना महावीरजिन कीन। गोतमादि गनधरन हूं त्यौंही कियो प्रवीन॥ त्यौं शिष्यन आचारजन थविरन हूं मिलि सर्व । उपाध्याय कीनौ करैं त्यौं हमहूं सो पर्व॥

अथ दूजी समा चारी॥

औखध अरु आहार हित गमना गमन विचार । सब दिस ढाई कोस मिति साधन कौं संचार॥ पैनिस अपने ठौरहीं आय

[illegible] । [illegible] निमित्तमि रहन होत साध कोंबाध॥

अथ तृतीय समाचारी ॥

[illegible] जो नदी जल सन काल प्रवाह । साध गमन [illegible] अनुचित अवगाह ॥ होय जानु तें हेठ जल [illegible] मोय । नगणगडगमग मांहिं जिम अध ऊरध [illegible] । ऐमें जो जन चलि सकै सूधो पाय उठाय । अल्प [illegible] साध यों जाय सकैं तो जाय ॥

अथ चतुर्थ समाचारी ॥

[illegible] होय भांतिके साध । तिनसोंगुरु जिहिं [illegible] नाहि उपाध ॥ ग्लान साध आहार अरु [illegible] ॥ अथवा निजआहार हित विहरैग्रहपति [illegible] तनकहूं घटवढ़ चहै न सोय । लेनदेन [illegible] तें होय ॥ ग्लान साध निज हित [illegible] । गुरु निदेश तें तनकहूं न्यूनाधिक [illegible] ॥

अथ पंचम समाचारी ॥

[illegible] साध तिन्हें इहिं काल । वरपा में [illegible] वच पाल ॥ दूधदही नवनीत घृत तिल [illegible] । साध ग्लान में उचित नहिं जो लौ तन [illegible] ॥

अथ छठी समाचारी ॥

ग्लान [illegible] हित साधजो ग्रही गेह चलि जाय । लेउतितोई [illegible] अरु जो खाय ॥ जदपि ग्रही दे अधिक अरु कहै [illegible] तुम देहु । उवरे तो तुम विहरियो अथवा औरन देहु ॥ [illegible] उचित नहिं साध को लेनोअधिक अहार । ग्लान साधहि-तहुं न लै विना कहै ग्रहधार ॥

अथ सातवीं समाचारी ॥

थविर कलिपश्रावक सुखद साध सेव परवीन । चौरासीगछ तासमें भेद न माने दीन ॥ सब साधन सांयौं कहै जो चाहो सो लेहु । तदपि अनलखी वस्तुकों कहै न तिनसों देहु ॥ अति उदार दातार घर जो न होय सो वस्त । कष्ट होय दोवो चहे जिंहकिंह भांति ग्रहस्त ॥पै जो अनदेखीचहैवस्तु कृपनपैजाय । तौ कछु तैसौ दोष नहिं जैसौ कह्यो सुनाय ॥

अथ आठवीं समाचारी ॥

प्रति दिन लेत अहार जो साध निरन्तर कोय । एकै वार ग्रहस्त घरकरै गोचरी सोय ॥ पाधातपी अचार जरु ग्लानवाल हित जोय । ग्रही गेह द्वै वारहू जाय न अनुचित होय ॥ व्रतो इकंतर जो जतीताहिगोचरी हेत । अनुचित नहिं द्वैवार जौजाय ग्रही ग्रह खेत ॥ एकै विहरन मांहिं सोजो जानै संतोष । धोय पोंछि कै पात्र फिर चहै न जाचन दोष ॥ नाहीं तोते पात्र सब अन धोये ही फेर । लैग्रहस्त घर जायकैजाचैदूजीवेर॥ द्वैउपास साधन करै जे पारन दिन सोय । दोय वेर जाचै तऊ अनुचित तिन्हैं न होय ॥ साधक तीन उपास के ग्रही गेह त्रय वार । जाचै तौ अनुचित नहीं एही क्रम निरधार ॥ पांच सात दिन पारब केवास करैं जे कोय। तिन्हैं नेमनहिं जब चहै चहैं ग्रही घरसोय॥ पै मद माया कोप अरु लोभ मान तजि साध । ग्रही गेह में गोचरी विधवत करै अवाध ॥

अथ नवमीं समाचारी ॥

नित मितभोजी साधकौं सब विधि कौ जो वार । विधवत ले अनुचित नहीं यों भाख्यौ निरधार ॥ एकंतर वासी जती त्रय विधि कौ जल लेय । कर धोवन अरु पात्र को भात मांड़ पुनि नेय ॥ तिल तुस जब धोवन सलिल तीन भांति कौजोय । दो-उपासीसाध कौं उचित कहावै सोय॥तीन उपासी साधकोंतीन

[illegible] कैंनार । कांजी मांडरूढउष्नजल पीनैंउचित विचार ॥ [illegible] न कल्पन करैं न रांखैं साध । तिनहूकों केवल उचित [illegible] नबाध ॥ [illegible] निकनई रहित जल तीन उबालि उबालि । [illegible] तिहि [illegible] पुनि स्वच्छ पात्र में ढालि ॥ अधिक [illegible] रहित मिन जल ऐसो जोय । साधु यमी नियमी ब्रती [illegible] साधै सोय ॥

अथ दसमी समाचारी ॥

[illegible] जती के पात्र में दे अहार तिहिं काल । कौर गिरै [illegible] इक दात नाम सो हाल ॥ ऐसे जौलों पात्र । टूटै नहिं [illegible] । इक [illegible] इक सो जल दात विचार ॥ भोजन [illegible] नेम करैं नित साध । चार पांचलें अधिक [illegible] प्रवाध ॥ नेम करै तेतो चहै न्यून अधिक [illegible] सो साध फिर जाय न जाचन सोय ॥

अथ ग्यारहवीं समाचारी ॥

[illegible] काज में जहां मिलैं [illegible] । भीड होय [illegible] विचारि ॥ [illegible] तें सात मदन [illegible] । [illegible] जहां लों तिहि सदन उचित नसावैं नांहि ॥

अथ बारहवीं समाचारी ॥

[illegible] मेह के मांहि । उचित [illegible] अहार [illegible] मेह में जांहि ॥ [illegible] अथवा तहां [illegible] अहार । जो बरसै बरसात में ज्ञानी बड़ी फुहार ॥ [illegible] हाथ सों ढांपि अहार छिपाय । [illegible] सुखाय ॥ [illegible] पात्र घर ते [illegible] मांहि । [illegible] चादर ओढि ने अल्प वृष्टि में जांहिं ॥ [illegible] मेह में पहुंचि [illegible] खुलै न मेह । तहां [illegible] साधकों उचित बिना संदेह ॥ [illegible] तर वा अपने थल आय । रहैं रहैं नहि पै तहां साध [illegible] छाय ।

जो कदाचि यति यान न करे रसोइ कोय। अरु विहराव साध कों प्रीत पूरवक सोय॥ साध पहुंचि पहिलें जितो जो अन सोझ्यो होय। सोई विहरे अरु न ले पाछैं सोझ्यौ सोय॥ अरु जो विहरनकाल मैं खुलैन क्योंहू मेह। पहर पाछलैं जाय के खाय तहां पुनि तेह॥ धोय पोंछिकै पात्र तब रवि रहतैंघर आय। रहे रहै नहिं रात तहं ग्रही गेह मैं छाय॥

अथ तेरहवीं समाचारी॥

मेह अछेह न देह जौ जान साध कौ आय। ग्रहींगेह तेंतौ तहां ठाढ़ौ रहै सुभाय॥ एक साध इक साधवी कै द्वै कै इक दोय। त्योहीं साधरु श्राविका मिलि नहिं ठाढ़े होय॥ संगबाल वा वालिका जऊ पांचवौं होय। तऊ एक थल मिलि रहन अनुचित जानौ सोय॥ जौ वा घर के दर वहुत अरु वहु नरकी दीठ। निकट वृद्ध वृद्धा किधौं तौ नहिं अनुचित डीठ॥ पै तिहि घर निसि नहिं वसै उठआवै निज गेह। सांझ समय लौं राह लखि वरसैं मेह अछेह॥

अथ चौदहवीं समाचारी॥

खाज पान स्वादिम असन चारि भांति आहार। आन साध हित हेतजो साधे साध विहार॥ ताको रुचि पहि चानिकै पूछि सुभाव विचार। तातैं अधिक न ऊन सो विहरै साध अहार॥

अथ पन्द्रहीं समाचारी॥

तनकौं तनके अंग सव जौं जल भीजे होय। भोजन चार्यो भांति कौ साधन कल्पै कोय॥ तिन मैं तन मैं सातये अंगप्राय जहं वार। चिर थिर रहि नहिं सूकई ताकौ अधिक विचार॥ कर कर्रेखा दोय यें नख नख सिखा सुचार। भौंह अधर अरु वोठ ये सातौं जल आधार॥

अथ सोलहीं समाचरी॥

प्राननील वीजरु हरित फूल अण्डजये नेह। उवरंतेछ्वारिये

[illegible] देह ॥ ग्रान जीव सूक्ष्म जिने विंद्री तिद्री देह। पां-
[illegible] कहे ते सब मनसुनि लेह ॥ नील पीत सित श्याम
[illegible] बरन बहु जोय। तिनमैं सूक्ष्म कन्थुआ ठवरे जायन सोय
[illegible] तामसको नजर न आवै कोय। ग्यान दीठ लहि नजर
[illegible] उचारै सोय॥ पात्र आदि उपगरन सब यातें वार-
[illegible] पडलेह हरि राखे साध विचार ॥ नीलसूक्ष
[illegible] पंचरंग जान। पडलेहे उपगरन सब जैनो
[illegible] ॥ त्यौं अन्नादिक बीजमैं सब रंग सूक्ष्मजीय। जानि
[illegible] तिहि लहि पडलेहन कीय ॥ हरित जीव सूक्ष्म
[illegible] होय। तिनहूं तै उगरन सबन पडलेहन
[illegible] ॥ [illegible] जीव सूक्ष्म सकल पचरंग हूं तिहि रीत।
[illegible] पडलेहो करि प्रीत ॥ पुनि पिपीलिका
[illegible] तिनहूं तें पडलेहिये उपगरनादि तिते
[illegible] भवमैं करै निवास। तिनहूं तें पडलेहिये
[illegible] ॥ [illegible] जीव सूक्ष्म कहे [illegible] कर काहल आग
[illegible] सब दोग ॥ सुमत पांच जे
[illegible] । [illegible] धर्म के मांहि जो रच्छा जीव
[illegible] निति त्यौं गुमति पिछानि। लेन
[illegible] आयो इक जानि ॥ है उपजाई मेडकी पग
[illegible] । [illegible] होय के प्रेरन कीनों धाय ॥
[illegible] साधु उठाय अकाम। फिर भुव
[illegible] जीव विनास ॥ तब मन के परनाम
[illegible] । गयो आपने सदनकों सब अपराध
[illegible] कही भाखा सुमति बखान।
[illegible] सुमति सुजान॥ तहां एक दृष्टांत
[illegible] आय। साध एक तिहि नगर तें बाहर
निकस्यो धाय ॥ कहक लोग तासों लगे पूछन सुनो सुजान।

या पुर में केतिक कटक हमसों कहो वखान ॥ सुनि मन अनुचित जानके बोलनि बोल्यो सोय । कटक सुभट पूछ्यो जिनन तिनके सनमुख होय ॥ सुननहार देखत नहीं लखें सुनें नहि तेह । सुनें लखें बोलें नतेकहि गुप कियो अछेह ॥ जानिबावरो ताहि तव लोगन तज्यो निदान । बाक विवेकी साध की भाषा सुमति पिछान ॥ तीजी कहिये ईपणा साध भक्ति चितधार । घिनजिनके मन सहि रहै सुमतिईपणासार ॥ नंदपेन द्विज सुवन तिन साध समागम पाय । चारित लै तप आदरयौ अमर एक तहं आय ॥ लेन परिच्छा साधकी मन मैं कपट वढाय । साध रूप अनुरूप तिन धरे देह द्वै चाय ॥ इक रोगी वनि रहि तहां दूजहिं श्रेर्यो जाय । कहीं बात नंदपेन सौंताकी विथा सुनाय ॥ सो सुनि संगअहार लै वन मैं पहुच्यौ जाय । धरिसनमुख मो साध कें वोल्यौ विनय सुनाय ॥ पूज नगर मैं आइये सेवा नीकें होय । उन भाखी मो पग न मग सकैं चलन गति खोय ॥ नंदपेन सो साध तव लीनौं कंध चढाय । मारग मैं मल मूत करि दीनौ ताहि न्हवाय ॥ नंदपेन मनतनकहूं मान्यो नाहि सुखेद । तनमैंचन्दन लेप तें जान्यौ आन न भेद ॥ धन्य भाग्यनिज जानि अरु तन पवित्र अनुमान । अमर ज्यान करि जानि धरि दिव्य रूप सुखदान ॥ नंदपेन के पायपरि सवअपराध खिमाय । जस गावत भावत चल्यौ सुर पुर पहुच्यौ जाय ॥ चौथी सुमति निखेवनीं वधन सहत प्रतिकूल । करी साध पडलेह पै गयो समय तहां भूल ॥ जव घन तें निकर्यो लख्यो रवि तव जानो चूक । फिरि पडलेहन शिष्य कौं कह्यो पूजनै कूक ॥ शिष्यवक्र बोल्यो कहा झोली मैं हैं सांपि । सुनि सहि चुप रहि मौन गहि रहे ओठ मुख ढांपि ॥ शिष्य गोचरी हेत जव झोली लई उठाय । दोय सांप तामैं लखेरह्यौ चकित मे पाय ॥ करन गुरन के वचन कौ सांचौ सासन देव । झोली मैं द्वैअहि असित उपजाये तव

हेत ॥ फल्यो पाय गुरुराय कैं बार बार पछताय । अति दीनता [illegible] कीने जोर निमाय ॥ मात्र उच्चार सुपासवन सुमति [illegible] । [illegible] न नीको सुमति तें होय तुकिंचित होय॥सुर- [illegible] शिष्य में पात्र मारजना हेत । कह्यो सह्यो नाहिं तिन [illegible] निपट अचेत ॥ नित प्रति कैसो मारजना कहा [illegible] । गुरु गुरुता करि सुनि रहे शासन सुर लहि सो- न । [illegible] पात्र में गुरु वच सत्य निमित्त । शिष्य देखि [illegible] गुरु महिमां धरि चित्त ॥ पांचसुमति येई कहीं साध [illegible] । तिन्हें उचित ऐसी रहनिसहनिचहनि वरसोय ॥

अथ सातरहीं समाचारी ॥

[illegible] के लिये अही गेह जो जाय । विन अग्या गुरु [illegible] आय ॥ दिक्षा गुरुवय गुरु बहुर विद्या [illegible] । तिनकी निधि में जाय अरु नाहिं तो जाय न [illegible] साधके सबनानेंगुरुदेव । यातें तिनके [illegible] सेव ॥ खानपानजपतपसकल मलमूत्रा- [illegible] काल जो तिनो कहें गुरु मर्म ॥

अथ अठारमीं समाचारी ॥

[illegible] के तप दुग्गन के हेत । अनत गमन चाहे [illegible] ॥ आन साध थल माहिं जो पाछे [illegible] उपजान सन पाछें करे पयान ॥ [illegible] अनेरे वग्न । कहे अनेरे साध सों [illegible] तब वह भावे वैन करि हम लखिहैं [illegible] थल तजि कहूं जाय न आन उपाउ ॥

अथ [illegible] समाचारी ॥

[illegible] ते आसनादिलिहिं साध । यहीसाधअग्या विना वर्ते नहीं अवाध ॥ [illegible] पूछिकें जाकी है सो वस्त ॥ [illegible] पीछे पूपदै सामे ताहि समस्त ॥ विन पडलेहे जो पडे

खटमल आदिक जीव । त्यांड्यां संजम नहिं पलैं लागें दोष अतीव ॥ यातें नाहीं अतिवड़े नहिं अति छोटे लेय । तखतआदि पडलेहि यै सहजे मांही जेह ॥

अथ वीसवीं समाचारी ॥

मल मूत्रादिक त्याग कौ चतुर मासमें साध । नेमकरै थल कौ तहां निसदिन मांहि अवाध । तीनतीन मंडल करे स्वच्छभूमि दिन देखि । तहं त्यागैं मल मूत्र कफ साध साधवी लेख ॥

अथ इकीसवीं समाचारी ॥

साध साधवी मूत्रमलकफत्यागन के काज । तीन पात्रराखै निकट अपने अपने साज ॥

अथ बाईसवीं समाचारी ॥

साध शीस गोलोम के मान नराखैं केस । रहैं लोचकीने सदा यहीजती कौ भेस ॥ जोन सकैंतोमास प्रतिकतरैं प्रति द्वै मास । मुंडन करि छहमास प्रति करें लोच आयास ॥ छठै मास हूं जो जती सकें न करजे लोच । करैं अवश्य पजूसना माहिं लोच तजि सोच ॥

अथ तेईसवीं समाचारी ॥

रोस न राखैं साध मन भखै न बोल कुबोल । क्रोध विरोध करै न कछु काहू सैं। अनडोल ॥ जो कौनहु संजोग करि काहू सों दुख पाय । रोस आन उपजै तऊ तातैं लेइ खिमाय ॥ बारहमासरु दुगुन पख दिवस तीन सै साठ । कह्यौसुन्यौ कीन्यौ जु कछु होय दोष कौ ठाठ ॥ सो सब अपनौ चूक कहि सबसौं द्वै कर जोरि । करि निहोर सिर ढोरि कैं लेखिमाय निज पोर॥ भादौं सुकला पंचमी तदनंतर जो कोय । साध साध्वी श्राविका श्रावक जिन मतहोय ॥ तजै न मनवचकाय तें क्रोध विरोध विचार । अनाचारि तासौं कहैं तजि तासौं विवहार ॥ जैसे चंड प्रद्योत तैं उदायन नरराय । खिमत खामना कीनि करि कीने

[illegible] सो मन कछु संक्षेप करि बरनो सुनिये सोय।
[illegible] चंपापुर में होय ॥ तिय ताकें सौ पांच सो
[illegible] । हास प्रहासा देवि तिहिं दई दिखाई आन॥
[illegible] ताहि तिन कह्यो चहै जो मोहि। द्वीप पंचसैली
[illegible] तोहि ॥ यह कहि चढ़ि हगकोर तें निजपुर
[illegible] । कह्यो बिरह ताकें विपुल सुबरननंदि सुनार ॥ बहु
[illegible] करि गुरु मल्लाहिके पाय । चल्यो नावचढ़िचाव
[illegible] ॥ मधिजलनि बिवट वृच्छकटतटन लगी
[illegible] गहि वृच्छवर स्वर्नकार लहि दाव ॥ पंछीएक
[illegible] भारंडव नाम । ताके पग गहि रहिगयो सो लै
[illegible] ॥ द्वीप पंच सैलीतहां उतर्योचोगाहेत । स्वर्ननंदि
[illegible] तिना निकेत ॥ हास प्रहासा तहं लखीतिन
[illegible] । हौं देवी तूं मनुज यह बनै संजोग न गूढ ॥ जो
[illegible] देवताह्रूप । तौ तोसौं मोसौं बनेजोग
[illegible] ॥ [illegible] हे प्रिये मकौंन निज थल जाय।
[illegible] चंपापुर पहुंचाय ॥ तहां जाय तिन बिर-
[illegible] देह । नागल नामा मित्र तन तिहिं बरज्यो
[illegible] काम बस नेकौंमानी सीख । बिरहमाल
[illegible] लागी तीख ॥ सब तन वस्त्र लपेटि अरु
[illegible] । [illegible] भयोमर्यो जारि सब देह ॥
[illegible] मन [illegible] लगाय । भयो देव सुर
[illegible] ॥ इंद्रसभा में एक दिन नृत्यनाट्य
[illegible] गरे देवन डार्यो ढोल ॥ जदपि
[illegible] अर्गिह्व । फिरफिरकै डार्योगरें
[illegible] ॥ यह कहि नागल देव तब सब पिछली सुधि
[illegible] । [illegible] चंदन की बनवाय ॥ तीनकालतिहिं
[illegible] निज [illegible] । नाव चढ़ायपठायसोदई तहां सुनि

कान॥ संध देस सौवीर में नगर वीतिभय नाम । नृपति उदायन निकटसो प्रतिमागईललाम ॥ प्रभावतीनृप तियतहांतवसोप्रति-मा पाय। लहि देवाधिप देव सों लीनी सीस चढाय ॥ तीनकाल विध तवसकल पूजन अरचन साज । साजिभक्ति सुभ भावकरि पजेंजिनवरराज ॥ रानी सांग्यौ एकदिनदासीसैंसितवास । तिन देख्यौ भ्रमदृष्टि करि पचरंग वसन सुपास ॥ तबरानीनिजआउ कौंजानिअंत अनियास। चारितलेवौधारि चितगईनृपतिकेंपास ॥ नृपति कही तेरौ तहां ह्वैहै देवीरूप । मम सहाय कीजो सु-कहि आज्ञा दीनी भूप ॥ तब तिन चारित पालपुनि मरिधरि देवीरूप । नृपन जतिन तपसीन कौं वोधन लगीअनूप ॥ कुबजा दासी पुनि करे ता प्रतिमा कौ सेव । तहां देस गंधार तैंश्रावक आयोएव॥ दुखी परयौसो आइकैंकीन्हीं कुबजासेव । ह्वै अरोग गुटिका दए ह्वै दासी कोएव ॥ एक भखै तौ नारि कौहोयकुरूप सरूप । दूजैं इष्टअभिष्ट तिहिं मिलै अदोप अनूप ॥ यह कहिसो श्रावक गयो दै गुटिका निज देस। तानैं दासी खाय इक भई कनकरंग भेस ॥ ता दिन तैं ताकौपर्यौ सुवरन गुटिका नाम। नृपति चरिडप्रद्योतपुनि चितमैं चिन्ति सुवाम । दूजौ गुटिकाहूं भख्यौ मन मैं होय सकाम। आयो चढ़ि गज अनल गिर सोनृप ललित ललाम॥ दासी कौं प्रतिमा सहित गयो लेय निजदेस। दूजी प्रतिमा धरि तहां चराडप्रद्योत नरेस ॥ नृपतिउदायन जानि सो कोपि सेनलै संग । चल्यौ कठ्यौ पुर तैं वल्यौ रच्यौ क्रोधअंग श्रंग ॥ उत तैं चराडप्रद्योत नृप चढि धरि धायो आय। मारग में सन्मुख दुहूं मिले परस्पर धाय॥ मच्यो जुद्ध अति घोर करि सोर सुभट दुहुं ओर। लरे मरे पै नहिं मुरे जुरे जंग करि जोर ॥ अंत उदायनजे लही सही पराजय आनि। जीवत लीनौं बांधि नृप चंडद्योत वलवान॥ प्रतिमा लोप भई तहां फिरे आप देस। मगसैं वरपा काल के रितु को भयोप्रवेस ॥ कीनि छ्व-

[illegible] निहिं ठौर । जसकर लकसरपरिगयो [illegible] ॥ तहां पजुसन पर्व नृपचाहो करन उपास। [illegible] गयो लोगनगड नृपपास ॥ उन त्रिचसंकाभी- [illegible] सों [illegible] । मेहू कीनें आज वृतभूले भखेंान [illegible] । नृप [illegible] निहि साधर्मीजान। खिमतखामना [illegible] कीनी तजि मान ॥ पगतें निगड़ कुड़ायतिहिं भूखन [illegible] । नव निधि रिधि सिधिसंगदै दीनौ देस पठाय ॥ [illegible] साधसाधवी जोय।छांडिकपटमिल परसपर [illegible] मोय ॥ गुरुजन हूंतें शिष्यप्रति दोप खिमावें जान। [illegible] सुनिलीजै दै कान ॥ सोकौ संबीनगरि जहं [illegible] ।चन्दसूर आये तहां चढिनिज मूलबिमान ॥ [illegible] साधवी सार । जे जिनवानी सुनि [illegible] ॥ चंदसूर निज थलगये प्रथम सांझ [illegible] जिनवचन [illegible] रही तहं जोय ॥ गईगे- [illegible] । मृगावती हूं चेति पुनि गई [illegible] । [illegible] रही तहां चितलाय । [illegible] खिमाय ॥ तातेंतत [illegible] । [illegible] चन्दनानिकट अहि [illegible] ॥ [illegible] निवारन ताहि तब पूछ्योचंद- [illegible] कह्यों भयानक व्याल ॥ [illegible] पायो कौन विधि दीठ । भाख्यो केवल [illegible] ॥ दोपारोपन तुम कियो विना [illegible] । [illegible] निज चूक कर जोरि खिमायो [illegible] केवलग्यान । सुनि चन्दना [illegible] हूंलह्यो निदान ॥ ऐसें कीजे सुद्ध मन खिमत [illegible] राखिये ज्यों गुरुशिष्य कुमार, [illegible] माथ कों बालशिष्य इक जाय । नित फोडे घट,

तासुकेकुंभकार दुखपाय॥वरजै तरजे तासुकौंपनहिंहारै सोय। नित्त खिमावै दोष पुनि नित अपराधीहोय॥ ऐसो कपटखिमायवो कौन कामकौं होय। सासु जमाई ज्यों कियो त्यों मिलि कीजै सोय॥ इक तिय विधवा लोभिनी कृपनि वडीधनवंत।तिहिं संतत एकैसुता व्याही सुंदरकंत॥ जमीजमाई निधिनसो कृपन जमाई हेत। तनक लेसहूं देयनहिं वडीप्रकृतकोप्रेत ॥लोगन वहु दोषी तवे एक दिना धरिधीर। आमंत्र्योजमआयहै जानि जमाई वीर। षीर खांड तिहिं परसि पुनिघीउ तनकसोडारि। आप गई कछु काजकौं तिन लीनौसवढारि॥ आयसासदुखपाय लखि वैठी जैवन संग। आपअपने मनमेदुहूंभरेकपट रसरंग॥ सासकहे जामात सौंवलिमो वेटी हेत। कवहुंवसनभूपनन तुम लायेकरि हितहेत ॥ कहत जात यों वात अरु खैंचे घृतनिज ओर। वहऊ ऐसी वातकहि निज दिस लेय वहोर॥ तुम काहू तिहिवार में मोहितम्यौतो माय। यों कहि खैंचैं दुऊ घृतनिज निज कहि दिस चाय ॥ जामाता तव समझिकैं लीनै दोष खिमाय। अलियागलियाकहि दयो सिगरो घीव मिलाय॥खीर खांड घृत एक करि थाली सुकर उठाय।गयो पीय मुंह तकिरही सास हिये पछिताय॥ ऐसैं जिहिकिहि भांति करि कपट छांडि तजि क्रोध। अलियागलिया करि तजे कै तव कूढ विरोध॥

चौवीसवीं समाचारी

ही गुरुदेव तें शिष्य खिमावै दोष। थविर साध तें साध हीं लेय सतोष॥ षिमै षिमावै और सौं करै न क्रोध सहै उपसर्ग सवन सौं जिनवरवचन प्रवोध॥

पचीसवीं समाचारी॥

काल पोसाल निज पूजै करि पडलेह। दोयवार पूजै य साध के गेह॥

छब्बीसवीं समाचारी ॥

[illegible] जो साध कहिं होय जरूर । आन साधु तौ हिं [illegible] नकट के दूर ॥ क्योंकि कदाचित साधसोतप [illegible] केह । के रुककर मग में गिरे सो विराधसोलेह॥

सत्ताइसवीं समाचारी ॥

[illegible] निरोग कहि वैदहोत जोसाध । जाय थानतजिअवधि [illegible] पांच भवाद ॥ तहां जाय आवें बहुर अपने हीथल [illegible] । [illegible] मगमें रहें हवांनरहें निसवेर ॥

अठाईसवीं समाचारी ॥

[illegible] राजाइसतिनमांह । जे विचार आचारसब [illegible] ॥ सूत्र अर्थ जिनवर वचन जिहि विधि कियो [illegible] । [illegible] आचरें औरनि तिनहि करावें जान । दुहूं लोक [illegible] नहें अपार । अंतमुक्ति तदभव लहें करेंसुक [illegible] जे सुभव अधिक मानतें नांह । करम बंध [illegible] परम मुक्ति की छांह ॥ ऐसें जिनवर श्रीश्रमनमहा- [illegible] तहां जिगर्ग सभा सुसंत ॥ साध [illegible] श्रावक देवी देव । [illegible] सभा सुभ मजितहां [illegible] ॥ धर्म [illegible] पर्व के अङ्गताके आचार। महा- [illegible] ॥

अथ कल्पसूत्र रचना ॥

[illegible] जे वर्धमानतिर्थंकर सार । महावीर भगवंत [illegible] अधिकार ॥ तिन पायो निरवान पद तब ते [illegible] । नवमें वर्ग वरस नवभये वितीत निदान ॥ भयो [illegible] यह कल्पसूत्र मो जान । वरस पांचसे दश तबे [illegible] मान ॥ [illegible] संवत अबआज लौं विक्रमनृप अवनीस [illegible] वरस अरु तापरअट्ठतीस ॥ दोयसहस अरुतीन [illegible] वरस परमान । महावीरनिरवान तेंभयो आजलोंजान ॥

कलपसूत्र कौ मूल यह प्राकृत वानी मांह । लोक असंस्कृत ताहिपढ़ि वयोंहू समझैंनांह ॥ तैंसीटीका संस्कृतभई नसमझन जोग । अरुअनेकतापर करे टब्बा जिनजन लोग ॥ एकदेस की भाप सो गुरजर देसी जान । आनदेसके जनतिन्हैं समझि न सकैं निदान ॥ यातैं यह भाषा करी जिहिं सब देसीलोग । सुखसैं सब समझैं पढ़ैं बढ़ैं पुन्य सुख भोग ॥ ऐसी मतिउर आनि श्री जिनजन कुल परसंस । गोत गोखरू जैनमत ओस वंस अवतंस ॥ सभाचंद नरराय के अमरचंद वरराय । तिन के सुत कुलचंदनृप डालचंद सुखदाय ॥ सुघंराईके सुघर अरु सौहद सुहद सुदान । सुभसौभाग्य सुभाग्य अरु सुठ सौजन्य सुजान ॥ गुनग्राहक गुनवान पै निर्गुनग्यानविधान । समीदमी नियमी यमी हमी तमी अभमान ॥ दानदसनमान्द सुखद आन दयानन्द पीन । नरसान्द मैं मगन मन परमानंद लयलीन ॥ तिन जिनजन सुखहेत अरु धर्म उद्योत विचार । कह्यो रायचंदहि चतुर उपकारी मत धार ॥ कलपसूत्र कलिकलपतरु भाषा टीका हेत । सो अनुसरि जिनधर्मवचन सिर धरलई सहेत ॥ निज मति अनुमित करि रच्यौ वच्यौ नएकप्रकार । जैसो कछु समझौ सुन्यौ पढ्यौ चढ्यौ चितसार । जिनआगम मरमग्य जे सद्गुन सुहृद सुजान । करत वीनती दीन ह्वै तिनसैं हौं अनजान ॥ न्यूनाधिकगुनदोषजो पढ़ै पढ़तकहुं दीठ । लीजैं चूक सुधारि धरि हियै न हांसियै ईठ ॥ हौं न हौंहुंकवि और गुहि कविता कौ नहिंजोम । यह लहिकै कीजै कृपा जे जनमन सम सोम ॥ संवत ठारह सै वरस सरसधार अड़तीस । विक्रमनृप वीतैंभई टीकाप्रशहदु धीस ॥ चैतचांदनेपाखकी सुभ नौमी अभिराम । पुष्य नखत धृत जोगवर मंगलवारललाम ॥ जनम सपारसपरसथल परीवनारस नाम । जनमभूमि याग्रंथ

[illegible] भा० । [illegible]

[illegible] तजि लहैं मुकतपदछांह ॥ [illegible]
[illegible] जिहिं मूल । जाके जिन [illegible]
[illegible] महावीर वर जस जहां सुम[illegible]
[illegible] सरस सुरस शांति रसपू[illegible]
[illegible] जिहि नाम । ता तरु [illegible]
[illegible] विश्राम ॥ भवतापातप दुसह दु[illegible]
[illegible] जन ऐसी छांह के मांहि रहे सुख[illegible]

इति ॥

[illegible] छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में छपी [illegible]
दिसम्बर सन् १८८७ ई०

---- ※ ----

[illegible] बहक़ इस छापेख़ाने [illegible]